हमारे प्रमुख प्रकाशन

सूर मीमांसा— डा० मंजेश्वर वर्मा	४।)
कृष्णकाव्य की रूपरेखा—श्री वेदमित्र 'व्रती'	३॥)
बीसवीं शताब्दी के महाकाव्य—डा० प्रतिपालसिंह	८॥)
काव्य सम्प्रदाय और वाद—श्री अशोककुमारसिंह	४॥)
काव्य सम्प्रदाय - श्री अशोककुमारसिंह	३)
काव्य के वाद—श्री अशोककुमारसिंह	२)
हिन्दी साहित्य का इतिहास एक दृष्टि में—सन्त धर्मचन्द	१)
श्री पिङ्गल-पीयूष – परमानन्द	२।॥)
मायाजाल (उपन्यास)—श्री गुरुदत्त	५)
उमड़ती घटायें (उपन्यास) —श्री गुरुदत्त	६)
यथार्थ से आगे (उपन्यास)—श्री भगवतीप्रसाद वाजपेयी	६)
राग और त्याग (उपन्यास)—श्री कमल शुक्ल	५)
मौलश्री (उपन्यास)—श्री कमल शुक्ल	६)
काले नगर में (उपन्यास)—श्री कमल शुक्ल	२॥)
पथ से दूर (उपन्यास)—श्री कमल शुक्ल	२॥)
समाधि (नाटक)—श्री विष्णु प्रभाकर	३)
मीरा (नाटक)—श्री सन्त गोकुलचन्द्र	१।॥)
हिरौल (नाटक) – श्री सन्त गोकुलचन्द्र	१।)
आधुनिक एकांकी (संकलन)—सन्त गोकुलचन्द्र	३)
एकांकी सुषमा—प्रो० जी० एल० लूथरा	२॥)
अतीत स्मृतियां (पुरानी खोजें) —श्री सोहनलाल	१।≈)
आदर्श चरितावली—श्री सन्त गोकुलचन्द्र	२)
चारु चयनिका (कहानी-संग्रह)—सन्त धर्मचन्द	३)
नवीन लोकोक्तियां और मुहावरे—सन्त धर्मचन्द	१॥)
सं० वाल्मीकि रामायण–डा० शान्तिकुमार नानूराम व्यास	२॥)

इस पुस्तक का मूल्य २॥)

विषयानुक्रमणी

पहला अध्याय

दूसरा अध्याय

तीसरा अध्याय

चतुर्थ अध्याय

पांचवाँ अध्याय

दो शब्द

छन्दः शास्त्र का विषय अतिकठिन और जटिल माना जाता है। परन्तु प्रस्तुत पुस्तक का उद्देश्य इसे सरल, सरस तथा सर्वांगरूप से रुचिकर बनाना है। अतएव इस का नाम पिङ्गल-पीयूष रखा गया है।

छन्दःशास्त्र पर अनेकों ग्रन्थ उपलब्ध हो रहे हैं। परन्तु हमने वर्तमान काल की विचारधारा के अनुसार भी इसे सर्वांगपूर्ण बनाया है। इसमें ऐसे प्रकरण रखे गये हैं जो बड़े रोचक, गवेषणात्मक एवं अन्यत्र दुर्लभ हैं। यह बात इसकी विषयसूची देखने से ही विदित हो सकती है।

विषय-प्रतिपादन करते हुए, छात्रों की सरलता के लिये हमने नीचे लिखा मार्ग अपनाया है :—

(१) छन्दों के लक्षण उसी छन्द में दिये हैं जिस छन्द के वे लक्षण हैं। छात्रों को पृथक् उदाहरण स्मरण करने की आवश्यकता नहीं होगी।

(२) लक्षणों में पृथक् उदाहरण भी दे दिये हैं, वे भी अधिकतर वर्तमान कवियों के।

(३) कहीं भी कुरुचिपूर्ण शृंगार-रस के पद्य नहीं दिये गये।

(४) उदाहरणों के पद्य देशभक्ति, ईश्वरभक्ति अथवा सदुपदेशों से परिपूर्ण हैं। जहाँ अन्य कवियों के उदाहरण नहीं मिले वहाँ स्वकृत उदाहरण दिये गये हैं। आनन्द कवि ग्रन्थ लेखक ही है।

(५) विषय प्रतिपादन अत्यन्त रोचक भाषा में किया गया है। अपनी ओर से पूरा प्रयत्न किया गया है कि यह ग्रन्थ निर्दोष हो। परन्तु प्रमाद मनुष्य का स्वभाव है। अतः विद्वान् समालोचकों से नम्र निवेदन है कि यदि उनकी दृष्टि में कोई दोष दीख पड़े तो अपनी महानुभावता का ध्यान रखते हुये उसे सुधार लें। लेखक विद्वानों का पद-रज है।

Advisory Board for Books,
(E. Punjab) Simla,
23rd August, 1949.

—परमानन्द

ओ३म्

श्री पिङ्गल-पीयूष

भूमिका

(१) छन्दःशास्त्र की उत्पत्ति और विकास

विश्व की प्राचीनतम साहित्यिक सम्पत्ति ऋग्वेद है। ऋग्वेद का अन्य वेद संसार के पुस्तकालय में सर्वप्रथम ग्रन्थ हैं। इनका विश्व-साहित्य में बहुत ऊँचा स्थान है।

आर्यसाहित्य की परम्परा से तो वेद भगवान के अमर वचन हैं, जिनका प्रकाश सृष्टि के आदि में परम कारुणिक भगवान् ने ऋषियों के हृदयों में किया। संसार भर में किसी भाषा में कोई ऐसा ग्रन्थ नहीं जो वेदों से पुराना सिद्ध हो सका हो।

अथर्ववेद में वेदों को काव्य कहा गया है :—

देवस्य पश्य काव्यम्।
न ममार न जीर्यति॥

अर्थात्—हे मानव ! भगवान् के इस काव्य को देखो जो अजर-अमर है ।

यजुर्वेद में परमात्मा को इसीलिये कवि भी कहा गया है ।

"कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूः
यथातथ्यतोऽर्थान व्यदधात
शाश्वतीभ्य समाभ्यः"

उल्लिखित उद्धरणों से छन्दःशास्त्र की प्राचीनता स्वयं सिद्ध हो जाती है । आर्यसाहित्य को ही यह गौरव प्राप्त है कि उसका प्रारम्भ पद्य से होता है, गद्य से नहीं ।

छन्दःशास्त्र वेद के ६ अंगों में से एक है । कहा गया है कि 'छन्दः पादौ तु वेदस्य' अर्थात् छन्द वेद के चरण हैं । जैसे शरीर का आधार चरण हैं ऐसे ही वेदों के चरण छन्दःशास्त्र है । तैत्तिरीय संहिता में (७, १, ४) कहा गया है कि सृष्टिकर्ता ने प्रारम्भ में ही छन्दों की रचना की ।

भारतीय साहित्य के अध्ययन से ज्ञात होता है कि यहाँ अति प्राचीन काल में छन्द शास्त्र का अस्तित्व था । संगीत और छन्द का घनिष्ट सम्बन्ध है । अतएव सामवेद में छन्दों का विशेष वर्णन है । मुण्डक उपनिषद् में भी नीचे लिखे वाक्य से ऋग्वेदादि के साथ ही छन्द की भी गणना कर दी है :—

"अपरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः ।
शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दो ज्योतिषमिति ।"

इसका अर्थ है कि-ऋग्-यजु-साम-अथर्व चारों वेद, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष ये अपरा विद्या हैं ।

यास्क-आदि ऋषियों ने भी छन्दों का विवेचन निरुक्त में किया है।

परन्तु छन्दःशास्त्र के सर्वप्रथम आचार्य या प्रवक्ता महर्षि पिङ्गल हुए हैं। व्याकरण में जो स्थान पाणिनि का है या स्मृतियों में मनु का जो स्थान है वही स्थान छन्दःशास्त्र में भगवान् पिङ्गल जी का है।

'पिङ्गल का छन्द सूत्र' नामक ग्रन्थ अति लोकप्रिय तथा प्रामाणिक रहा है। इसी लोकप्रियता के कारण बाद में छन्दःशास्त्र का नाम ही पिङ्गल पड़ गया। अब पिङ्गल शब्द से छन्दःशास्त्र का ही बोध होता है।

संस्कृत में छन्दःशास्त्र पर अनेकों ग्रन्थ लिखे गये। परन्तु अधिक प्रचार इन तीन ग्रन्थों का ही हुआ—एक, केदार भट्ट कृत—वृत्तरत्नाकर, दूसरा, गंगादास कृत—छन्दोमञ्जरी और तीसरा, कालिदास कृत—श्रुतबोध। श्रुतबोध उत्तम ग्रन्थ होते हुये भी संकुचित है। इसमें बहुत थोड़े ही छन्द लिखे गये हैं। वृत्तरत्नाकर सर्वोत्तम ग्रन्थ है। इसका क्षेत्र विस्तृत तथा व्यापक है। इन ग्रन्थों का एक गुण यह है कि लक्षण-पद्य ही उस छन्द के उदाहरण हैं।

यह शैली अतिलोकप्रिय प्रमाणित हुई है। अतः पठन-पाठन व्यवस्था में इन्हीं का विशेष प्रचार हुआ।

हिन्दी में छन्दःशास्त्र के जो ग्रन्थ लिखे गये हैं उनका आधार भी संस्कृत का छन्दःशास्त्र है। तो भी हिन्दी में छन्दःशास्त्र की जो गवेषणा की गई है वह अन्यत्र दुर्लभ है।

हिन्दी में छन्दोविषयक अनेक ग्रन्थ हैं। उनमें से कुछ ये हैं—

	कर्ता	नाम
१	मतिराम	छन्दसार पिंगल
२	सुखदेव मिश्र	वृत्तिविचार
३	भिखारी दास	छन्दार्णव
४	पद्माकर भट्ट	छन्दमञ्जरी
५	कलानिधि	वृत्तचन्द्रिका

वर्तमान लेखकों में जगन्नाथप्रसाद 'भानु' कृत छन्दप्रभाकर लोकप्रिय है। इसके अतिरिक्त अवध उपाध्याय कृत नवीन पिंगल, रामनरेश त्रिपाठी कृत पद्यरचना और मित्रवर महामहोपाध्याय परमेश्वरानन्द जी कृत छन्दःशिक्षा भी उत्तम ग्रन्थ हैं।

समय के साथ साथ साहित्य का रूप भी बदलता है। जिन छन्दों में संस्कृत काव्यों की सृष्टि हुई थी वे हिन्दीसाहित्य में अधिक नहीं अपनाये गये। सवैया, दोहा, चौपाई आदि छन्दों की ही हिन्दी-साहित्य पर अधिक छाप है।

(२) वर्तमान युग में छन्दोरचना

हिन्दी का वर्तमान युग प्रगतिशील है। वह अभी किसी नियमित स्थान पर नहीं पहुँचा। इस क्रांति के युग में ऐसे कवियों का उदय होना स्वाभाविक है जो शताब्दियों के बन्धनों को तोड़ने के लिए लालायित हैं। इन कवियों में कुछ तो ऐसे हैं जो नवीन छन्दों की सृष्टि करने के लिए अग्रसर हो चुके हैं।

परन्तु विचारणीय विषय यह है कि नवीन कलाकारों ने अभी तक कोई नवीन निश्चित मार्ग नहीं निकाला और नहीं किसी मौलिक

गीतों की रचना की है। आदि मध्य में अनुकरण के मार्ग पर ही चले जा रहे हैं। परन्तु यह भी कोई बुरी बात नहीं। प्रतिभावान मन से नवीन छन्दों का आविष्कार होना स्वाभाविक है। इसकी संक्षि- प्त विचार व्यापार का हमने आगे एक विशेष प्रकरण में कर दी है। पाठकों को चाहिये कि इसे वहां देखें।

कई कवियों ने तो भिन्न भिन्न छन्दों के योग से नवीन छन्द बनाये हैं। उनके पृथक् नामकरण की आवश्यकता नहीं। जैसे :—

> उमड़ घुमड़ नभ में घनघोर।
> छा जाते हैं चारों ओर—(चौपाई)
>> किसकी कल्पना से सुकुमार।
>> धारण करते हो आकार !—(चौपई+१२ मात्रा)
>> अस्फुट भावों का प्राणों में,
>> तुम रस लेते हो ग्रुव भार। (वीर+१२ मात्रा)
>
> बन भावों का रूप सजीव
> तुममें होता प्रकट अतीव—(चौपई)
>> विविध विमल रंगों में तान
>> किसके उर के प्रिय उद्गार—(चौपई)
>> तुममें उद्गम हो जाते हैं
>> पा जाते विस्तृत अधिकार ? (वीर)

इत्यादि।

मंगलाप्रसाद विश्वकर्मा

इसके अतिरिक्त ऐसे कलाकार भी हैं जो किसी बन्धन में रहना कविता का अपमान समझते हैं। परन्तु ऐसे कलाकारों को समझना चाहिये कि संसार की व्यवस्था बन्धनों के आधार पर ही है। सौर जगत् का अध्ययन करके देखें कि इस विश्व में बन्धन की कितनी

महिमा है। उच्छृङ्खल मानव तो किसी भी गड्ढे में गिर कर अपना सत्यानाश कर सकता है। परन्तु मार्ग पर चलनेवाले गन्तव्य स्थान पर पहुँच ही जाते हैं।

(३) क्या हिन्दी छन्दःशास्त्र पर विदेशी प्रभाव है?

यह सर्वसम्मत सिद्धान्त है कि हिन्दी का छन्दःशास्त्र संसार के छन्दःशास्त्रों में से सबसे अधिक विकसित तथा उन्नत है। यह बात विदेशियों ने स्पष्ट स्वीकार कर ली है। Rev. S. H. Kellogg ने जो अमरीका के मिश्नरी हैं, अपनी लिखी पुस्तक A Grammar of the Hindi Languâge में लिखा है:—

The Hindi System of prosody, in its fundamental principles, is substantially identical with that of the Sanskrit. In no modern language, probably, has prosody been so much elaborately developed as in Hindi':—

अर्थात—'हिन्दी छन्दःशास्त्र तथा उसके सिद्धान्त सर्वथा संस्कृत के समान हैं। किसी वर्तमान काल की भाषा में छन्दःशास्त्र इतना उन्नत तथा विकसित नहीं हुआ जितना कि हिन्दी में।'

इससे दो बातें जानी जा सकती हैं, (१) हिन्दी भाषा के प्राचीन छन्दःशास्त्र [illegible] विदेशी भाषा का प्रभाव नहीं पड़ा। केवल [illegible] र है। (२) दूसरी बात यह है कि संसार [illegible] का छन्दःशास्त्र सबसे

का यूनानी प्रभाव है। उसने लिखा है कि जब यूनानी (बैक्ट्रि
शासन काल में या उस समय यहाँ आकर रहते थे। यूनानियों
अवश्य कोई न कोई होमर का अनुवाद भारतीय भाषा में किया
और उसका छन्द भी होमर के आधार पर ही रखा होगा। भा
भारतीय विद्वानों ने उस छन्द को भारतीयता के रंग में रंग कर
के रूप में बदल दिया होगा।

परन्तु वेबेरी का सिद्धान्त कथनमात्र है। इसमें उसने जो
दिया है वह सन्दिग्ध होने से हेत्वाभास है। और इस सिद्धान्त
किसी भी अन्य विदेशी विद्वान् ने नहीं माना। प्रो० ए० बी० की
(A. B. Kieth) ने इसका खण्डन कर दिया है। उसने लिखा है-

But granting that the tale of Diomay ha
foundation, it must be admitted that it do
not seem possible to accept as even probab
the origin suggested for Doha.

अर्थात् किसी के कथन को यदि मान भी लें तो भी सम्भव न
कि जो दोहा का आधार बताया है, वह ठीक है।

इसके अतिरिक्त जो सम्पर्क उर्दू जगत् से हिन्दी कविता का र
है वह आगे हमने विस्तृत रूप से "हिन्दीछन्द की व्यापकता"
प्रकार में लिख दिया है। उसमें भी प्रधानता या महिमा हिन
छन्द शास्त्र की है।

अपनी ओर से भरसक प्रयत्न किया गया है कि प्रस्तुत पुस्त
सर्वाङ्गपूर्ण, सुबोध और सरल हो। इसके लिखने में मुझे अनेक
ग्रन्थों का अध्ययन करना पड़ा है। अनेक महाकवियों के सुधावर्ष
वचनों को उद्धृत करना पड़ा है—अतः मैं उन सब लेखकों तथा
कलाकारों को धन्यवाद देता हूँ।

श्री पिङ्गल-पीयूष

पहला अध्याय

रचना के भेद

किसी भी भाषा के साहित्य को यदि हम देखें तो जाना जाता है कि रचना दो प्रकार की है :—

एक गद्य और दूसरी पद्य

गद्य—जिस रचना में अक्षरों या मात्राओं की नियत संख्या या परिमाण का बन्धन न हो, और जिसमें अपने मनोगत भाव को प्रकट करने के लिए इच्छानुसार चाहे जितने भी अक्षरों या मात्राओं को प्रयुक्त किया जाय, उसे गद्य कहते हैं।

जैसे—*प्रेमाश्रम, सेवासदन तथा अन्य उपन्यास।* गद्य-रचना में केवल उपन्यास ही नहीं, बल्कि सभी प्रकार का साहित्य जिसमें अक्षरों या मात्राओं का बन्धन न हो, आता है। हिन्दी में इतिहास, अर्थशास्त्र और भूगोल आदि अनेकों विषयों पर गद्य में लिखे हुए ग्रन्थ मिलते [illegible] र्तमान युग में गद्य ही की प्रधानता होने लगी है।

संस्कृत के समान प्राचीन हिन्दीसाहित्य में भी पद्य की ही मुख्यता थी।

पद्य—छन्दोमय रचना को पद्य कहा जाता है। ऐसी रचना के लिए यह अनिवार्य है कि अपने अभिप्राय को व्यक्त करने के लिए नियत संख्या में ही अक्षरों या मात्राओं का प्रयोग किया जाय। ऐसी बन्धनमयी रचना को पद्य कहते हैं।

महाकवि तुलसीदास-कृत 'रामचरित-मानस'' तथा श्री मैथिलीशरण गुप्त-विरचित 'साकेत' आदि रचनाएँ इसी कोटि में आती हैं।

हिन्दी भाषा का साहित्य प्राचीन तथा अर्वाचीन कवियों की पद्यमयी रचनाओं से अलंकृत है।

संक्षेप में छन्दोबद्ध रचना को पद्य, छन्दोरहित रचना को गद्य और गद्य-पद्य-मयी रचना को चम्पू कहते हैं।

छन्द का लक्षण

छन्द उस रचना को कहते हैं जिसमें अक्षरों, मात्राओं और यति (विराम) का विशेष नियम हो। ऐसी रचनाओं में अक्षरों और मात्राओं की संख्या नियमित होती है। विराम को भी नियमित अक्षरों के बाद ही रखना आवश्यक होता है। वाक्य समाप्त हो या न हो, जहाँ पर यति या विराम का विधान है वहाँ यति का होना आवश्यक है।

जिस ग्रन्थ में छन्दों के लक्षण आदि लिखे गये हों और जिसमें इस विषय का विवेचन हो उसे छन्दःशास्त्र कहते हैं।

छन्दःशास्त्र के प्रथम आचार्य श्री पिङ्गल ऋषि हुए हैं। उन्होंने सर्वप्रथम इस विषय पर ग्रन्थ लिखा है। अतः छन्दःशास्त्र का जो दूसरा नाम पिङ्गल पड़ गया है। पिङ्गल या छन्दःशास्त्र एक पर्यायवाची शब्द हैं।

अक्षर-विचार

व्याकरण में अक्षर उस छोटी से छोटी ध्वनि का नाम है जिसके टुकड़े न हो सकें। "अ+क्षर" जिसका क्षरण अथवा नाश न हो। लिखित भाषा में अक्षर का ही नाम वर्ण है।

अक्षर दो प्रकार के हैं—"स्वर" तथा 'व्यञ्जन"

परन्तु यह स्मरण रखना चाहिए कि छन्दःशास्त्र में व्यञ्जनों को नहीं गिना जाता। गणना केवल स्वरों की होती है। यदि किसी छन्द में अक्षर गिने जाते हैं तो वहाँ केवल स्वरों की संख्या से ही तात्पर्य होता है; व्यञ्जनों को नहीं गिना जाता। यदि पूछा जाय कि "क्रौञ्च" इस शब्द में कितने अक्षर हैं तो कहा जायगा कि "एक"। देखने में तो यहाँ दो अक्षर हैं—एक "क्रौ" और दूसरा "ञ्च" परन्तु इनमें स्वर एक "औ" ही है और "ञ्" जो व्यञ्जन है उसे नहीं गिना जाता। इसी प्रकार "कृष्ण" शब्द में भी स्वर दो हैं। एक "ऋ" और दूसरा "अ"। इसलिए छन्द शास्त्र की गणना के यहाँ दो ही अक्षर गिने जायेंगे। "क्, ष्, ण्" इन व्यञ्जनों को नहीं गिना जायगा।

अभ्यास

१—गद्य तथा पद्य में क्या भेद है ?

२—पिंगल किसे कहते हैं ?

३—छन्दःशास्त्र में अक्षर किन्हें माना जाता है ?

४—निम्न-लिखित वाक्यों में कितने अक्षर हैं—

(क) जय राम सदा सुखधाम हरे ।

(ख) धीरज धर्म मित्र अरु नारी
आपद काल परखहिं चारी ।

(ग) यहाँ देव ने दिव्य योगी उतारे ।
प्रतापी दयानन्द स्वामी हमारे ॥

लघु-गुरु-विचार

लघु—जिन अक्षरों की एक-एक मात्रा होती है उन्हें छन्दः—शास्त्र में लघु कहा जाता है। व्याकरण में इन्हें ह्रस्व कहा जाता है। जैसे—अ, इ, उ, ऋ।

लघु अक्षरों का चिह्न "।" यह होता है, और इसकी एक मात्रा

।।। ।।। ।।।।

गिनी जाती है। जैसे—विमल, सलिल, रघुवर। ये सब शब्द ह्रस्व हैं। इन्हें लघु कहा जायगा। इसी प्रकार—

रघुवर पद उर धरहु
सुनहु सकल सुधि करहु।

ये सब अक्षर लघु हैं।

गुरु—जिन अक्षरों की दो मात्राएँ होती हैं, उन्हें गुरु कहा जाता है। आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ—ये सब दीर्घ अक्षर गुरु हैं। जैसे कहा भी है:—

'दीरघ है कल जाहि में
है गुरु तासु प्रमाण॥' (म०

'माना, जाना, रानी, राधा,' ये सब शब्द दीर्घ हैं—दो मात्रावाले हैं,—इन्हें गुरु माना जाता है। इसी प्रकार—

'मेरी बाधा राधा नाशो'

यहाँ सब अक्षर द्विमात्रिक हैं। अतः ये गुरु हैं।

इसके अतिरिक्त निम्नलिखित दशाओं में ह्रस्व अक्षर भी गुरु माने जाते हैं.—

(१) संयुक्त अक्षर से पूर्व ह्रस्व भी गुरु माना जाता है। उसे लघु न मानकर द्विमात्रिक ही गिना जाता है। जैसे–'बुद्धि' 'प्रत्यक्ष' यहाँ बुद्धि के 'बु' का 'उ' तथा 'त्य' का 'अ' यद्यपि ह्रस्व हैं तो भी इन्हें गुरु माना जायगा, क्योंकि उनके परे द्वित्व अक्षर हैं। इसी प्रकारः—

लर्जन गर्जन घन मण्डल की बिजली वर्षा का विस्तार।
जिस में दीखे परमेश्वर की लीला अद्भुत अपरम्पार॥

इसमें सभी रेखाङ्कित स्वर ह्रस्व हैं। फिर भी उन्हें गुरु माना जाता है; क्योंकि उनके परे र्ज, ण्ड, र्षा, स्ता, द्भु, म्प ये द्वित्व अक्षर हैं।

इस नियम का भी अपवाद है। पिंगल ऋषि ने कहा है कि 'प्र' तथा 'ह्' से पूर्व के ह्रस्व अक्षर इच्छानुसार लघु या गुरु माने जाते हैं। परन्तु हिन्दी में 'प्र', 'ह्' का विशेष नियम नहीं, यहाँ जहाँ कहीं भी द्वित्व अक्षर से पूर्व के ह्रस्व अक्षर पर ज़ोर पड़ता है उसे गुरु मान लिया जाता है और जहाँ ज़ोर नहीं पड़ता है उसे लघु माना जाता है। जैसे—'सत्य' में 'त्य' से पूर्व 'स' पर ज़ोर देना पड़ता है। अतः इसे गुरु माना जायेगा। परन्तु 'मुनिन्द' के हेय, तुम्हिं' यहाँ ज़ोर नहीं पड़ता। अतः रेखाङ्कित स्वरों को लघु माना जायेगा। जैसे—

चढ़हु प्रथम यह ग्राम में, जलु ह्रद अतिक्रमनीय।

...जी नागरी भंडार पुस्तकालय

लघु-गुरु-विचार

लघु—जिन अक्षरों की एक-एक मात्रा होती है उन्हें छन्द-शास्त्र में लघु कहा जाता है। व्याकरण में इन्हें ह्रस्व कहा जाता है। जैसे—अ, इ, उ, ऋ।

लघु अक्षरों का चिह्न "।" यह होता है, और इसकी एक मात्रा

111 111 1111

गिनी जाती है। जैसे—विमल, सलिल, रघुवर। ये सब शब्द ह्रस्व हैं। इन्हें लघु कहा जायगा। इसी प्रकार—

रघुवर पद उर धरहु

सुनहु सकल बुधि करहु।

ये सब अक्षर लघु हैं।

गुरु—जिन अक्षरों की दो मात्राएँ होती हैं, उन्हें गुरु कहा जाता है। आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, अक्षर गुरु हैं। जैसे कहा भी है: -

'दीरघ है

है गुरु

यहाँ रेखाङ्कित अक्षरों को लघु माना गया है, क्योंकि उनके आगे के 'य' 'ह' द्वित्य अक्षरों के उच्चारण में ज़ोर नहीं दिया जाता।

चन्द्र टरै सूरज टरै, टरै जगत व्योहार।
पै दृढ़ श्री हरिचन्द को टरै न सत्य-विचार॥

इस पद्य में दोनों का उदाहरण है। 'सत्य' शब्द का 'स' 'त्य' के संयोग के कारण से गुरु माना गया है। परन्तु 'व्योहार' तथा 'श्री' के पूर्व 'त' और 'द' को गुरु न मान कर लघु ही माना गया है।

(२) अनुस्वार (पूर्णविन्दु) तथा विसर्ग वाले ह्रस्व अक्षर भी गुरु माने जाते हैं। जैसे:—

चंचल सुख दुख, आशा-निराशा
चंचल संध्या और प्रभात।
चंचलता के चक्र कुटिल में,
बंदी मानव-कुल दिन रात॥

(गोविन्द वल्लभ पन्त)

इसमें 'चंचल' का पहला 'च' यद्यपि ह्रस्व है तो भी सानुस्वार होने से गुरु माना गया है। इसी प्रकार अन्य रेखाङ्कित अक्षर भी अनुस्वार के कारण गुरु माने जाते हैं।

जब लगि भक्ति सकाम है तब लगि निःफल सेव।
कह कबीर वह क्यों मिले निःकामी निज देव॥

इस पद्य में "निः" यद्यपि ह्रस्व है तथापि विसर्ग-सहित होने से इसे गुरु माना गया है।

इसी प्रकार दुःख, मनःकामना, अन्तःकरण, आदि शब्दों में "दुः" "नः" "तः" को विसर्ग-सहित होने से गुरुत्व प्राप्त है।

छन्द और शब्द-शुद्धि

हिन्दी के छन्दःशास्त्र में शब्द-शुद्धि की अपेक्षा छन्द की उतना अधिक आवश्यक है। यदि छन्द बनाने में शब्दों का तोड़-मरोड़ करना पड़े तथा व्याकरण की भी अवहेलना हो तो भी उसे बुरा नहीं माना जाता।

(१) लघु अक्षर (ह्रस्व) के स्थान पर गुरु अक्षर भी लिखा जा सकता है और दीर्घ के स्थान पर ह्रस्व अक्षर। रामायण में बहुत स्थानों पर हनुमान को हनुमाना, हानि को हानी, बहुत को बहूत, पुन को पूना और छोड़ को छोड़ू लिखा है।

(२) तुकान्त तुक मिलाने के लिये अनुस्वार को या तो हटा दिया जाता है या न होने पर भी बढ़ा लिया जाता है। जैसे—

"प्रथमं पुत्री पुत्री दर्शं"

सठ [illegible] कोटि सहई। [illegible] सिन्धु हरई [illegible]॥

अस प्रभु सागर बड़ बड़ पूरा। कहँ हरे बहु [illegible] पूरा॥

(रामायण)

इस से शब्दों के विकृत रूप स्पष्ट दीख रहे हैं।

अब प्रभु-चरित कहौं अति पावन।
करतओ मन गुर भर गुनि भावन॥

यहाँ "ओ" का उच्चारण 'उ" के समान है। अतः 'ओ" लघु माना जायगा।

इसी प्रकार—

"आपहि मोसन मह कह्यो,
गोरस लेहु गोपाल।" (मर्दन)

यहाँ गोपाल का "गो" यद्यपि गुरु है तथापि इसे एकमात्र (गु) के समान ही बोला जाता है। अतः यह लघु है।

लघु का चिह्न (।) है और गुरु का चिन्ह (ऽ) इस प्रकार है। आगे छन्दों के समन्वय में इन्हीं चिन्हों से लघु और गुरु का निर्देश किया जायगा।

गृह तिमिर निराशा, का समाकीर्ण जो था।
निज मुख-द्युति से है जो उसे ध्वंसकारी।
सुखकर जिससे है कामिनी जन्म मेरा
वह रचिकर चित्रों, का चितेरा कहाँ है?
(प्रियप्रवास से)

यह मालिनी छन्द है। इसमें ८ अक्षरों के बाद यति चाहिये। परन्तु "निराशा" तथा "चित्रों" पर आठ-आठ अक्षर हो जाते हैं। यह यति "निराशा का" और "चित्रों का" इन दो पदों के मध्य में आती है। अतः यहाँ यतिभङ्ग दोष है। परन्तु वर्तमान काल के कवि यति का उतना आदर नहीं करते जितना कि प्राचीन काल के कवि करते थे।

पाद या चरण

प्रत्येक पद्य के साधारणतया चार भाग होते हैं। अतः पद्य के चतुर्थ भाग को पाद या चरण कहते हैं। कई छन्द ऐसे भी हैं जिनमें पादों की संख्या चार से अधिक या न्यून होती है। छन्दों में भागों की व्यवस्था छन्द शास्त्र में की गई है। जिस छन्द में अधिक भाग माने गये हैं वहाँ उतने ही पाद माने जाते हैं। जैसे—"छप्पय" नामक छन्द में ६ भाग होते हैं। अतः वे ६ भाग ही इसके ६ पाद माने जाते हैं।

यति-विचार

गद्य में वाक्य बोलते हुए वक्ता को जैसे कहीं-कहीं ठहरना पड़ता है वैसे ही पद्य में भी ठहरना पड़ता है। इस ठहरने को ही विराम कहते हैं। छन्दःशास्त्र में विराम को यति कहते हैं। छन्दों में तीन स्थानों पर तो स्वाभाविक यति होती है-अर्थात् सारे पद्य के अन्त में, आधे पद्य के अन्त में और पदान्त में। एक-एक पाद में भी यति करने का विधान है। किस छन्द में कहाँ यति होती है—यह विशेष नियम आगे चल कर उन-उन छन्दों के लक्षणों में बताया जायगा।

इस यति से छन्दों के उच्चारण में सुविधा तथा सुनने में मधुरता आ जाती है।

परन्तु यदि नियत स्थान पर यति न हो गई हो—अर्थात्—यदि यति पद के मध्य में आती हो—तो यहाँ—

"यति-भङ्ग-दोष"

माना जाता है। ऐसा होने से छन्दों की रचना का माधुर्य नष्ट हो जाता है। कई बार तो इससे अर्थ करने

जैसेः—

वर्णिक छन्द

	वर्ण	मात्रा
देखें, चलो राघव की वीरता समर में,	१५	२३
देखूंगी ज़रा मैं वह रूप जिसे देख के	१५	२४
मोही मुग्धा शूर्पणखा पंचवटी वन में	१५	२२
देखूंगी सुमित्रा-पुत्र लक्ष्मण की शूरता	१५	२५
बाँधूंगी विभीषण को रघु-कुलाङ्गार को।	१५	२५
अरिदल दलूंगी ज्यों दलती है करिणी	१५	२१
भक्त-जन ! आओ तुम बिजली समान हो	१५	२०
बिजली सी टूट पड़े वैरियों के बीच में।	१५	२४

(मैथलीशरण गुप्त)

मात्रिक छन्द

	मात्रा	वर्ण
सुमति कुमति सब के उर रहहीं	१६	१४
नाथ पुराण निगम अस कहहीं।	१६	१३
जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना	१६	१२
जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना ॥	१६	१३

(रामायण से)

किंवा—

प्रेम करना है पापाचार	१६	१०
प्रेम करना है पापविचार	१६	११
जगत के दो दिन के ओ अतिथि	१६	१२
प्रेम करना है पापाचार !	१६	१०
प्रेम के अन्तराल में छिपी—	१६	१०

छन्दों के भेद

हिन्दी में छन्दों के मुख्य भेद हैं—(१) वर्णिक छन्द और (२) मात्रिक छन्द। वर्णिक छन्द में वर्णों अर्थात् अक्षरों की गणना के आधार पर छन्द माना जाता है और मात्रिक छन्द में अक्षर नहीं गिने जाते, केवल मात्राएँ गिनी जाती हैं।

वर्णिक छन्दों का दूसरा नाम वृत्त है और मात्रिक छन्दों को जाति भी कहते हैं।

वर्णिक और मात्रिक छन्दों की यदि पहचान करनी हो तो उसका सरल उपाय यह है कि उस पद्य को लिख लो। फिर उसके प्रत्येक पाद के अक्षरों या मात्राओं को उसी पाद की पंक्ति के सामने लिखिये। इसी प्रकार चारों पादों की पंक्तियों की मात्राओं तथा अक्षरों की संख्या को लिखो। यदि चारों पादों के अक्षरों की संख्या समान हो तो उसे वर्णिक छन्द और यदि मात्राओं की संख्या चारों पादों में समान हो तो उसे मात्रिक छन्द समझिये। वर्ण-छन्दों में मात्राओं की संख्या समान नहीं होती और मात्रा-छन्दों में अक्षर-गणना पूरी नहीं उतरती। जैसे—

इस उदाहरण में न तो मात्राओं की संख्या समान है और न ही अक्षरों की। इस लिए मात्रायें और वर्ण दोनों ही इस पद्य के आधार नहीं है। ऐसे पद्यों की रचना केवल लय (Rhythm) के आधार पर ही की गई है। परन्तु ऐसे पद्य वर्तमान काल की ही सृष्टि है।

गण

जैसे छन्द दो प्रकार के हैं उसी प्रकार इन छन्दों के आधार पर गण भी दो प्रकार के हैं। एक वर्ण-गण और दूसरे मात्रा-गण।

पहले लिख आये हैं कि लघु या गुरु अक्षरों की स्थिति तथा उनका क्रम प्रत्येक छन्द में भिन्न २ प्रकार से होता है। इन गुरु या लघु अक्षरों के स्थान नियत होते हैं। कहाँ कौन सा वर्ण गुरु है और कौन सा लघु है—यह बात समझना-समझाना कठिन है। इस कठिनता को दूर करने के लिये छन्द शास्त्र के आचार्यों ने "गणों" की कल्पना की है। इन गणों के द्वारा सरलता से ही कहाँ कौन सा अक्षर लघु या गुरु है—यह जाना जाता है।

"गण" शब्द का अर्थ है—समूह। वर्ण-छन्दों में तीन अक्षरों के समूह को गण कहते हैं। मात्रा-छन्दों में चार मात्राओं का एक गण बनता है।

वासना की है भीषण ज्वाल ।	१६
इसी से जलते हैं दिन रात—	१६
प्रेम के पन्थी बन विकराल !	१६
प्रेम में है तृष्णा की जीत	१६
और जीवन की भीषण हार	१६
न करना प्रेम न करना प्रेम	१६
प्रेम करना है पापाचार ॥	१६

(प्रो० रामकुमार वर्मा)

ऊपर लिखे उदाहरणों में से पहले उदाहरणों की प्रत्येक पं
१२ वर्ण हैं परन्तु प्रत्येक पंक्ति की मात्राओं की संख्या समान नहीं
इसलिए यह वर्णिक छन्द है ।

दूसरे उदाहरण की प्रत्येक पंक्ति में १६ मात्राएँ हैं और व
संख्या समान नहीं । अतः यह मात्रिक छन्द है ।

तीसरा उदाहरण भी मात्रा छन्द का है । इसमें भी प्रत्येक पं
मात्राएँ १६ हैं परन्तु वर्णसंख्या भिन्न-भिन्न है ।

लयछन्द

वर्तमान काल में वर्णिक और मात्रिक छन्दों से भिन्न एक नये
की सृष्टि नवीन कवियों ने की है। उसका आधार केवल ल
संगीतमय स्वर है । इसमें न तो वर्णों की समानता होती है और
मात्राओं की । केवल 'लय-साम्य' होता है । जैसे—

	वर्ण
देखता हूँ जब उपवन	१०
पियालों में फूलों के	७
प्रिये ! भर भर अपना यौवन	१२
पिलाता है मधुकर को ।	

(सुमित्रानन्दन

*तीन होत गुरु मगण के, नगण सर्व-लघु जान।
आदि मध्य अरु अन्त के, गुरु सों भ-ज-सा मान ॥ १ ॥
यगण, रगण अरु तगण में, आदि-मध्य-अवसान।
लघु अक्षर सोहैं यही, अष्ट गणों का मान ॥ २ ॥

देवता और उनका फल

इन गणों के देवता तथा उनका शुभाशुभ फल भी माना जाता है। निम्न-लिखित तालिका से गणों के स्वरूप, उदाहरण, देवता और शुभाशुभ फल का ज्ञान हो जाता है। सत्कवि लोग अशुभ गणों के प्रयोग को नहीं करते।

---

*आदिमध्यावसानेषु भजसा यान्ति गौरवम्।
यरता लाघवं यान्ति मनौ च गुरु-लाघवम् ॥
श्रुतबोध।

वर्ण-छन्दों में निम्नलिखित गण होते हैं:—

मगण	भगण	यगण
नगण	जगण	रगण
	सगण	तगण

इस प्रकार तीन अक्षरों का गण होता है। तीन अक्षरों में गुरु और लघु का स्थान-भेद आठ प्रकार से ही हो सकता है, इससे अधिक नहीं। यदि कहीं तीन से न्यून अक्षर हों (दो या एक हों) तो यदि एक गुरु है तो उसे गुरु कहकर और लघु है तो लघु कहकर समझ दिया जाता है।

जैसे कि कहा गया है कि तीन अक्षरों में गुरु-लघु की स्थिति आठ प्रकार से ही हो सकती है, इससे अधिक नहीं, यह बात निम्न-लिखित सरणी से समझ में आ सकती है:—

मगण ऽ ऽ ऽ	तीनों गुरु
नगण । । ।	तीनों लघु
भगण ऽ । ।	आदि में गुरु
जगण । ऽ ।	मध्य में गुरु
सगण । । ऽ	अन्त में गुरु
यगण । ऽ ऽ	आदि में लघु
रगण ऽ । ऽ	मध्य में लघु
तगण ऽ ऽ ।	अन्त में लघु

गणों के स्वरूपों को स्मरण करने के लिए कालिदास ने अपने संस्कृत के श्रुतबोध-नामक संस्कृत-छन्दोग्रन्थ में एक सुन्दर श्लोक दिया है। हम उसका पद्यानुवाद नीचे लिख देते हैं:—

इन गणों के देवता, फल और शुभाशुभ को बतलाने वाला एक संस्कृत का श्लोक बहुत प्रसिद्ध है। उसका अनुवाद श्रीयुत अवध उपाध्याय जी ने इस प्रकार पद्य में किया है:—

*मगण भूमि लक्ष्मी, य जल पावे आयु विशेष।
रा पावक ता फल जलन, सगण वायु परदेश ॥ १ ॥
सगण व्योम है शून्य फल, जगण भानु रुज होय।
नगण स्वर्ग सुखप्रद, भ शशि, देत यशहि है सोय ॥ २ ॥

---

*मो भूमि श्रियमातनोति य जलं वृद्धिं रश्चाग्नि र्मृतिः,
सो वायुः परदेशदूरगमने त व्योम शून्यं फलम्।
जः सूर्यो रुजकं ददाति विपुलं भेन्दु. यशो निर्मलम्,
नो नाकश्च सुखप्रद. फलमिदं प्राहुर्गणानां बुधा ॥

गण नाम	स्वरूप	चिह्न	उदाहरण	उदाहरण (वाक्य रूप)	देवता	फल	शुभाशुभ
मगण	त्रिगुरु	S S S	मानार्थी	भद्रात्मा	भूमि	लक्ष्मी	शुभ
नगण	त्रिलघु	I I I	नयन	सहज	स्वर्ग	सुख	शुभ
भगण	आदिगुरु	S I I	भाजन	कोमल	चन्द्रमा	यश	शुभ
जगण	मध्यगुरु	I S I	जनेश	दयालु	सूर्य	रोग	अशुभ
सगण	अन्तगुरु	I I S	सखी	मनसे	वायु	विदेश	,,
यगण	आदिलघु	I S S	यशस्वी	प्रजा को	जल	आयु	शुभ
रगण	मध्यलघु	S I S	राधिका	भद्रता	अग्नि	दाह	अशुभ
तगण	अन्तलघु	S S I	ताटंक	साधे, ल-	आकाश	शून्य	अशुभ
गुरु		S	गा	था—			
लघु		I	ल	— घु।			

जो स्वतन्त्र हैं—सर्वगुरु और सर्वलघु । यद्यपि प्राचीन आचार्यों ने मात्रागणों के नाम भी पृथक् बतलाये हैं तथापि वर्त्तमान काल में उनके नाम छोड़ दिये गये हैं, क्योंकि मात्रागणों के रूपों को, जैसा कि ऊपर लिखा गया है, विशेष स्वतन्त्रता नहीं है ।

मात्रागणों के रूप, उदाहरण और प्राचीन नाम

संख्या	रूप	लक्षण	नाम	उदाहरण	वर्णगणों के नाम जिनमें अंतर्भावहोजाताहै
१	SS	सर्व-गुरु	करण, सुरलता	SS राधा	(दो गुरु)
२	SII	आदि-गुरु	चरण	SII माधव	भगण
३	ISI	मध्य-गुरु	भूपति	ISI रमेश	जगण
४	IIS	अन्त-गुरु	कमल	IIS वनिता	सगण
५	IIII	सर्व-लघु	विप्र	IIII हिमकर	नगण तथा एक-लघु

मात्रा-गण

वर्णगण तीन अक्षरों से बनता है और मात्रागण चार मात्राओं से बनता है।

जैसे तीन अक्षरों के गण में लघु-गुरु की स्थिति-भेद के कारण आठ गण ही बन सकते हैं, इसी प्रकार लघु गुरु को भिन्न २ स्थिति के कारण चार मात्राओं के मात्रिक गण के पाँच भेद ही हो सकते हैं। जैसेः—

(१)	ऽ ऽ	सर्व-गुरु
(२)	ऽ । ।	आदि-गुरु
(३)	। ऽ ।	मध्य-गुरु
(४)	। । ऽ	अन्त-गुरु
(५)	। । । ।	सर्व-लघु

यदि ऊपर लिखे मात्रागणों के स्वरूपों पर विचार किया जाय तो सहज ही जाना जा सकता है कि इनमें से (२) आदि-गुरु (३) मध्य गुरु (४) अन्त-गुरु क्रम से वर्ण-छन्दों के तीन भेदों—भगण, जगण, सगण-में अन्तर्भूत हो सकते हैं। अतः मात्रागणों के केवल दो भेद हो सकते हैं,

उन पर "ग ल" या "ल ग" लिखो।

जैसे:—

स न न म भ भ भ ग ल

।।ऽ ।।। ।।। ऽऽऽ ऽ।। ऽ।। ऽ।। ऽ।

जग को अगम ग कर ने पाला है शुभ्र मैं न प्र कास म हा न

स म भ भ म म ल

।।ऽ ऽऽऽ ऽ।। ऽ।। ऽऽऽ ऽऽऽ ।

पर मिट्टी के ही दीपक से र ह ता है तू ज्योतिष्मा न

दग्धाक्षर

छन्दःशास्त्र के आचार्यों ने निम्नलिखित अक्षरों को शुभ या अशुभ माना है।

शुभाक्षरः—

क ख ग घ

च छ ज ड वर्ण १४

द ध न य

श स

अशुभाक्षर

ङ झ ञ ट ठ ढ ण

त थ प फ ब भ म अक्षर संख्या १९

र ल व ष ह

इन अशुभाक्षरों को ही दग्धाक्षर कहते हैं। कवि लोग इन अक्षरों का काव्यादि में प्रयोग करना ठीक नहीं समझते। इन दग्धाक्षरों

छन्दों में मात्रा लगाने का प्रकार

यदि यह पूछा जाय या स्वयं जानने की इच्छा हो कि छन्द में कितनी मात्राएँ हैं तो उसका सरल उपाय यह है कि

(१) उस पद्य की सारी पंक्तियाँ पृथक् पृथक् लिखो,

(२) लघु अक्षरों के ऊपर लघु का चिन्ह और गुरु वर्णों के ऊपर गुरु का चिन्ह लगाते जाओ,

(३) गुरु की दो मात्राएँ और लघु की एक-एक मात्रा गिन कर प्रत्येक पंक्ति के अन्त में योग करके लिखो।

इस प्रकार सम्पूर्ण पद्य की मात्राएँ जानी जा सकती हैं।

जैसे—:

S S I S I S S I I S I S I I I S =योग २१

ऐ मातृ-भूमि ! तेरी जय हो सदा विजय हो।

S S I S I S S I I S I S I I I S =योग २१

प्रत्येक भक्त तेरा सुख शान्ति कान्तिमय हो॥

(श्रीराम नरेश त्रिपाठी)

छन्दों में गण लगाने का प्रकार

यदि किसी पद्य के गणों को जानना हो तो ऊपर लिखे प्रकार से प्रत्येक पंक्ति पृथक् २ लिखकर फिर उस पर उसी प्रकार से गुरु और लघु के चिन्ह लगाओ। फिर तीन-तीन अक्षरों के ऊपर एक-एक लकीर खींचो। ये तीन २ अक्षरों के गण बन जायेंगे। फिर उनके ऊपर गण का नाम लिखो। यदि दो गुरु बच जायँ तो उन पर "ग ग" लिख... यदि दो लघु बचें तो "ल ल" और यदि एक गुरु और ए

यहाँ 'ह' दग्धाक्षर है और यह दीर्घ भी नहीं। परन्तु यह 'हरि' शब्द में आया है जो देवतावाचक शब्द है, अतः यहाँ दग्धाक्षर दोष नहीं।

रघुकुल रीति सदा चलि आई।
प्राण जाय पर बचन न जाई॥

[तुलसीदास]

यहाँ 'र' दग्धाक्षर है और ह्रस्व भी है परन्तु महापुरुषवाचक शब्द में आने से दोषयुक्त नहीं।

भूख प्यास से दलित दीन की,
मर्मभेदिनी आहों में।
दुखियों के निराश आँसू में,
प्रेमी जन की राहों में।

(रामनरेश त्रिपाठी)

यहाँ भी 'भ' दीर्घ (भू) होने के कारण दग्धाक्षर दोष से मुक्त है।

इसी प्रकार नीचे लिखे दोहे में 'भ' का दोष नहीं।

भौसागर अलि विषभरा मन नहिं बाँधे धीर।
सब्द सनेही पिउ मिला उतरा पार कबीर॥

(कबीर)

-में से भी निम्नलिखित पाँच अक्षर सवैया त्याज्य हैं। भानु कवि कहा भी है:—

दीजो भूलि न छंद के आदि "झ ह र भ ष" कोय।
दग्धाक्षर के दोष ते छंद दोष पुन होय॥ (भानु)

परन्तु यह नियम भी व्यापक नहीं। आचार्यों ने इसका अपवाद भी बतलाया है। भानु कवि कहते हैं:—

मंगल सुर वाचक शब्द, गुरु होवे पुनि आदि।
दग्धाक्षर को दोष नहिं, अरु गण दोषहिं वादि॥ (भानु)

अर्थात् देवतावाचक, मंगलसूचक, और दग्धाक्षर भी यदि दीर्घ -हों तो दग्धाक्षर का दोष तथा अशुभ गणों का दोष नहीं माना जाता। जैसे:—

झार खण्ड में बसत है बैजनाथ भगवान।
झुकि झुकि तिनकी झलक को, देव करें सब गान॥
(श्री भानु कवि)

यहाँ "झ" दग्धाक्षर है। परन्तु दीर्घ होने के कारण इसे निर्दोष -ना जाता है।

हे मेरे प्रभु व्याप्त हो रही है, तेरी छवि त्रिभुवन में।
तेरी छवि का ही विकास है, कवि की वाणी में मन में॥
(श्री रामनरेश त्रिपाठी)

यहाँ 'ह' दग्धाक्षर है। परन्तु दीर्घ होने से यहाँ दोष नहीं -जाता।

हरिश्चन्द्र और ध्रुव ने कुछ और ही बनाया।
मैं तो समझ रहा था तेरा प्रताप धन में॥
(श्री राम नरेश त्रिपाठी)

ज

।ऽ।

गिरीश भारत का द्वारपट है,

सदा से है यह हमारा संगी।

नृपति भगीरथ की पुण्यधारा,

बगल में बहती हमारी गंगी।

(श्री मन्नन द्विवेदी)

यहाँ भी जगण 'गिरीश' (हिमालय) शब्द में देववाचक होने से गणदोष से रहित है।

(२) रगणः—

रगण

ऽ।ऽ

दीनबन्धु की कृपा बन्धुजन, जीवित हैं,

हरियाले हैं।

भूले भटके कभी गुज़रना,

हम वे ही पत्र वाले हैं।

(माखनलाल चतुर्वेदी)

दीनबन्धु भगवान का नाम है। इसमें रगण के आजाने से गणदोष नहीं।

(३) सगणः—

सगण

।।ऽ

जिनका नाम मात्र सुखद हो, [illegible] करें,

रच [illegible] प्रपंच पसार करें, [illegible] करें।

जिनके [illegible] [illegible] करें,

[illegible] 'शंकर' [illegible] से, [illegible]

गण-दोषों का अपवाद

जैसे दग्धाक्षरों के दोष से बचने के लिए अपवाद हैं वैसे ही गण-दोषों का भी परिहार है। यद्यपि 'जगण-रगण-सगण-तगण' अशुभ माने गये हैं तो भी यदि वे देववाचक या मंगलसूचक हों तो उनका दोष नहीं माना जाता। साधारण अवस्था में इन गणों का प्रारम्भ में प्रयोग त्याज्य है।

उदाहरण: —

यहाँ जगण का प्रयोग का दोष नहीं.—

(1) जगण

। ऽ ।
अलै पुरुष इक पेड़ है निरँजन वाकी डार।
तिर देवा शाखा भये पात भया संसार॥ [कबीर]

यहाँ जगण 'अलै पुरुष' [अलख पुरुष] ईश्वरवाचक शब्द के आने से निर्दोष है।

हिन्दी-कवियों ने भी गणदोष की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। प्रतीत होता है वे इस विषय में स्वतंत्र हैं। उदाहरणार्थ जयशंकर प्रसाद को नीचे लिखी कविता देखें—

ऽऽ

।।ऽ
रजनी की रोई आँखें
आलोक बिन्दु टपकाती
तम की काली छलनायें
उन को चुप चुप भी जातीं।

यह 'आँसू' कविता का प्रथम पद है। इसमें गणदोष का प्रयोग प्रारम्भ में ही है। 'रजनी' शब्द न तो देवतावाचक है और नहीं मंगल वाचक। यह तो कवि के हृदय में स्थित अनन्त निराशा की ओर संकेत करता है। परन्तु फिर भी महाकवि प्रसाद जी ने प्रयोग किया है और गणदोष को नहीं माना। यही भावना अन्य कवियों की है।

यहाँ [illegible] शब्द देवतावाचक शब्द है। अतः इसमें ग[illegible] का आना निर्दोष है।

(४) तगण का दोष परिहार—

तगण
ऽ ऽ ।
आलोक कहाँ लुटता है
बुझ जाते हैं तारागण।
अविराम जला करता है
पर मेरा दीपक सा मन॥

(महादेवी वर्मा)

यहाँ आलोक शब्द में तगण है। मङ्गलवाच्य होने से दुष्ट नहीं माना गया।

नोटः—इन दग्धाक्षरों की कल्पना का आधार है सहृदय-हृदयों का उद्वेग। यह अक्षर श्रुतिकटु होते हैं। अतः काव्य या छन्द के प्रारम्भ में इनका प्रयोग श्रुतिकटु होने से श्रोताओं के हृदयों को उद्विग्न करेगा, अतः इनको त्याज्य तथा दोषयुक्त माना गया है।

यही दशा गणों के शुभाशुभ कल्पना की है। परन्तु संस्कृत कवि लोग गणों के दोष को अधिक महत्व नहीं देते। अतएव इन गणों का प्रयोग कवियों ने पद्यों के प्रारम्भ में खूब किया है। संस्कृत के महाकवियों ने प्रायः अपने काव्यों में उन्हीं छन्दों को अपनाया है जिनमें ये गण प्रारम्भ में प्रयुक्त हैं। इन्द्रवज्रा, वंशस्था, उपजाति, वसन्ततिलका आदि छन्द संस्कृत-कवियों ने अधिक अपनाये हैं। इनमें क्रमसे—तगण, जगण (उपजाति में दोनों), तगण ही प्रारम्भ में आते हैं।

वर्ण तथा मात्रा छन्दों के मुख्य भेद।

वर्णछन्द तथा मात्राछन्द तीन प्रकार के हैं:—

(१) सम, जिसके चारों पाद एक जैसे हों, अर्थात् सब पादों
अक्षरों या मात्राओं की संख्या समान हो, उसे स
छन्द कहते हैं।

(२) अर्ध-सम—

जिसमें प्रथम तथा तृतीय पाद और द्वितीय तथा चतु
पाद समान हों, उस छन्द को अर्ध-सम छन्द कहते हैं।

(३) विषम—जिसमें चारों पादों के लक्षण भिन्न २ हों उ
विषम छन्द कहते हैं।

वर्णछन्द के क्रम से उदाहरण:—

समवृत्त:—

	। । ऽ । । ऽ । । ऽ । । ऽ	वर्ण
१	जय राम सदा सुखधाम हरे	१२
२	रघु नायक सायक चाप धरे।	१२
३	भव वारण दारण सिंह प्रभो,	१२
४	गुण सागर नागर नाथ विभो।	१२

[भान कवि]

समवृत्त के भेद

सम वृत्तों की व्याख्या ऊपर कर दी गई है। इस के अनेकों भेद हैं। छोटे से छोटा समवृत्त वह है जिसके प्रत्येक पाद में एक-एक अक्षर हो। उससे बड़ा वह है जिसके प्रत्येक पाद में दो-दो अक्षर हों। इस प्रकार एक-एक अक्षर बढ़ाते चलिये। ये सब समवृत्त के भेद हैं। अन्त में २६ अक्षरों तक पहुँचिए, अर्थात्, जहाँ प्रत्येक पाद में २६ अक्षर हैं। ये सब भेद 'जाति' नाम से पुकारे जाते हैं। अर्थात् एकाक्षर, द्व्यक्षर, त्र्यक्षर, चतुरक्षर आदि जातियाँ २६ अक्षर की जाति तक होती हैं। यदि २६ अक्षर से अधिक पादों वाले समवृत्त हों तो उन्हें दण्डक नाम दिया जाता है।

इन एकाक्षर आदि जातियों के नाम क्रम से नीचे दिये जाते हैं—

प्रत्येक पाद की वर्ण संख्या	जाति नाम	भेद	वर्ण	जाति-नाम	भेद
१	उक्ता	२	१४	शक्वरी	१६३८४
२	अत्युक्ता	४	१५	अति शक्वरी	३२७६८
३	मध्या	८	१६	अष्टि	६५५३६
४	प्रतिष्ठा	१६	१७	अत्यष्टि	१३१०७२
५	सुप्रतिष्ठा	३२	१८	धृति	२६२१४४
६	गायत्री	६४	१९	अतिधृति	५२४२८८
७	उष्णिक्	१२८	२०	कृति	१०४८५७६
८	अनुष्टुप्	२५६	२१	प्रकृति	२०९७१५२
९	बृहती	५१२	२२	आकृति	४१९४३०४
१०	पंक्ति	१०२४	२३,	विकृति	८३८८६०८
११	त्रिष्टुप्	२०४८	२४	संस्कृति	१६७७७२१६
१२	जगती	४०९६	२५	अतिकृति	३३५५४४३२
१३	अतिजगती	८१९२	२६	उत्कृति	६७१०८८६४

१३ भागवत, १४ मानव, १५ तैथिक, १६ संस्कारी, १७ महासंस्कारी, १८ पौराणिक, १९ महापौराणिक, २० महादेशिक, २१ त्रैलोक, २० महारौद्र, २३ रौद्रार्क, २४ अवतारी, २५ महावतारी, २६ महाभागवत, २७ नाक्षत्रिक, २८ यौगिक, २९ महायौगिक, ३० महातैथिक, ३१ अश्वावतारी, ३२ लाक्षणिक।

ये नाम सार्थक हैं। मात्रा-संख्या के अनुसार ही ये नाम भी रखे गये हैं। जैसे—चन्द्रमा एक होता है अतः एक मात्रा वाली जाति का है। पक्ष (शुक्ल तथा कृष्ण) दो होते हैं। राम तीन (दशरथ पुत्र, परशुराम, बलराम) होते हैं। वेद चार होते हैं। यज्ञ (पांच महायज्ञ) पांच होते हैं इत्यादि। अतः उतनी ही मात्रा वाले छन्दों के ये नाम रखे गये हैं।

छन्दों के भेदों का चित्र
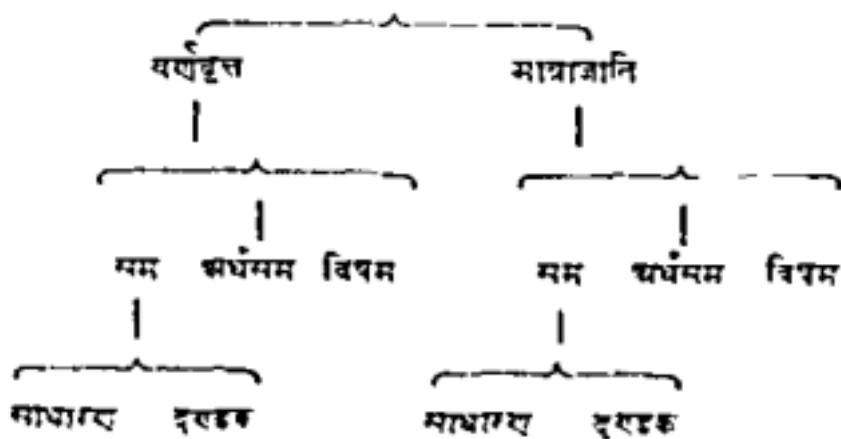
छन्द

- वर्णवृत्त
  - सम
    - साधारण
    - दण्डक
  - अर्धसम
  - विषम
- मात्राजाति
  - सम
    - साधारण
    - दण्डक
  - अर्धसम
  - विषम

यह दोहा छन्द है। इसमें पहला और तीसरा तथा दूसरा और चौथा चरण आपस में मिलते हैं।

(३) मात्रा-विषम छन्दः—

	मात्रा
१ गौरी बानी मांगे सोहन	१६
२ आपै सुरासना माने।	१४
३ काली माया आभा मोरे	१६
४ दोनों कान्तिदाया॥	११

यह 'लक्ष्मी' नामक छन्द है। यद्यपि इसका पहला और तीसरा पाद मिलते हैं—दोनों की १६, १६ मात्राएँ हैं तथापि यह अर्द्धसम नहीं, क्योंकि दूसरा और चौथा पाद समान नहीं। अतः यह विषम छन्द है। जो सम और अर्धसम छन्दों में नहीं आ सकते उन छन्दों को विषम छन्दों में गिना जाता है।

सम-मात्रिक छन्दों के भेद

जैसे एक-एक अक्षर प्रत्येक पाद में बढ़ा कर सम-वर्ण छन्द की जातियाँ बतलाई गई हैं और उससे आगे दण्डक माने गये हैं, इसी प्रकार मात्रा-छन्दों में भी एक-एक मात्रा वाले प्रत्येक पाद में क्रमशः (द्विमात्रिक, त्रिमात्रिक, आदि) ३२ मात्राओं तक ३२ जातियाँ मानी गई हैं। ३२ मात्रा से अधिक पाद वाले छन्दों को मात्रा-दण्डक कहा जाता है। एक मात्रा से लेकर ३२ मात्रा के पाद वाले छन्दों की ३२ जातियां हैं। उनके नाम निम्नलिखित हैं:—

१ चान्द्र, २ पाक्षिक, ३ राम, ४ वैधिक ५ याज्ञिक, ६ रागी, ७ लौकिक, ८ वासव, ९ आंक, १[illegible], ११ रौद्र, १२ आदित्य,

१४—निम्नलिखित पद्यों में गण-विन्यास करके उनके नाम लिखो:—

(क) चिर काल रसाल ही रहा, जिस भारत कवीन्द्र का कहा
जय हो उस कालिदास की, कविता केलि-कला-विलास की।

(मैथिली शरण गुप्त)

(ख) महिमा उमड़े लघुता न लड़े जड़ता जकड़े न चराचर को।
दटना मटके मुदिता मटके प्रतिभा भटके न समादर को।
निकले विमला शुभ कर्म कला पकड़े कमला श्रम के कर को।
दिन फेर पिता, वर दे सविता, कर दे कविता कवि शंकर को

(नाथूराम शंकर)

(ग) दुखित है धनहीन, धनी सुखी,
यह विचार परिष्कृत है नहीं।
मन! युधिष्ठिर को फिर क्यों हुई,
विभवता भवतापविधायिनी॥

(रामचरित उपाध्याय)

(घ) बरु सूरज पच्छिम उगे, विन्ध्य तरे जल माहिं,
सत्य वीर जन पै कबहूँ, निज व्रत टारत नाहिं॥

(हरिश्चन्द्र)

———

अभ्यास

१—छन्द कितने प्रकार के हैं ?

२—रूपात्मक छन्द किसे कहते हैं ?

३—दग्ध या दग्धाक्षरों की कल्पना क्यों की गई है ? दग्धाक्षरों के दोष का परिहार कैसे होता है ?

४—व्यक्ति और जाति में क्या भेद है ?

५—कविता और छन्द का कितना सम्बन्ध है ?

६—मात्रा किसे कहते हैं ?

७—लघु और गुरु का विवेचन करो ।

८—यति से क्या तात्पर्य है ?

९—गणों के लक्षण तथा उदाहरण लिखो ?

१०—क्या अशुभ गणों का परित्याग करना आवश्यक है ?

११—विषम वृत्त किसे कहते हैं ? सोदाहरण व्याख्या करो ।

१२—मात्रिक छन्दों और वर्ण छन्दों में क्या भेद है ? स्पष्ट रूप से समझाओ ?

१३—नीचे लिखे पदों में गुरु-लघु लगाओ और उनकी मात्राएँ गिनो.—

(क) दिनान्त के साथ दिनेश भी चला,
मनो मही के सिर से टली बला ।

उक्ता जाति (२ भेद)

एक अक्षर वाली जाति

श्री

गा श्री

जिसके प्रत्येक पाद में एक-एक गुरु हो उसे श्री कहते हैं

ऽ ऽ ऽ ऽ

जैसेः— श्री । की ॥ जै । हो ॥

अत्युक्ता जाति (४ भेद)

दो अक्षरों वाली जाति

कामा

दो गा कामा

दो गुरु होने से कामा छन्द होता है। इसे स्त्री भी कहते हैं।

ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ

माता । देता ॥ दाता । सांई ॥

यहाँ प्रत्येक पाद में दो गुरु हैं।

मार

गा ला सार

एक गुरु, एक लघु होने से मार छन्द होता है।

ऽ। ऽ। ऽ। ऽ।

मन्द । लाल ॥ धर्म । पाल ॥

इसमें एक गुरु और एक लघु प्रत्येक पाद में है।

दूसरा अध्याय

वर्ण-वृत्त-प्रकरण

सम-वृत्त

जिस छन्द के चारों चरणों में समान लक्षण घटता है—जिसके चारों पाद एक जैसे हों—उस छन्द को सम-वृत्त कहते हैं।

पहले लिख आये हैं कि सम-वृत्त की २६ जातियाँ होती हैं। उनका स्वरूप और उनके नाम पहले बतला दिये गये हैं। अब प्रत्येक जाति के कुछ-कुछ भेद यहाँ लिखे जाते हैं। पाठक यह न जानें कि इन जातियों के इतने ही भेद होते हैं। प्रत्येक जाति के जितने भेद होते हैं उनकी संख्या भी पहले बतलाई गई है।

मृगी

रा मृगी

एक रगण (ऽ । ऽ) से मृगी छन्द होता है।

ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ

हे प्रभो । दीनता ॥ वेग गे । नाश हो ॥

यहाँ प्रत्येक पाद में एक रगण है।

शशी

शशी या

एक यगण (। ऽ ऽ) से शशी छन्द होता है।

। ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

दिखावे । हरी को । यशोदा । शशी को ॥

यहाँ सब पादों में यगण है।

प्रतिष्ठा (१६ भेद)

चतुरक्षरा जाति

कन्या

मा गा कन्या

(म ग)

एक मगण (ऽ ऽ ऽ) एक गुरु होने से कन्या छन्द होता है।

ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ

माता सोई । भू पै धन्या ॥ मान्या जा की । सीता कन्या ॥

यहाँ प्रत्येक पाद में एक मगण और एक गुरु है।

मही

लगा मही ।

एक लघु और एक गुरु होने से मही छन्द होता है ।

। ऽ	। ऽ	। ऽ	। ऽ
रमा ।	पती ॥	जपे ।	सदा ॥

यहाँ एक लघु और एक गुरु है ।

मधु

ल ल मधु ।

प्रत्येक पाद में दो लघु होने से मधु छन्द होता है ।

।।	।।	।।	।।
अलि ।	चल ॥	मधु ।	बन ॥

यहाँ प्रत्येक पाद में दो लघु हैं ।

मध्या जाति [८]

तीन अक्षरों की जाति

नारी

मा नारी

एक मगण से नारी छन्द होता है ।

ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ
हे स्वामी ।	हे लक्ष्मी ॥	तू दाता ।	हे माता ॥

यहाँ प्रत्येक पाद में एक मगण (ऽ ऽ ऽ) है ।

गायत्री जाति (६४ भेद)

छः अक्षरों वाले छन्द इस जाति में होते हैं। वैदिक छन्दों की गायत्री में प्रतिपाद ८ अक्षर होते हैं। वहाँ इसे त्रिपदा माना गया है। सारी गायत्री में ८×३ = २४ अक्षर ही होते हैं। परन्तु संस्कृत तथा हिन्दी में इसे षडक्षर ही माना है। सारे पद्य में ६×४ = २४ अक्षर होते हैं।

विद्युल्लेखा

मा मा विद्युल्लेखा

दो मगण होने से विद्युल्लेखा छन्द होता है।

मैं माटी ना खाई। झूठे ग्वाला माई।
मूं बायो माँ देखा। जानी विद्युल्लेखा॥

(भानु कवि)

यहाँ प्रत्येक पाद में दो मगण हैं।
इस छन्द को 'शेषराज' भी कहते हैं।

सोमराजी

य या सोमराजी।

(य य)

दो यगण होने से सोमराजी छन्द होता है।

प्रभो न्यायकारी, तुही है मुरारी।
जगन्नाथ तू ही, खरारी दुखारी॥ (आनन्द)

इसमें दो यगण हैं। इस छन्द का नाम शंखनारी भी है।

सुप्रतिष्ठा जाति (३२)

पाँच अक्षरों की जाति

पंक्ति

भाभा (भ ग ग) पंक्ति।

एक भगण (ऽ।।) और दो गुरु होने से पंक्ति छन्द होता है।

भ भ

ऽ।। ऽऽ ऽ।। ऽऽ
भारत वर्षा, देश पुनीता।
भाशय जाके पावन गीता ॥ (आनन्द)

इसके प्रत्येक पाद में एक भगण और दो गुरु हैं।
इस छन्द को 'हंसी' कहते हैं।

विलास

जगौ विलासा

इसमें दो जगण (।ऽ) और दो गुरु होते हैं। इसके दो नाम हैं विलास छन्द तथा यशोदा छन्द।

।ऽ ।ऽऽ ।ऽ ।ऽऽ
प्रभो दिखाओ, कृपा अपारो।
कुचाल मेरो, तु ही सुधारो ॥
इसमें एक जगण और दो गुरु हैं।

गायत्री जाति (६४ भेद)

छै अक्षरों वाले छन्द इस जाति में होते हैं। वैदिक छन्दों की गायत्री में प्रतिपाद ८ अक्षर होते हैं। वहाँ इसे त्रिपदा माना गया है। सारी गायत्री में ८×३=२४ अक्षर ही होते हैं। परन्तु संस्कृत तथा हिन्दी में इसे षडक्षर ही माना है। सारे पद्य में ६×४=२४ अक्षर होते हैं।

विद्युल्लेखा

मा मा विद्युल्लेखा

दो मगण होने से विद्युल्लेखा छन्द होता है।

मैं माटी ना खाई। झूठे ग्वाला गाई।
तू बायो मों देखा। आली विद्युल्लेखा॥

(भानु कवि)

यहाँ प्रत्येक पाद में दो मगण है।
ओ कहते हैं।

होता है।
कुमारी।
॥ (काव्य

सुप्रतिष्ठा वृत्ति (१२)

पाँच अक्षरों के वृत्ति

पंक्ति

भगण (भगग) पंक्ति।

एक भगण (ऽ।।) और दो गुरु होने से पंक्ति छन्द

भ   भ

ऽ।।ऽऽ   ऽ।।ऽऽ

भारत वर्षी, देश पुनीता।

भाषत जाके पावक गंगा॥

इसके प्रत्येक पाद में एक भगण और दो गुरु हैं।
इस छन्द को 'हंसी' कहते हैं।

विलास

जगौ विलासा

इसमे दो जगण (।ऽ) और दो गुरु होते हैं। इसी नाम है विलास छन्द तथा यशोदा छन्द।

।ऽ ।ऽऽ   ।ऽ   ।ऽऽ

प्रभो दिखाओ, कृपा अपारो।

कुचाल मेरो, तु ही सुधारो॥

इसमें एक जगण और दो गुरु है।

गायत्री जाति (६४ भेद)

छै अक्षरों वाले छन्द इस जाति में होते हैं। वैदिक छन्दों की गायत्री में प्रतिपाद ८ अक्षर होते हैं। वहाँ इसे त्रिपदा माना गया है। सारी गायत्री में ८ × ३ = २४ अक्षर ही होते हैं। परन्तु संस्कृत तथा हिन्दी में इसे षटक्षर ही माना है। सारे पद्य में ६×४ = २४ अक्षर होते हैं।

विद्युल्लेखा

मा मा विद्युल्लेखा

दो मगण होने से विद्युल्लेखा छन्द होता है।

मैं माटी ना खाऊं। मूठे ग्वाला माई।
यूं बोलो माँ देखा। जोनी विद्युल्लेखा॥

(भानु कवि)

यहाँ प्रत्येक पाद में दो मगण हैं।
इस छन्द को 'शेषराज' भी कहते हैं।

सोमराजी

य या सोमराजी।

(य य)

दो यगण होने से सोमराजी छन्द होता है।

प्रभो न्यायकारी, सुदो हे मुरारी।
जगन्नाथ तू हो, खरारी दुखारी॥ (आनन्द)

इसमें दो यगण हैं। इस छन्द का नाम शंखनारी भी है।

करो मत मान, तजो यह बान।
बुरा अभिमान, सुनो मतिमान॥ (आनन्द)

और भीः—

लिखा जस भाल, रहे तस हाल।
रहो मत लेट, करो कुछ ठेट॥ (आनन्द)

मन्थान

मन्थान हैं तात।

(त त)

दो तगणों से मन्थान होता है।

ताता धरो धीर, मैं देत हों बीर।
जाने न नादान, धार्यो जु मन्थान॥ (भानु)

और भी,

धायो कही बात, कीन्हीं न सो कान।
यद्यपि जानी न, रे धादे कालीन॥

(रामचन्द्रिका)

तनुमध्या

ता या तनुमध्या।

(त य)

एक तगण और एक यगण से तनुमध्या छन्द होता है।

आयो जु मुरारी, शोभा अति भारी।
सोई जग मारी, जानो भव मारी॥ (आनन्द)

वसुमति

गा मो वसुमती।

[त स]

तगण सगण से वसुमति छंद होता है।

आई शुभ घरी, जन्मे प्रभु हरी।
सारा जग सुखी, रघोमन दुखी॥ (आनन्द)

मोहन

स ज मोहन सु।

(स ज)

सगण, जगण से मोहन छन्द होता है।

प्रभु भक्ति हीन, जग मोह लीन।
नर! हो न नष्ट, यह मार्ग कष्ट॥ (आनन्द)

शशिवदना

शशिवदना न्या।

(न य)

शशिवदना में नगण यगण होते हैं:—

दशशिर आओ, धनुष उठाओ।
कछु बल कीजे, जग जस लीजे॥ (रामचन्द्रिका)

और भी:—

शरण निहारो, चरण निहारो ।
भव भय हारी, सब सुखकारी ॥ (आनंद)

* इसका अन्य नाम अगदरसा भी है ।

उष्णिक् (१२८ भेद)

सात अक्षरों की जाति ।

शिष्या

शिष्या मा मा गा जानो ।

(म म ग)

शिष्या में दो मगण और एक गुरु होते हैं ।

हुल्लासा था लाती था, मालों का भी दाता था ।
ऊँचा हिन्दू पानी था, राणा सच्चा मानी था ॥ ([illegible])

विशेष —

माँ, मोगों में हारा था, काटे पूरी प्यारा था ।
मानों मेरी मा रोवे, प्यारा है दिल्ली मेरे ॥

इसका अन्य नाम शीर्षरूपक है ।

मदलेखा

मा सा गा मदलेखा ।

(म स ग)

मगण, सगण और एक गुरु से मदलेखा [illegible] होता है ।

ज्यों मिट्टी भर सारा, राचै कुम्भ कुम्हारा।
त्यों जो कर्मंहि साधै, आपो आपही पावै॥

(बिहारीलालभट्ट)

मिथ्या बोल न बोलो, सन्तों के संग डोलो।
विद्या में मन जोड़ो, दोषों से मुँह मोड़ो॥

(सुधा देवी)

समानिका

रा ज गा समानिका।

(र ज ग)

रगण जगण और एक गुरु से समानिका छन्द होता है।

भाग्य है बली यहाँ, यत्न भी करो महाँ।
यत्न जो करे नहीं, भाग्य से न पावहीं॥

किञ्च:—

देखि देखि कै सभा, विप्र मोहियो प्रभा।
राज मंडली लसै, देव लोक को हँसै॥

(रामचन्द्रिका)

मधुमती

न न ग मधुमती।

(न न ग)

मधुमती में दो नगण और एक गुरु होता है।

भव भय हरना, असरन सरना।
हरि गुरु धरना, निशि दिन ररना॥ (भान)

लीला

भा ग न लीला लखो ।

(भ ग न)

भगण, सगण और एक गुरु से लीला छन्द होता है ।

भाग्य नहीं मानिये, यत्न सदा ठानिये ।
यत्न जब ना फलै, भाग्य तब है फलै ॥

(बिहारीलाल भट्ट)

सवारन

न ज ल सवारन ।

(न ज ल)

सवारन में नगण, जगण और एक लघु होता है ।

न जु लख रामहि, तजि सब कामहि ।
कह जन तारन, अपजस वारन ॥ (भान)

इसका अन्य नाम सुवारु भी है ।

———

अनुष्टुप् (२५६ भेद)

आठ अक्षरों वाली जाति

विद्युन्माला

मा मा गा गा विद्युन्माला

(म म ग ग)

विद्युन्माला में दो मगण और दो गुरु होते हैं।

गंगा माता तेरी धारा, काटे फन्दा सारा मेरा।
विद्युन्माला जैसी सोहै, पीपीमाला तैसी मोहै॥ (सुधादेवी)

नोट:—विद्युन्माला के द्विगुण को रूपा कहते हैं।

मल्लिका

रा ज गा ल मल्लिका सु।

(र ज ग ल)

मल्लिका में रगण, जगण, गुरु, लघु होते हैं।

मूर्ख जो सजे शृङ्गार, सोह भली मौन धार।
नेक कछु बोल दीन, सोह गुनै परोबीन॥

(बिहारीलाल भट्ट)

हिन्दी:—

इच्छित जो कार्य रहै, उद्यम से सिद्ध ह्वै।
सिंह मृगा दाढ़ धरै, आपहि आके न मरै॥

इसे माणवक्रीडा भी कहते हैं।

बृहती जाति (५१२)

नौ अक्षरों वाली जाति

शशिभृता

भुजंग शशिभृता न न्मा।

(न न म)

इसमें दो नगण और एक मगण होता है।

दुख पर दुख ही आयें, पर निज पथ ना त्यागें।
प्रभु पद-रज को ध्यावें, अनत न मन ले जावें॥ (भानु)

महालक्ष्मी

तीन रेफा महालक्ष्मी

(र र र)

तीन रगणों से महालक्ष्मी छन्द बनता है।

*रात्री प्यौ सौ रहे कमिनी, पीव की जो मनोगामिनी।
बोल बोले शु धोरे थमी, जानिए सो महालक्ष्मी॥ (भानु)

---

*यस्य भार्या शुचिर्दक्षा, भर्त्तारमनुगामिनी।
नित्यं मधुरवक्त्री च, सा रमा न रमा रमा।
ऊपर लिखे दोहे का भाव यह है।

पंक्ति जाति (१०२४)

दश वर्णों की जाति

संयुता

म ज जा ग शोभई संयुता।

(स ज ज ग)

सगण, दो जगण और एक गुरु से संयुता छन्द होता है। संयुता का ही अन्य नाम संयुक्ता है।

हनुमन्त लइहि लाइ के, पुनि पूंछ सिन्धु बुझाइ के,
शुभ देखि सीतहिं पाँ परे, मनि पाइ आनन्द जी भरे (केशवदास)

वामा

वामा त या भा गा से चमके।

(त य भ ग)

जिसमें तगण, यगण, भगण और एक गुरु हो उसे वामा कहते है।

दोनों दुखियों से प्रेम करे।
सेवा करने का नेम करे।
आवे दिन कष्टों से न डरे।
आते न कभी दो "हाय मरे" ॥ (मान)

चम्पकमाला

चम्पकमाला भा म स गा है।

(भ म स ग)

भगण, मगण, सगण और एक गुरु से चम्पकमाला छन्द होता है।

वृष्टि भली जैसे मरु देशा,
अन्न भलो जैसे कटुक्लेशा,
धर्म भली जैसे इन्द्र कीने।
दान भलौ ज्यों दे धन हीने॥ (साहित्यसागर)

इसी प्रकार :—

चाह नहीं तो वैभव फीका,
खेल नहीं तो शैशव फीका।
मान नहीं तो जीवन फीका,
रूप नहीं तो यौवन फीका॥ (सुधा देवी)

इसका अन्य नाम "रुक्मवती" है।

कीर्ति

म म मा ग बनै शुभ कीर्ति।

(म म म ग)

तीन मगण और एक गुरु से कीर्ति छन्द बनता है।

मनि सो गुनिये गुन शाखा,
मनि मांचहि भावन बाखा।
मनि है मकरांक भरों सो,
अकलंकित कीर्तिकिशोरी॥ (भानु)

(कीर्तिकिशोरी=राधा)

आहिर नन्द का पुत्र तू नहीं,
निखिल सृष्टि का सादि रूप है।
उदित है हुआ वृष्णि वंश में,
व्यथित विश्व के त्राण के लिए ॥ (श्रीधर पाठक)

दोधक

दोधक तीन भकार गुरु दो।
(भ भ भ ग ग)

दोधक छन्द में तीन भगण और दो गुरु होते हैं।

पाकर मानव देह धरा में,
पावन वृत्ति सजो जितनी है।
पुण्य विधान विहीन पशू जो,
होन न चाहत प्रेम करो सो ॥

किञ्च :—

राम गये जब से बन माहीं
राकस बैर करैं बहुधा ही
रामकुमार हमें नृप! दीजै,
तो परिपूरण यज्ञ करीजै। (केशव दास)

इसका अन्य नाम नीलस्वरूप है। इसे कई लोकबन्धु भी कहते हैं।

स्वागता

स्वागता र न भ दो गुरु जानो।
(र न भ ग ग)

स्वागता छन्द में रगण, नगण, भगण और दो गुरु होते हैं। इसका दूसरा नाम गंगाधर तथा सुपथ भी कहते हैं।

राज राज दशरत्थ तनै जू ।
रामचन्द्र भुव चन्द्र बनै जू ।
त्यों विदेह तुमहू अरु सीता ।
ज्यों चकोर तनया शुभ गीता ।

(रामचन्द्रिका)

अनुकूला

भा त न गा गा लव अनुकूला ।

(भ त न ग ग)

अनुकूला में भगण, तगण, नगण और दो गुरु होते हैं ।

अंगद रक्षा रघुपति कीन्हीं,
सोध न सीता जल थल लीन्हीं ।
आलस छांड़ो कृत उर आनौ,
कोहु कृतघ्नी जनि, सिख मानौ ॥

(रामचन्द्रिका)

रथोद्धता

रा न रा ल ग धनै रथोद्धता ।

(र न र ल ग)

रथोद्धता में रगण, नगण, रगण और लघु, गुरु होते हैं ॥

भारतीय जन ! वेद भारती,
ध्यान दे सुनहुँ यो पुकारती ।
दोषहीन सबला भला कहो ।
छोड़ दो शिथिलता सुखी रहो ॥

अहिर नन्द का पुत्र तू नहीं,
निकल सृष्टि का साक्षि रूप है।
उदित है हुआ वृष्णि वंश में,
व्यथित विश्व के त्राण के लिए॥ (श्रीधर पाठक)

दोधक

दोधक तीन भकार गुरु दो।
(भ भ भ ग ग)

दोधक छन्द में तीन भगण और दो गुरु होते हैं।

पाकर मानव देह धरा में,
पाशव वृत्ति तजो जितनी है।
पुच्छ विषाण विहीन पशू जो,
होन न चाहत प्रेम करो तो॥

किञ्च :—

राम गये जब से बन माहीं
राकस बैर करें बहुधा ही
रामकुमार हमें नृप! दीजै,
तो परिपूरण यज्ञ करीजै। (केशव दास)

इसका अन्य नाम नीलस्वरूप है। इसे कई लोकबन्धु भी कहते हैं।

स्वागता

स्वागता र न भ दो गुरु जानो।
(र न भ ग ग)

स्वागता छन्द में रगण, नगण, भगण और दो गुरु होते हैं। इसका दूसरा नाम गंगाधर तथा सुपथ भी कहते हैं।

उपेन्द्रवज्रा

उपेन्द्रवज्रा ज त ज ग गा से।

(ज त ज ग ग)

उपेन्द्रवज्रा में जगण, तगण, जगण और दो गुरु होते हैं।

अनेक ब्रह्मादि न अन्त पायो,
अनेकधा वेदन गीत गायो।
तिन्हैं न रामानुज बन्धु जानै,
सुनो सुधी केवल ब्रह्म मानै॥ (राम चन्द्रिका)

घृणी सकोपी उर संकधारी,
सदा असन्तुष्ट 'रु ईर्षकारी,
जिये पराये बल भाग्य भाये,
दुखी सदा ही षट् ये गिनाये॥ (बिहारीलाल भट्ट)

उपजाति

(१) ऊपर लिखे हुए इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्रा के पादों के संयोग से उपजाति छन्द बन जाता है। अर्थात् जिसका कोई पाद इन्द्रवज्रा का हो और कोई पाद उपेन्द्रवज्रा का हो, उसे उपजाति कहते हैं।

नोटः—यद्यपि उपजाति छन्द अर्धसम वृत्तों में आना चाहिये; क्योंकि इसके चारों पाद समान नहीं होते, तो भी इसे समवृत्तों में लिखा जाता है, क्योंकि इसमें समवृत्त पादों का ही संमिश्रण होता है।

(२) कई आचार्यों का मत है कि उपजाति में इन्द्रवज्रा या उपेन्द्रवज्रा के मेल का ही विशेष नियम नहीं; प्रत्युत किन्हीं दो छन्दों के संमिश्रण से जो पद्य बनता है, उसे भी उपजाति कह सकते हैं।

भुजङ्गी

य या या ल गा से भुजंगी रचो।

(य य य ल ग)

तीन यगण, एक लघु और एक गुरु से भुजंगी छन्द बनता है।

न माधुर्य का लेश भी पार है,
महामोद भागीरथी सी भरी।
करो स्नान आओ सभी शान्ति से,
मिले मुक्ति ऐसी, न पाते यती ॥

(श्यामाकान्त पाठक)

इन्द्रवज्रा

है इन्द्रवज्रा त त जा ग गा से।

(त त ज ग ग)

इन्द्रवज्रा में दो तगण, एक जगण और दो गुरु होते हैं।

संसार है एक अरण्य भारी,
हुए जहाँ हैं हम मार्गचारी।
जो कर्म रूपी न कुठार होगा।
तो कौन निष्कण्टक पार होगा ॥

इसी प्रकार:—

तू मंगला मंगलकारिणी है,
मदन के धामविहारिणी है,
माता ! सदा पूर्ण किया समेता,
कीजै हमारे चित में निकेता ॥

(रायदेवीप्रसाद पूर्ण)

उपेन्द्रवज्रा

उपेन्द्रवज्रा ज त जा ग गा से।

(ज त ज ग ग)

उपेन्द्रवज्रा में जगण, तगण, जगण और दो गुरु होते हैं।

अनेक ब्रह्मादि न अन्त पायो,
अनेकधा वेदन गीत गायो।
तिन्हें न रामानुज बन्धु जानै,
सुनो सुधी केवल ब्रह्म मानै॥ (राम चन्द्रिका)
घृणी चकोरी उर संकधारी,
सदा असन्तुष्ट 'ह ईर्षकारी,
छिये पराये बल भाग्य भावें,
दुखी सदा ही षट् ये गिनावें॥ (बिहारीलाल भट्ट)

उपजाति

(१) ऊपर लिखे हुए इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्रा के पादों के संयोग से उपजाति छन्द बन जाता है। अर्थात् जिसका कोई पाद इन्द्रवज्रा का हो और कोई पाद उपेन्द्रवज्रा का हो, उसे उपजाति कहते हैं।

नोट—यद्यपि उपजाति छन्द अर्धसम वृत्तों में आना चाहिये; क्योंकि इसके चारों पाद समान नहीं होते, तो भी इसे समवृत्तों में लिखा जाता है, क्योंकि इसमें समवृत्त पादों का ही संमिश्रण होता है।

(२) कई आचार्यों का मत है कि उपजाति में इन्द्रवज्रा या उपेन्द्रवज्रा के मेल का ही विशेष नियम नहीं; प्रत्युत किन्हीं दो छन्दों के संमिश्रण से जो छन्द बनता है, उसे भी उपजाति कह सकते हैं।

इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के मेल से १४ प्रकार की उपजाति
न सकती है :—

(१)
१ वसन्त में पुष्प ललाम ए है, (उपेन्द्रवज्रा)
२ वर्षाविहारी घनश्याम ए है। (इन्द्रवज्रा)
३ हेमंत का घाव तुषार ए है, (इन्द्रवज्रा)
४ संसार सत्ता भग सार ए है। (इन्द्रवज्रा)
(राय देवीप्रसाद पूर्ण)

(२)
१ सद्धर्म का मार्ग तुम्हीं बताते, (इन्द्रवज्रा)
२ तुम्हीं अर्घो से हम को बचाते। (इन्द्रवज्रा)
३ हे मन्य ! विद्वान तुम्हीं बनाते, (इन्द्रवज्रा)
४ हमें दुखों से तुम ही बचाते। (उपेन्द्रवज्रा)

(३)
१ अनेक विद्या पढ़ शास्त्र गाये,
२ अनेक कौशल्य कला दिखाये। } उपेन्द्रवज्रा
३ जो ज्ञान वेदान्त विचार धारे।
४ वे भी परे लोभ दुखी निहारे } इन्द्रवज्रा
(बिहारी लाल भट्ट)

(४)
१ परोपकारी बन वीर ! आओ (उपेन्द्रवज्रा)
२ नीचे पड़े भारत को उठाओ। (इन्द्रवज्रा)
३ हे मित्र ! त्यागो मद मोह माया, (इन्द्रवज्रा)
४ नहीं रहेगी यह नित्य काया॥ (उपेन्द्रवज्रा)
(राम नरेश त्रिपाठी)

तथा उपेन्द्रवज्रा के मेल के द्वा
प्रत्येक पाद का छन्द भी लिख दिया गया
से उपजाति के १४ भेद हो जाते हैं

(२) इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्रा से भिन्न अन्य दो छन्दों के मेल से भी उपजाति छन्द बनता है। जैसेः—

सूखे जरे बिरवा पुन हूँ, हरि जू के प्रताप सबै हरि कै है।
मालती चारु चमेली गुलाब की सौरभ फेरि समीर समै है॥
ते नलनी अरविन्द के वृन्द सरोवर-वारी में सोभा सजै है।
कीजै न सोच कछू अलि! बावरे, बीते दिना सुख के पुनि ऐ है॥
(श्रीधर पाठक)

भ्रमरविलसिता

मा भ न ला भ्रमरविलसिता।

(म भ न ल ग)

मगण, भगण, नगण और एक लघु और एक गुरु से भ्रमरविलसिता छन्द होता है।

यति—चतुर्थ अक्षर पर तथा पाद के अन्त में होती है।

तेरा मेरा सब सब सपना।
माया को तू समझ न अपना।
दो जा में हो भवनद तरना।
सो तू प्यारे हरि हर ररना॥ (मान)

सगन

सगना त्रि सकार ग गा होवे।

(स स स ग ग)

सगन छन्द में तीन सगण और दो गुरु होते हैं।

ससि सो गगनों कर है सोभा,
ससि जाहि मिटै मन को छोभा।
सुधि सनुत आय निहारौ री,
मनराजहिं आज रिझावौ री॥ (भानु)
(गगनों कर = आकाश की भी)

इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के मेल से १४ प्रकार की उपजाति बन सकती है :—

(१)
१ वसन्त में पुष्प ललाम तू है, (उपेन्द्रवज्रा)
२ वर्षाविहारी घनश्याम तू है। (इन्द्रवज्रा)
३ हेमंत का घोर तुषार तू है, (इन्द्रवज्रा)
४ संसार सच्चा धरु सार तू है। (इन्द्रवज्रा)
(राय देवीप्रसाद पूर्ण)

(२)
१ सद्धर्म का मार्ग तुम्हीं बताते, (इन्द्रवज्रा)
२ तुम्हीं अधर्मों से हम को बचाते। (इन्द्रवज्रा)
३ हे ग्रन्थ! विद्वान तुम्हीं बनाते, (इन्द्रवज्रा)
४ हमें दुखों से तुम ही बचाते। (उपेन्द्रवज्रा)

(३)
१ अनेक विद्या पढ़ शास्त्र गाये,
२ अनेक कौशल्य कला दिखाये। } उपेन्द्रवज्रा
३ जो ज्ञान वेदान्त विचार वारे।
४ वे भी परे लोभ दुखी निहारे } इन्द्रवज्रा
(बिहारी लाल भट्ट)

(४)
१ परोपकारी बन धीर! धाओ (उपेन्द्रवज्रा)
२ नीचे पड़े भारत को उठाओ। (इन्द्रवज्रा)
३ हे मित्र! त्यागो मद मोह माया, (इन्द्रवज्रा)
४ नहीं रहेगी यह नित्य काया॥ (उपेन्द्रवज्रा)
(राम नरेश त्रिपाठी)

ऊपर लिखे पद्यों में इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्रा के मेल के कुछ उदाहरण दिये हैं। साथ में प्रत्येक पाद का छन्द भी लिख दिया गया है। ऐसे भिन्न २ प्रकार के संमिश्रण से उपजाति के १४ भेद हो जाते हैं।

(२) इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्रा से भिन्न अन्य दो छन्दों के मेल से भी उपजाति छन्द बनता है। जैसे:—

सूखे जरे बिरवा पुन हूँ, हरि जू के प्रताप सबै हरि कै है।
मालती चारु चमेली गुलाब की सौरभ फेरि समीर समै है॥
ते नलनी अरविन्द के वृन्द सरोवर-वारी में सोभा सजै है।
कीजै न सोच कछू अलि! बावरे, बीते दिना सुख के पुनि ऐ है॥
(श्रीधर पाठक)

भ्रमरविलसिता

माभ न ल्गा भ्रमरविलसिता।
(म भ न ल ग)

मगण, भगण, नगण और एक लघु और एक गुरु से भ्रमरविलसिता छन्द होता है।

यति—चतुर्थ अक्षर पर तथा पाद के अन्त में होती है।

तेरा मेरा यह सब सपना।
माया को तू समझ न अपना।
हो जा में हो भवनद तरना।
सो तू प्यारे हरि हर ररना॥ (भानु)

गगन

गगना त्रि सकार ग गा होवे।
(स स स ग ग)

गगन छन्द में तीन सगण और दो गुरु होते हैं।

ससि सो गगनौं कर है सोभा,
छलि जादि मिटै मन की छोभा।
सुचि अद्भुत आय निहारौ री,
मजराजहिं आज रिझावौ री॥ (भानु)
(गगनौं कर = आकाश की भी)

चपला

है इन्त ता भ ज ल गा चपला।

(त भ ज ल ग)

चपला छन्द में तगण, भगण, जगण, लघु और गुरु होते हैं।

है भारतीय जनते ! उठ जा,
उद्यान देख अपना जग जा।
दुर्दान्त मत्त गज घात लगा,
हैं झूमते, उठ, न देर लगा॥ (सुधा देवी)

मोटनक

ता जा ज ल गा कहि मोटनका।

(त ज ज ल ग)

तगण, दो जगण, एक लघु और एक गुरु से मोटनक छन्द कहते हैं।

आये दशरथ बरात सजे।
दिग्पाल गयंदनि देखि लजे।
चारयो दल दूलह चारु बने,
मोहे सुर औरिनि कौन गने॥ (रामचन्द्रिका)

मोदक

मोदक चार भकार विराजत।

(भ भ भ भ)

चार भगणों से मोदक छन्द बनता है।

काहु कहूँ सर आसुर मारयो
आरत शब्द अकाश पुकारयो।
रावण के वह कान परयो जब,
छोड़ि सयंवर जात भयो तब॥

(रामचन्द्रिका)

स्त्रग्विणी

रा र रा रा बना स्त्रग्विणी छन्द है।

(र र र र)

चार रगणों से स्त्रग्विणी छन्द बनता है।

राम आगे चले मध्य सीता चली,
बन्धु पीछे भये सोभ सोभै भली।
देखि देही सबै कोटिधा कै मनो
जीव जीवेश के बीच माया मनो।

(रामचन्द्रिका)

भुजङ्गप्रयात

भुजङ्गप्रया। बना चार य गों।

(य य य य)

चार यगणों से भुजङ्गप्रयात छन्द बनता है।

निराकार [illegible] [illegible] नहीं है,
किसी भाँति का [illegible] [illegible] नहीं है।

इन्द्रवंशा

है इन्द्रवंशा त त ज र संयुता ।

(त त ज र)

दो तगणों, जगण और रगण से इन्द्रवंशा वृत्त होता है ।

ताता ! ज़रा था क्षण तू विचारि ही,
को मार को, दे सुख दुःख जीव ही ।
संग्राम भारी कर भानु यान सों,
रे इन्द्रवंशा ! लर कौरवान सों ॥ (भानु)

(इन्द्रवंशा-मंजुल)

यों ही, बड़ा हेतु बिना हुए कहीं
होते बड़े लोग कठोर यों नहीं ।
है हेतु भी यों रहते गुप्त है,
ज्यों वह्नि अम्भोनिधि में प्रसुप्त है ॥ (चन्द्रहास)

वंशस्थ

बने सुवंशस्थ ज ता ज रा गुरा ।

(ज त ज र)

जगण, तगण, जगण और रगण से वंशस्थ वृत्त बनता है ।

(१) [illegible] से, [illegible] से, [illegible] से,
[illegible] को भी, [illegible] [illegible] से ।

किस तपोबल से किस काल में,
सच बता मुरली कलनादिनी।
अवनि में तुझको इतनी मिली,
मधुरता, मृदुता, मनहारिता॥

(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

मोतियदाम

ज चार बने शुभ मोतियदाम।

(ज, ज, ज, ज)

प्रत्येक चरण में यदि चार जगण हों तो मोतियदाम छन्द होता इसका वास्तविक नाम "मौक्तिक दाई" है। हिन्दी के आचार्यों ने इसे मोतियदाम लिखा है। अतः यहाँ भी ऐसे ही लिखा गया है।

बढ़े जन की नहिं मांगन जोग,
फवै फलसाधन में लघु लोग।
रमापति विष्णु प्रसंग अनूप,
कियो इहि कारन बामन रूप॥

(देवीप्रसाद पूर्ण)

गयो मैंह राय यहाँ निज मात,
कहीं यह बात कि हैं बन जात।
कछू जनि जी दुख पावहु माइ,
सु देहु असीस मिलौं फिरि आइ॥

मालती

न ज ज र भावत मालती शुभा ।

(न ज ज र) ७, ५, यति

नगण, दो जगण, और रगण से मालती छन्द होता है ।
यति सातवें अक्षर पर तथा पादांत में होती है ।

अहह ! यही वह, धर्म-भूमि है,
अहह ! यही वह, कर्म-भूमि है ।
अब हम में वह, ज्ञान है कहाँ ?
अब हम में वह, ध्यान है कहाँ ? (मान)

इस छन्द का अन्य नाम—यमुना है ।

विलास

भा न य भ कृत विलासा भावत ।

(भ न य भ)

भगण नगण यगण और भगण से विलास छन्द होता है ।

जीवन सफल उसी का है बस,
दे पर हित अपना जो सर्वस ।
मान सहित मरना श्रेयस्कर,
मान रहित नर जीवे ज्यों खर । (मान)

जलोद्धत गति

जलोद्धत गती पढ़े ज स ज सा ।

(ज स ज स) ६, ६, यति

जिसमें जगण, सगण, जगण, सगण हों और छठे अक्षर तथा पादान्त में यति हो उसे जलोद्धत गति कहते हैं ।

पु साज सुपली हरीहिं सिर में,
पिता धसत मे निशीथ जल में,
प्रभू चरण को छुआ जमुन में,
जलोद्धत गति हरी छिनक में ॥ (भानु कवि)
(सुपली=टोकरी)

नभ

शुभ नभ सोये न य सा स किये।
(न य स स) ६, ६.

नगण, यगण और दो सगणों से नभ छन्द बनता है।
यति—छठे अक्षर तथा पादान्त में होती है। जैसेः—

नव ससि को दूज लखे नभ में,
तस शिव के भाल सुहावन में।
गुरु जनहू श्रादर जाहि दिये,
जड लखिये वक्र तऊ नमिये॥ (महाकवि भानु)
(नव=नमस्कार करते हैं। वक्र=टेढ़ा)

तरलनयन

न न न न भइ तरलनयन।
(न न न न)

चार नगणों से 'तरलनयन' छन्द होता है।

जननि जनक सुहृद नितहु,
करत रहत सहज हितहु।
श्रपर मनुज स्वप परस,

कुसुमविचित्रा

न य न य सोहै कुसुमविचित्रा
(न य न य)

कुसुमविचित्रा में नगण, यगण, नगण, यगण होते हैं।

नयन ! यही तें शुभ वसुनामा,
हरि हरि बोलो, दिन वसु यामा।
अनुज समेता, जनक दुलारी,
कुसुमविचित्रा जग सुखकारी॥ (भानु)

(वसु = आठ)

अब यानि भई सब को दुखिताई,
कहु केशव काहे पै मेट न जाई।
सिय संग लिए ऋषि की तिय आई,
इक राजकुमार महा दुखदाई॥ (रामचन्द्रिका)

धरमादि पदारथ चार गिनाए,
यह चारहुँ जीवहि हेत बनाये।
जिन्ह चाहि हन्यो तिन्ह का नहिं हायो,
जिन्ह चाहि बचाव सु का न बचायो॥ (साहित्यसागर)

कलहंस

स ज सा स गा सु कलहंस विराजे।

(स ज स स ग)

सगण, जगण, दो सगण और एक गुरु से कलहंस छन्द बनता है।

पर हेतु जीव धन वारहिं जोई,
अति ज्ञान वान जग में नर सोई॥
यह है अनित्य अस चित्तहि जोई।
नर स्वार्थ माहिं अगवै भल सोई॥ (बिहारीलाल भट्ट)

एकावली

है भ न ज ज ल एकावली सुन्दर।

(भ न ज ज ल)

एकावली में क्रम से भगण, नगण, जगण, जगण और एक लघु होते हैं।

राज बढ़े, बढ़ साज बढ़े पुर।
नाम बढ़े बढ़ धाम बढ़े गुर।
मूढ़ सी मूढ़हिं बाँधत हो मन,
छोड़त हो नृप सत्य सनातन॥ (रामचन्द्रिका)

अतिजगती जाति (८१९२ भेद)

तेरह अक्षरों की जाति।

माया

मा ता या सा गा गुरु माया मन देनो।

(म त य स ग) ४, ९.

माया में मगण, तगण, यगण, सगण और एक गुरु होता है।

देखो देखो चारु नचाई तितली रे,
पोषो पोषो पाप-कमाई मन मेरे।
त्यागो त्यागो काम-मिठाई रस-सानी,
गाओ गाओ कीर्ति-कलापा मृदु-बानी॥

इस छन्द का अन्य नाम मत्तमयूर भी है।

तारक

स स सा स ग जानत तारक छन्दा।

(स स स स ग)

चार सगणों तथा एक गुरु से तारक छन्द बनता है।

अब ग्लानि भई सब को दुखिताई,
कहु केशव काहे पै मेट न जाई।
सिय संग लिए ऋषि को तिय धाई,
इक राजकुमार महा दुखदाई॥ (रामचन्द्रिका)
धरमादि पदारथ चार गिनाए,
यह चारहुँ ओषहि हेत बनाये।
जिन्ह पाहि हन्यो तिन्ह का नहिं हायो,
जिन्ह याहिं बचाव सु पा न बचायो॥ (साहित्यसागर)

कलहंस

स ज सा स गा सु कलहंस विराजे।
(स ज स स ग)
सगण, जगण, दो सगण और एक गुरु से कलहंस छन्द बनता है।
पर हेतु जीव धन पारहिं जोई,
अति ज्ञान धान जग में नर सोई॥
यह है अनित्य अस चित्तहिं जोई।
सर स्वार्थ माहिं लगवै मत सोई॥ (विहारीलाल भट्ट)

एकावली

है भ न ज ज ल एकावली सुन्दर।
(भ न ज ज ल)
एकावली में क्रम से भगण, नगण, जगण, जगण और एक लघु होते हैं।
राज बढ़े, बढ़ साज बढ़े पुर।
नाम बढ़े बढ़ धाम बढ़े गुरु।
मूढ़ सी मूरहिं बाँधत हो मन,
छोरत हो नृप सत्य सनातन॥ (रामचन्द्रिका)

चण्डी

न न स स ग करत हे नर! चण्डी

(न न स स ग)

दो नगणों, दो सगणों तथा एक गुरु से चण्डी छंद बनता है

जय जग-जननि ! हिमालय कन्या !
जयति जयति जय शक्ति ! सुधन्या ॥
कलुष कुमति मद मत्सर खण्डो,
जयति जयति जय तारिणि चण्डो ॥ (भिखारीदास)

रमाविलास

चार हों रेफ पुनः इको गा रमा में ।

(र र र र ग)

इस छन्द को रामा भी कहते हैं। इसमें चार रगण और एक गुरु होता है।

अम्बिके ! अन्नपूर्णे ! उमे ! कालिका हे ।
दुष्टकी घालिका, सृष्टिकी पालिका हे !
चण्डिके ! शैलजे ! देवि ! दुर्गे ! भवानी !
"मान" के मान को रख हे शम्भु रानी ! (मान)

शक्वरी जाति (१६३८४ भेद)

चौदह अक्षरों की जाति

वासन्ती

मा ता ना मा गा गा भनत शुभ्रा वासन्ती।

(म त न म ग ग) ६, ८.

वासन्ती छन्द में मगण, तगण, नगण, मगण और दो गुरु होते हैं।
यति—छठे अक्षर पर तथा पादान्त में होती है।

नोट:—वृत्तरत्नाकर नामी संस्कृत के छन्दोग्रन्थ में इसका लक्षण "म त न म ग ग" किया है और यति की व्यवस्था भी कोई नहीं की।

माता ! नौ में गंग, चरण तोरे, त्रैकाला,
नासौं येगी दुःख, विपुल औरो जंजाला।
जाके तीरा राम, पहिर भूजां की छाला,
भू-कन्या को देत; सुमन वासन्ती माला॥

(महाकवि भानु)

इसके अन्य नाम हैं—सिंहोन्नता, उद्धर्षिणी, आदि।

भू में रमी शरद की कमनीयता थी,
नीला अनन्त नभ निर्मल हो गया था,
थी छा गई ककुभ में अमिता सिताभा।
उत्फुल्ल सी प्रकृति थी प्रतिभात होती॥ (हरिऔध)

श्री रामचन्द्र यह सन्तत शुद्ध सीता,
ब्रह्मादि देव सब गावत शुभ्र गीता।
हूजै कृपाल, गहिजै जनकात्मजाया,
योगीश ईश तुम हौ यह योगमाया॥ (महाकवि केशव)

ये मांस मूत्र मल का थल है शरीरा,
ऐसा विचार जस में, जग होहि मीरा।
संसार मध्य जस ये जिहि हाथ आया,
है सत्य फेर उसने कहु क्या न पाया॥ (बिहारीलाल भट्ट)

मुकुन्द

ता भा ज जा ग ल भजो सुखदा मुकुन्द।
(त भ ज ज ग ल)

मुकुन्द छंद में तगण, भगण, दो जगण और एक एक गुरु तथा लघु होते हैं।

इसका अन्य नाम हरिलीला है।

फूली लवंग लवली लतिका विलोल,
फूले जहाँ भ्रमर-विभ्रम मत्त बोल।
बोलें सुहंस शुक कोकिल केलिराज,
मानों बसन्त भट बोलत युद्ध काज॥ (रामचन्द्रिका)

अनन्द

ज रा ज रा ल गा सु छंद है अनन्द रे।

(ज र ज र ल ग)

अनन्द में जगण, रगण, जगण, रगण लघु और गुरु होते हैं।

विहंग कोस सौहु ते जु दृष्टि देत है,
उतेक दूर सों सुभक्ष देख लेत है।
सुई कुजोग पाय समै के प्रभाव से
लखै न जाल बंध परै फंद आय के॥ (साहित्यसागर)

जरा जरा लगाय चित्त मित्त नित्त हीं,
सियापती भजौ अजौ विचार हित्त हीं।
मनै लगा सदा गुणानुवाद गाइये,
सदा लहौ अनन्द राम धाम पाइये॥ (महाकवि भानु)

प्रहरणकलिका

न न भ न ल ग है प्रहरणकलिका।

भ्रमरावली

भ्रमरावलि [illegible] स स स स स मिले।

(स स स स स)

पाँच सगणों के मेल से भ्रमरावली छन्द होता है।
इसके अन्य नाम हैं :—"नलिन, मनहरण"।

[illegible] रघुनन्दन की वन्दना,
कलि के [illegible] की [illegible]।
जिन के मुख से [illegible] रही इतहूँ।
उर में नलिनी विकसी जनु भौंर [illegible] ॥ (महाकवि प्रभु)

मालिनी

न न म य य गणों से सोहती मालिनी है।

(न न म य य) ८, ७.

दो नगण, मगण, और दो यगणों से मालिनी छन्द बनता है।

यति—आठवें अक्षर पर और पादान्त में होती है।

सहकर कितने ही, कष्ट और संकटों को,
बहु यतन करा के, पूज के निर्जरों को।
यह सुअन मिला है, जो मुझे यत्न द्वारा
प्रियतम ! वह मेरा कृष्ण प्यारा कहाँ है ॥

(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

द्वितीयः—

सहृदय जन के जो, कण्ठ का हार होता,
मुदित मधुकरी का, जीवनाधार होता।
वह कुसुम रँगीला, धूल में जा पड़ा है,
नियति ! नियम तेरा भी बड़ा ही कड़ा है ॥

(रूपनारायण पाण्डेय)

सीता

रा त मा या रा बनाओ छन्द सीता मोहना ।

(र त म य र)

रगण, तगण, मगण, यगण और रगणों से सीता छन्द होता है ।

रे तू माया रंचहू जानी न सीता राम की,
हाय ! क्यों भूलो फिरै ना सीख मेरी कान की ।
अन्त बीता जात, मीता अन्त रीता बावरे,
राम सीता राम सीता राम सीता गाव रे ॥

(भानु कवि)

मनहंस

म ज जा भ रा मनहंस छंद सुहावना ।

(स ज ज भ र)

सगण, जगण, जगण, भगण, और रगण से मनहंस छन्द बनता । इसके अन्य नाम हैं:—मानहंस, रणहंस और मानसहंस ।

निज द्वार पै यदि आय अतिथि शत्रु हू,
सममान दीजिय ताहि तामस तज हू ।
जब कृष्णचन्द्र नृप के ढिग आवहीं,
बर   दीह आपनि दावहीं ॥

(बिहारीलाल भट्ट)

अष्टि जाति (५६५३६ भेद)

सोलह अक्षरों के छन्दों वाली जाति।

चञ्चला

र ज र ज र ल देख चञ्चला महा सुहात।

(र ज र ज र ल)

रगण, जगण, रगण, जगण, रगण और एक लघु से चञ्चला छंद बनता है।

जो मनुष्य जीव मार, खात मांस आदि फेर,
देखिये सुजांच के दुहूंन में इतेक फेर।
एक को निमेष मात्र स्वाद का सुमान होत,
दूसरो गरीब दीन जान से बिजान होत॥ (साहित्यसागर)
रामचन्द्र धाम ते चले सुने जबै नृपाल,
बात को कहै सुनै सु ह्वै गये महा विहाल।
ब्रह्मरन्ध्र फोरि जीव जो मिल्यो जु लोक जाय,
गेह चूरि ज्यों चकोर चन्द में मिलै उड़ाय॥ (रामचन्द्रिका)

पञ्चचामर

ज रा ज रा ज गा कहैं फणींद्र पंचचामरम् ।

(ज र ज र ज ग)

पंचचामर छन्द में क्रम से जगण, रगण, जगण, रगण, जगण और एक गुरु होता है।

महेश के महत्त्व का, विवेक बार बार हो,
अखण्ड एक तत्त्व का, अनेकधा विचार हो।
बिगाड़ के समाज के प्रबन्ध का सुधार हो,
प्रवीण पंच राज के प्रपञ्च का प्रचार हो॥

(नाथूराम शर्मा शंकर)

विशेष—यह प्रमाणिका छन्द को दुगुना कर देने से ही बन जाता है। इसे नराच या नागराज भी कहते हैं।

अत्यष्टि (१३०७२ भेद)

सत्रह अक्षरों की जाति

मन्दाक्रान्ता

मन्दाक्रान्ता म भ न त त गा गा बनाये सदा ही।

(म भ न त त ग ग) ४, ६, ७.

यति—प्रत्येक चरण में ४, ६, ७ पर।

मन्दाक्रान्ता छन्द में मगण, भगण, नगण, दो तगण और दो गुरु होते हैं।

फूली डालें सुकुसुममयी नीप की देख आँखें,
आ जाती है मुरलिधर की मोहनी मूर्ति आगे।
कालिन्दी के पुलिन पर था, देख नीलाम्बुधारा,
हो जाती है, उदय उर में, माधुरी अम्बुदों की॥
जो दो प्यारे हृदय मिलके एक ही हो गये हैं,
क्यों धाता ने विलग उनके गात को यों किया है।
कैसे आगे कुल-गिरि पड़े बीच में हैं उन्हीं के,
जो दो प्रेमी मिलित, पय औ, नीर लौं नित्यशः थे॥

(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

शिखरिणी

रसाला मो भाये य म न स भ ला गा शिखरिणी ।

(य म न स भ ल ग) ६, ११.

शिखरिणी छंद में क्रमशः यगण, मगण, नगण, सगण, भगण और एक लघु और एक गुरु होते हैं।

यति—छठे अक्षर पर तथा पादान्त (१०) में होती है।

छटा कैसी प्यारी, प्रकृति तिय के चन्द्र मुख की,
नया नीला ओढ़े, वसन चटकीला गगन का ।
जरीसल्माह्मपी, जिस पर सितारे सब जड़े,
गले में स्वर्गङ्गा, अति लजित मालासम पड़ी ॥

(श्री सत्यशरण रतूड़ी)

पृथ्वी

ज सा ज स य ला ग हैं ललित छंद पृथ्वी भला ।

(ज स ज स य ल ग) ८, ९.

जिसके प्रत्येक पाद में क्रमशः जगण, सगण, जगण, सगण, यगण एक लघु और एक गुरु हो, वहाँ पृथ्वी छंद होता है।

यति—आठवें अक्षर पर तथा पादान्त में होती है।

अनन्त कविराज जू वचन एक मेरो सुनो
अनन्त सब भान्ति भूतल सुरेश की मैं गुनो ।
सनीर सरवरद अलिकन सपद्म होता घरे
तहाँ हम निवास की विमल पर्णशाला करें ।

(रामचन्द्रिका)

रूपकान्त

ज रा ज रा ज गा ल को सदा कहैं सु रूपकान्त।

(ज र ज र ज ग ल)

रूपकान्त छंद में क्रमशः जगण, रगण, जगण, रगण, जग
एक गुरु और एक लघु होता है।

इस छंद को भाजचंद भी कहा गया है।

अशेष पुण्य पाप के कलाप आपने बहाय।
विदेह राज ज्यों सदेह भक्त राम को कहाय।
लहै सुभुक्ति लोक लोक अन्त मुक्ति होहि ताहि।
कहै सुनै पढ़ै गुनै जु रामचन्द्रचन्द्रिका हि॥

(रामचन्द्रिका)

धृति जाति (२६२१४४ भेद)

अठारह अक्षरों की जाति

चंचरी

चचरी र स जा ज भा र सुधीन्द्र गर्व मन्त्र वहै।

(र स ज ज भ र) ८, १०.

चंचरी छन्द में रगण, सगण, जगण, जगण, भगण और रगण क्रमशः होते हैं।

यति—आठवें अक्षर पर तथा पादान्त में होती है।

दुष्ट संग जु मित्रता कर शत्रुता कछु कीजिए,
ठौड़ में जहाँ शोक होवहि तित्त में दह दीजिए,
कालि बैर अपार छोड़िय हाथ, हाथ उराव हो,
मोह मोहक होइ के वर कालिका हि लगाव हो

(बिहारी लाल भट्ट)

इसे चंचरी तथा विबुधप्रिया भी कहते हैं।

मणिमाल

स ज जा भ रा स ल देख लो, कह दो उसे मणिमाल।

(स ज ज भ र स ल) १२, ७.

जहाँ क्रम से सगण, दो जगण, भगण, रगण, सगण और १ लघु हो उस छन्द को मणिमाल कहते हैं।

यति—बारहवें अक्षर पर तथा पादान्त में होती है।

> सजि जो भरी सु लखात सुन्दर, हीय में मणिमाल,
> तिमि धारि कै करुणा करौ नृप, दीन को प्रतिपाल।
> पुनि जानि धर्महिं सन्त सेवहिं, ध्याइये सिय राम,
> जग में सुकीर्ति अपार पावहु, अन्त में हरिधाम॥

(भानु)

रसाल

भा न ज भ ज ज ल होत सुन्दर रसाल मनोरम।

(भ न ज भ ज ज ल) ९, १०.

भगण, नगण, जगण, भगण, दो जगण और एक लघु हो से रसाल छन्द बनता है।

यति—नौवें अक्षर पर तथा पादान्त में होती है।

जैसेः—

> मोहन मदन गुपाल, राम विभु शोकविदारन,
> सोहन परम कृपाल, दीन जन आप उधारन।
> प्रीतम सुजन दयाल, केशि बक-दानव मारन,
> पूरण करुण सुजान, दीन दु [illegible] द टारन॥

(गदाधर)

कृति जाति (१०४८५७६ भेद)

बीस अक्षरों की जाति।

वृत्तिका

वृत्तिका र जा र जा र जा ग ला बने कवीन्द्र कमनीय।

(र ज र ज र ज ग ल)

वृत्तिका में रगण, जगण की तीन आवृत्तियाँ तथा एक गुरु और एक लघु होता है।

यति—सातवें तथा पन्द्रहवें अक्षरों पर होती है।

अन्य नाम—स्त्वका, दण्डिका, गंडका और वृत्त हैं।

हार के अपार भार भार की सुधार के गिरीन्द्र पान,
ग्वाल बाल बानकें, अधीन हाल टालके, सुरेन्द्र मान।
केशि कंस कन्दना, कृपाल दीन बन्दना, हरी सु दोल,
गोप गाय पाल जू! दयालु नन्द लाल जु! सुदेह मोख॥

(हरदेव)

अहि

भगण छ अरु एक मगण कहो तब छन्द 'अही' रच्यो।

(६ भगण, मगण) १२, ६.

अहि छन्द में छै भगण और एक मगण होता है।
यति—बारहवें अक्षर तथा पादान्त में होती है।

भोर समै हरि गेन्द जु खेलत, संग सखा यमुना तीरा।
गेन्द गिरी यमुना दह में झट कूद परे धरि कै धीरा।
ग्वाल पुकार करी तब रोवत, नन्द यशोमति हूँ धाये,
दाउ रहे समुझाय इतै अहि, नाथि उतै दह तें आये॥

(भानु कवि)

मनविश्राम

पाँच भकार तथा न य हों जब, बोलत मनविसरामा।

(५ भगण, न, य) १२, ६.

मनविश्राम छन्द में पाँच भगण और नगण, यगण होते हैं।
यति—ग्यारहवें अक्षर पर तथा पादान्त में होती है।

मञ्जु लतानि वितान तरे घन, राजत रुचिर अखारे,
कान्ह कृपा सब काम दहै, तरु, हेरत सुर तरु हारे।
सिद्ध वधू-अंगराग सुगन्धित, सोहत सुर सर न्यारे,
मन्दिर मेरुहि आदि महागिरि, गोबरधन पर वारे॥

(समनेस)

आकृति जाति (४१६४३०४ भेद)

बाईस अक्षरों की जाति।

विशेष—बाईस से लेकर २६ अक्षरों तक के छन्दों को सवैया भी कहते हैं। अतः जो नीचे लिखे जाते हैं वे सवैया के ही भेद हैं।

हंसी

मा मा ता ना ना ना ना गा घुधयर कथन धरत यह हँसी।

(म म त न न न स ग)

हंसी छन्द में क्रमशः दो मगण, तगण, तीन नगण, सगण और गुरु होते हैं।

यति—८ और १४ पर होती है।

मैं को तो का माया मोहे, अजहुँ भुगुते नहिं भ्रम हरि भजना,
जो पा ले का छूटे धावै कबहुँ न भूल छाड़ सुजन निकन्दा।
क्यों कामी चाहै चन्दा, अवरम परम करहि अबनसी,
जो कंजा माहे हंसा, अबहुँ अजुधि पद दिय कर हंसी॥ (भानु)

*मैं को तो का माया मोहे का अर्थ है—मैं, मेरा, तेरा आदि माया मोह।

मन्दारमाला

है सात ता एक गा वृत्त 'मन्दारमाला' उसे गाइये ध्यान से।

(७ तगण, ग)

सात तगणों तथा एक गुरु से मन्दारमाला छन्द बनता है।

यति—दसम अक्षर पर तथा पादान्त में होती है।

रे लोक गोविन्द गावै नरा! छोड़ जंजाल सारे भजे नेम सों,
श्री कृष्ण गोविन्द गोपाल माधो, मुरारी जगन्नाथ ही प्रेम सों।
मेरो कह्यो मान ले मीत! रे, जन्म जावै वृथा आपको तार ले,
तेरो फवैं कामना होय की, नाम मन्दारमाला हिये धार ले॥

(भानु)

मदिरा

सात भकार गुरु इक हो जब, पिंगल भाखत तो 'मदिरा'

(७ भगण, ग)

सात भगण तथा एक गुरु से मदिरा छन्द बनता है। जैसे:—

तोरि सरासन शंकर को, शुभ सीय स्वयम्बर मांझ वरी।
तासु भयो अभिमान महा, मन मेरी यो नेक न शंक करी।
सो अपराध परो हम सों, अब क्यों सुधरै तुमहूँ धौं कहो,
बाहु दै दोउ कुठारहिं केशव, आपने धाम को पन्थ गहो॥

(महाकवि केशव

मोद

पांच भकार, मकार, सकार, गुरु इक बोले पिंगल 'मोदा'।

(४ भगण, मगण, सगण, ग)

गोकुल नायक, जै सुखदायक, गोविंद, गोपी प्रान अधारा,
कंस विहंडन, जै अघखण्डन; जै जै तू स्वामी ! करतारा।
श्याम सरोरुह लोचन ! सुन्दर ! माधव ! सोभा धाम अपारा,
श्री पति ! जादव वंश विभूषण ! दानौ दारन ! देव उदारा ॥

(भिखारी दास)

सुरेन्द्रवज्रा

ता ता ज ता रा भ र गा सु शोभे सुरेन्द्रवज्रा कवि चित्त छुप्या।

(त त ज त र भ र ग) ११, ११.

सुरेन्द्रवज्रा में तगण, तगण, जगण, तगण, रगण, भगण, रगण और गुरु होते हैं।

यति—ग्यारहवें अक्षर पर तथा पादान्त में होती है।

आसावरी मालिर कुम्भ सोभै, अशोकलग्ना वनदेवता सी,
पलाशमाला कुसुमालि मध्ये वसन्त लक्ष्मी शुभ लक्षणा सी।
आरक्तपत्रा शुभि चित्र पुत्री, मानो विराजै अति चारु वेषा,
सम्पूर्ण सिन्दूर प्रभा सुमण्डी, गणेश-भाल-स्थल-चन्द्र-रेखा ॥

विकृति जाति (८३८८६०८ भेद)

तेईस अक्षरों की जाति

वागीश्वरी

य या या य या या य ला गा लखानो मनोहारी 'वागीश्वरी'
छन्द को।

वागीश्वरी छन्द में सात यगण, लघु और गुरु होते हैं। जैसेः—

दिनों रात सोवै दिये चिन्त्य होवै विसै थोथ राखै सदा ध्यान है।
थकी मिर्च खावै व मूली चबावै सुकत्था हि खावै बिना पान है।
दवा व्यर्थ खाकै, करै केलि जाकै, पियै पानि आकै तजै थान है।
ससै भात थानौ सबै भोग ठानौ, तु जानौ बड़ी शक्ति की हानि है॥

(साहित्यसागर)

सुमुखी

ज जा ज ज जा ज ज और मिले इक एक लघू गुरु सो 'सुमुखी'।

(७ ज, ल, ग)

सात जगणों और अन्त में लघु तथा गुरु से सुमुखी छंद बनता है।

अन्य नाम—इसे मल्लिका और मानिनी भी कहते हैं :—

हिये बनमाल रसाल धरे सिर मोर किरीट महा लसिबौ,
कसे कटि पीत परो लकुटी कर आनन पै मुरली बसिबौ ।
कलिन्दजी तीर खड़े बलवीर सुवालन को गहि बाँह सबौ,
सदा हमरे हिय मन्दिर में यहि वानिन्द सों करिये बसबौ ॥

(हरदेव)

मत्तगयन्द

सात भगण मिला गुरु दो रच लो तुम 'मत्तगयन्द' सवैया ।

(७ भ, ग, ग)

मत्तगयन्द में सात भगण और दो गुरु होते हैं ।

अन्य नाम—इसे मालती तथा इन्दव भी कहते हैं । जैसे —

हो रहते तुम आप जहाँ, रहता मन साथ सदैव वहीं है,
मंजुल मूर्त्ति बसी उर में, वह नेक कभी टलती न कहीं है ।
लोलुप लोचन को दिखती, वह चारु घटा सब काल यहीं है,
है वह योग मिला हमको, जिसमें दुख-मूल वियोग नहीं है ॥

(गोपाल शरण सिंह)

बैठ कहूँ नर ते न खिझै, मुख डोरहु माहिं, न हाथ फिरावै,
चीम चबा, नहिं पाँव हिलाय, न दंत बजाय, न नख बढ़ावै ।
भोजन भोग लगाये बिना न करै, नहिं काहि दै औरहि खावै,
कौतुक जे कबहूँ न करै, इन कौतुक ते घर राउ बसावै ॥

(सर्वहितकारक)

चकोर

सात भकार ग ला जब होत चकोर सुधाकर हेत सुहात।

(७ भ, ग, ल)

सात भगणों के अनन्तर यदि गुरु और लघु हों तो चकोर छन्द होता है। जैसे:—

मायक आय समीप लगो, तब नारि के प्रान बचावन काज,
पादर दूत बनायन को, कुसलात संदेस पठावन काज।
फूटत ! फूल नये कर लै, मन कल्पित सर्व बनावन काज।
बोल उठो हँसति सुख ह्वै यद मेघ ते प्रीति बढ़ावन काज॥

(लछमणसिंह)

प्रथम पाद में "के" और चतुर्थपाद में 'सु + ख' लघु हैं।

शैलसुता

नगण अनन्तर हों जगण षट अंत लघू गुरु शैलसुता।

(न, ६ जगण, ल, ग)

जहाँ नगण के अनन्तर ६ जगण तथा लघु, गुरु हों उसे शैलसुता कहते हैं।

अयि जगदम्ब ! कदम्ब वन प्रिय वासनिवासिनि ! हास रते !
शिखिरि-शिरोमणि तुङ्ग हिमालय शृङ्ग निजालयमध्य गते !
मधुमधुरे ! मधु कैटभभंजिनि ! कैटभ गंजनि ! रासरते !
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि, रम्यकपर्दिनि ! शैलसुते॥

(रामकृष्ण कवि)

दुर्मिल

सगण जब आठ रहैं तब तो कवि दुर्लभ 'दुर्मिल-चंद्रकला'।

(८ सगण)

आठ सगणों से दुर्मिल सवैया बनता है। इसका अन्य नाम 'चन्द्रकला' भी है। जैसे:—

इसके अनुरूप कहें किसको,
वह कौन सुदेश समुन्नत है।
समझें सुरलोक समान इसे,
उनका अनुमान असंगत है।
कवि कोविद वृन्द बखान रहे,
सब का अनुभूत यही मत है।

उपमान विहीन रचा विधि ने,
बस भारत के सम भारत है।

(नाथूराम शर्मा 'शंकर'

किञ्च:—

महिमा दमके लघुता न लखे,
जड़ता जकड़े न चराचर को।
शठता सटके मुदिता मटके,
प्रतिभा भटके न समादर को।
विकसे कमला शुभ कर्म कला,
पकड़े कमला श्रम के कर को।
दिन फेर पिता! वर दे सविता,
करदे कविता कवि "शंकर" को॥

(शंकर)

अतिकृति जाति (३३५५४४३२ भेद)

पच्चीस अक्षरों की जाति।

सुन्दरी

सगणा जब आठ मिला उसमें गुरु, 'सुन्दरी' सुन्दर छन्द बने तो।

(८ सगण, ग)

आठ सगणों तथा गुरु से सुन्दरी छन्द बनता है। जैसे :—

जग में नर जेति कमाइ करै,
तिहि केर दशांश सुधर्म में आने।
धर ब्रह्म मुहूरत में उठि के,
हरि नाम जपै परलोक के काने।
महिमान को आदर मान करै,
अरु भिक्षुक को कछु दै सनमाने।
इतनी सब बात 'बिहार' भने,
करबे को कहीं है गिरहस्त के ठाने॥

(बिहारी लाल भट्ट)

दण्डक-प्रकरण

छब्बीस अक्षरों से अधिक अक्षर यदि किसी पद्य के एक पाद में हों तो उसे दण्डक कहते हैं।

यह दण्डक संज्ञा इस लिए है कि इन पद्यों को यदि लिखा जाय तो लम्बे दण्ड के समान दीखते हैं।

दण्डक दो प्रकार के हैं :—

१ साधारण दण्डक

२ मुक्तक दण्डक

१ साधारण दण्डक :—इनमें वर्णवृत्तों के समान नियमित गणव्यवस्था होती है और अक्षर २६ से अधिक होते हैं।

२ मुक्तक दण्डक :—इनमें गणव्यवस्था नियमित नहीं होती, केवल कहीं कहीं गुरु-लघु का नियम होता है। २६ से अधिक अक्षर

साधारण दण्डकों के भेद

चण्डवृष्टिप्रपात

नगण युगल और रा सात हों चण्डवृष्टिप्रपात
बने शोभना दण्डका।
(२ न, ७ र)

चण्डवृष्टिप्रपात में २ नगण और ७ रगण क्रमशः होते हैं।

भजहु सतत रामसीता महामन्त्र,
जासों महाकष्ट तेरे नसै मूल तें।
तजहु असत काम जो चहो आपनो,
त्राण या दुष्ट भौजाल की शूल तें।
सुनहु मरम नाम को तार दीन्हे महा—
पातकी, एकदा हू जवै राम सों।
लहहु परम धाम को चाहि जोगी जती,
कष्ट साधे लहे हैं बड़े भाग सों॥

(भानु कवि)

मत्तमातङ्ग लीलाकर

रा जभी नौ लसैं तो कहैं छन्द विज्ञानवेत्ता
इसे मत्तमत्ताङ्ग लीलाकरम्।

मत्त मत्ताङ्ग लीलाकार में (९ रगण) नौ रगण होते हैं। कई बार इसमें ६ से अधिक भी रगण होते हैं। फिर भी इसका यही नाम रहता है।

योग जाना नहीं, जप दाना नहीं, वेद माना नहीं,
ना कभी मोहिं गीता ! कहूँ ।
ब्रह्मचारी नहीं, दण्डधारी नहीं, कर्मकारी नहीं,
है कहीं आगमैं तो कहूँ ।
सच्चिदानन्द आनन्द के कन्द को छोड़ि के,
रे मतिमन्द ! भूलो फिरो ना कहूँ ।
याहि तें हौं कहूँ ध्याय के जानकी-
नाह को, गावहीं जाहि सानन्द वेदा चहूँ ॥

(भानु कवि)

कुसुमस्तवक

सगण जब नौ तब दण्डक हो
'कुसुमस्तवक' प्रिय जो शशिशेखर को ।

(९ सगण)

कुसुमस्तवक दण्डक में नौ सगण होते हैं ।

जगदम्ब ज़रा करुणा कर दो,
नियती पर-पीड़ित दीन दुखी हम ।
हममें भर दो दुख-दारिद-दारिणी,
शक्ति महेश्वरि हे, हम बेदम हैं ।
मन मन्दिर में विकसे विमला मति,
धीर बने हम वीर शिरोमणि हों ।
यह भारत भारत भारत हो,
इसमें फिर वे रण-शूर-शिरोमणि हों ।

(सुधा देवी

सिंहविक्रीड

जहाँ नौ 'य' हों छन्द शास्त्रार्थ वेदी तहाँ
सिंहविक्रीड भाखें महा-शेमुषी को।

(६ यगण)

नौ यगणों से सिंहविक्रीड दण्डक बनता है। जैसे :—

नहीं शोक मोहीं पिता मृत्यु केरै
लिये पुत्र प्यारो किये यश केती पुनीता।
नहीं शोक मोहीं लखी जन्मभूमि रमानाथ—
केरी अयोध्या भई जो अभीता।
नहीं शोक मोहीं कियो जोउ माता
भलेहू कहैं मोहीं मूढ़ा सुबुद्धीरू मीता।
अरै नित्य छाती गहै एक शोका, बिना—
पादत्राणा उदासी फिरै राम-सीता॥

(भानु कवि)

त्रिभंगी

इसमें ६ नगण, २ सगण और भगण, मगण, सगण और एक गुरु होता है।

(६ न, २ स, भ म स ग)

कबहुक विरहीन कबहुक मनहर,
बन बन होवें दिमानं रस सानें प्रेम सुखाने।
यहि विधि नित नव पुलन पुरम रच
निकट प्रिया तुम आने मन मानें मञ्जु ठानें।

भरी कर छिन भ मधुर कछु सन्मुख,
हरनन प्यास तुम्हारी बलिहारी कुञ्जबिहारी।
निसि दिन धारन रहत कव मिलिये
प्रिय वृषभानु दुलारी सुकुमारी राधे प्यारी॥
(साहित्यसागर)

मुक्तक दण्डकों के भेद

१ घनाक्षरी—इसमें ३१ अक्षर होते हैं। १६, १५ पर यति होती है। अन्तिम वर्ण गुरु होता है। जैसे :—

सच्चे हो पुजारी तुम प्यारे प्रेम मन्दिर के,
उचित नहीं है तुम्हें दुःख से कराहना।
करना पड़े जो आत्मत्याग अनुराग वश,
तो तुम सहर्ष निज भाग्य को सराहना।
प्रीति का लगाना कुछ कठिन नहीं है सखे,
किन्तु है कठिन निज नेह का निबाहना।
चाहना जिसे है तुम्हें चाहिये सदैव उसे,
तन मन प्राण से प्रमोदयुत चाहना॥
(गोपाल शरण सिंह)

अन्य नाम—मनहरण या कवित्त।

२. रूप घनाचरी—प्रतिपाद में ३२ अक्षर होते हैं। ८,८,८,८, पर यति होती है। अन्तिम दो अक्षर गुरु तथा लघु होते हैं। जैसे:—

नगर से दूर कुछ, गाँव की सी बस्ती एक,
हरे भरे खेतों के समीप अति अभिराम।
जहाँ पत्रजाल अन्तराल से झलकते हैं,
लाल खपरैल श्वेत छज्जों के संवारे धाम।
बीचों बीच वट वृक्ष खड़ा है विशाल एक,
झूलते हैं बाल कभी जिसकी जटाएँ थाम।
चढ़ी मंजु मालती लता है जहाँ छाई हुई,
पत्थर की पटियों के चौकियाँ पड़ी हैं श्याम॥

(रामचन्द्र शुक्ल)

३. जलहरण—३२ अक्षर होते हैं। अन्तिम दो लघु होते हैं। कई स्थानों पर अंतिम वर्ण गुरु भी पाया जाता है। परन्तु उसका उच्चारण लघु के समान ही होता है। जैसे:—

भरत सदा ही पूजे पादुका उते सनेम,
इते राम सीय बन्धु सहित पधारे बन।
सूपनखा के कुरूप, मारे खल भुण्ड घने,
हरी दस सीस सीता, राघव विकल मन।
मिले हनुमान त्यों सुकण्ठ सों मिताई ठानि,
बाली हति, दीनो राज्य सुग्रीवहिं जानि घन,

रसिक बिहारी, केसरी कुमार सिन्धु बाँधि,
लंक जारी सोय सुधि लायो मोद बाढ़ो तन ॥

विशेष—महाकवि दुःखभञ्जन जी ने इसे मनोहरण नामक दण्डक माना है।

४. देवघनाक्षरी—इसमें ३३ वर्ण होते हैं। यति ८, ८, ८, ९ पर होती है। अन्तिम तीन वर्ण लघु होते हैं।

जैसे :—

झिल्ली झनकारैं, पिक, चातक पुकारैं बन,
मोरनि गुहारैं उठैं, जुगुनूं चमकि चमकि।
घोर घन कारे भारे, धुरवा धुरारे धाय,
धूमनि मचावैं नाचैं, दामनी दमकि दमकि।
झूकनि बयारि बहैं, लूकनि लगावैं अंग,
हूकनि भभूकनि की उर में खमकि खमकि।
कैसे करि राखों प्राणप्यारे जसवन्त बिन,
नान्हीं नान्हीं बून्द झरैं मेघवा झमकि झमकि ॥
(जसवन्त सिंह)

विशेष—मुक्तक दण्डकों में गणव्यवस्था सब पदों में समान नहीं होती, तो भी चारों पदों में वर्णसंख्या समान होने से इन्हें समवृत्तों में गिना गया है।

१ चिर काल रसाल ही रहा, [स स ज ग]
२ जिस भावज्ञ कवीन्द्र का कहा। [स भ र ल ग]
३ जय हो उस कालिदास की, [स स ज ग]
४ कविता-केलि-कला-विलास की ॥ [स भ र ल ग]
[मैथिली शरण गुप्त]

वेगवती

स स सा ग अयुग्म सुहाये,
भा त्रि ग गा सम वेगवती है।
[विषम [१.३] में—स स स ग]
[सम [२.४] में—३ भ ग ग]

वेगवती के विषम पाद में ३ सगण और एक गुरु होता है और सम पाद में तीन भगण और दो गुरु होते हैं। जैसे :—

१ गिरिजा पति मो मन भायो [स स स ग]
२ नारद शारद पार न पायो। [भ भ भ ग ग]
३ कर जोर अधीन अभागे [स स स ग]
४ ठाड़ भये वरदायक आगे ॥ [भ भ भ ग ग]
[भानु कवि]

द्रुतमध्या

तीन भ दो ग अयुग्म सुहाये
न ज ज य युग्म बने द्रुतमध्या।
[१.३ में—३ भगण, ग ग]
[२.४ में—न ज ज य]

जिसके प्रथम और तृतीय पाद में तीन भगण, दो गुरु हों, द्वितीय, चतुर्थ में नगण, दो जगण, यगण हों वहाँ द्रुतमध्या छन्द होता है। जैसे :—

१ रामहिं सेवहु रामहिं गावो,
२ तन मन हूँ नित सीस झुकावो।
३ जन्म अनेकन के अघ जारो।
४ हरि हरि का निज जन्म सुधारो॥ [भानु कवि]

पुष्पिताग्रा

असम नगण दो र औ' यगण
न ज ज र गा सम होत पुष्पिताग्रा।
(विषम—न, न, र, य.
सम—न, ज, ज, र, ग)

जिसके विषम पाद में क्रम से नगण, नगण, रगण, यगण हों और सम पाद में नगण, जगण, जगण, रगण और गुरु हों उसे पुष्पिताग्रा कहते हैं। जैसे :—

दिनमणि यह अस्त हो रहा है,
मलिन मुदा छवि क्षीण हो रहा है।
विहग निचय नीड़ ओर आते,
द्विज सलिला-तट साम्प्रसौख्य पाते॥ [सुधा देवी]

आख्यानकी

आख्यानकी हो त त ज ग ग
आख्याहि अन्ते ज त ज गुरु दो।
[विषम [१,३] में—त, त, ज, ग, ग
सम [२, ४] में—ज, त, ज, ग, ग]

जिसके विषम पाद में दो तगण, जगण, दो गुरु और सम पाद में जगण, तगण, जगण, दो गुरु हों वह आख्यानकी छन्द होता है। जैसे :—

१ गोविन्द गोविन्द सदा रटो जू
२ असार संसार तबै तरो जू।
३ श्री कृष्ण राधा भज नित्य भाई,
४ जु सत्य चाहो अपनी भलाई ॥ [भानु कवि]

विपरीताख्यानकी

इस छंद के नाम से ही विदित हो जाता है कि यह छंद आख्यानकी से विपरीत (उल्टा) है। अर्थात् यदि आख्यानकी के विषम पाद का लक्षण सम पाद में चला जाय और सम पाद का लक्षण विषम पाद में चला जाय तो विपरीताख्यानकी छन्द होता है।

विषम—ज त ज ग ग
सम—त त ज ग ग

असार संसार तबै तरो जू,
गोविन्द गोविन्द सदा रटो जू।
जु सत्य चाहो अपनी भलाई,
श्रीकृष्ण राधा भज नित्य भाई ॥

विषम वृत्त प्रकरण

विषम वृत्त की व्याख्या पहले की जा चुकी है। यहाँ उसके कुछ भेद लिखे जाते हैं :—

उद्गता

प्रथम चरण में—स ज स ल, द्वितीय चरण में—न स ज ग, तृतीय चरण में—भ न ज ल ग, चतुर्थ चरण में—स ज स ज ग होते हैं। जैसे :—

१. सब छोड़िये असत काम।
२. शरण गहिये सदा हरी॥
३. दुःख भव जनित जावें टरी।
४. भजिये महोनिधि हरी हरी हरी॥

सौरभक

सौरभक छन्द के तीसरे पाद में रगण, नगण, भगण, गुरु होते हैं। शेष पाद उद्गता के समान होते हैं।

(१) स ज स ल, (२) न स ज ग,
(३) र न भ ग, (४) स ज स ज ग,

सब त्यागिये असत काम,
शरण गहिये सदा हरी।
भवं दुख सब मोच हरी,
भजिए अहोनिशि हरी हरी हरी॥

इसके प्रथम द्वितीय और चतुर्थ चरण उद्गता के हो हैं। तृतीय चरण में भिन्नता है, अतः यह सौरभक है।

ललित

जिसके तीसरे चरण में दो नगण और दो सगण हों और शेष पाद उद्गता के समान हों, उसे ललित छन्द कहते हैं।

(१) स ज स ल (२) न स ज ग
(३) न न स स, (४) स ज स ज ग

१. सब त्यागिये असत काम।
२. शरण गहिये सदा हरी।
३. भव जनित सकल दुःख टरी।
४. भजिये अहो निशि हरी हरी।

किम्च—

१. करुणा निधान रघुराज।
२. शरण अब नाथ मैं अई।
३. सकल विषय तजि, चित्त दई।
४. महिमा अपार हम जानि न लई।

सब त्यागिये असत काम,
शरण गहिये सदा हरी।
भव दुःख सब जाँय हरी,
भजिए अहोनिशि हरी हरी हरी॥

इसके प्रथम द्वितीय और चतुर्थ चरण उद्गता के हो
चरण में मिलता है, अतः यह सौरभक है।

ललित

जिसके तीसरे चरण में दो नगण और दो सग
शेष पाद उद्गता के समान हों, उसे ललित छन्द कहते

(१) स ज स ल (२) न स ज ग
(३) भ न ज ल, (४) स ज स ज

१. सब त्यागिये असत काम।
२. शरण गहिये सदा हरी।
३. भय जनित सकल दुःख हरी।
४. भजिये अहो निशि हरी हरी।

किम्वा—

१. करुणा निधान रघुराज।
२. शरण अब नाथ मैं अई।
३. सकल विषय तजि, चित्त दई।
४. महिमा अपार हम जानि न लई।

उपस्थित प्रचुपित

इसके चारों पादों में निम्नलिखित गणव्यवस्था होती है :—

१. चरण—मगण, सगण, जगण, भगण, दो गुरु।
२. चरण—सगण, नगण, जगण, तगण, गुरु।
३. चरण—नगण, नगण, सगण।
४. चरण—तीन नगण, जगण, यगण।

(१—म स ज भ ग ग। २—स न ज त ग।
३—न न स ४—न न न ज य) जैसे :—

यथा—

१. गोविन्दा पद में सु मित्त चित्त लागी है।
२. निहचै यहि भव सिन्धु पार लैहो॥
३. भ्रम थरु मद तज रे।
४. तन मन धन सन भजिये हरि कोरे॥ (भानु कवि)

अनङ्ग-क्रीड़ा

जिसके पहिले अर्धभाग में १६ गुरु हों तथा दूसरे अर्धभाग में ३२ लघु हों, उसे अनङ्ग-क्रीड़ा कहते हैं।

१, २, चरण—१६ गुरु।

३, ४, चरण—३२ लघु। जैसे :—

१. तेरा प्यारा ऊँचा नामा।
२. सोहे सबै थी के धामा।
३. धपि भरत नुरति कर सरस बदनि!
४. लग लग मन हरनि! सज-गद-हननि! (आनन्द)

संस्कृत में इसे 'षट्‌पद', या 'षट्‌चरण' कहते हैं। मिलिन्द के छः
जिस पद के ६ चरण हों उसे श्री शंकर जी ने मिलिन्दपाद नाम
दिया है।

* ६ चरण पहले लिखे हुए छन्दों में से किसी भी छन्द के बन
सकते हैं। जिस छन्द के ६ पाद बनाये गये हों, उस छन्द
नाम साथ जोड़ दिया जाता है। जैसे—प्रमाणिकामिलिन्दपाद, भुजंगी
मिलिन्दपाद आदि। यहाँ दिग्दर्शनार्थ कुछ उदाहरण दिये जाते हैं।

(१) प्रमाणिका छन्द के यदि ६ चरण हों तो प्रमाणिका
मिलिन्दपाद होता है। जैसे:—

१. सुधार धर्म कर्म को,   २. बिसार दो अधर्म को।
३. बढ़ाय नेह मेलि को;   ४. कथा सुनीति रीति को॥
५. सुना करो अनेक से;
६. मिलो सदैव एक से॥   'शंकर'

इसके प्रत्येक चरण में प्रमाणिका लक्षण घटता है। अतः वही छन्द
है। केवल ६ पादों के कारण से नवीन नाम रखा गया है।

भुजंगीमिलिन्दपाद

१ अरे अजन्मा! कहाँ तू नहीं?
२ न कोई ठिकाना जहाँ तू नहीं।
३ किसी ने तुझे ठीक जाना नहीं।
४. इसी से यथा तथ्य माना नहीं।
५ शिखा सत्य की झूठ ने काट ली।
६ न विज्ञान फूला न विद्या फली।   'शंकर'

---

* शेषा गाथाः त्रिभिः षड्भिश्चरणैश्चोपलक्षिताः।
—वृत्तरत्नाकर

भुजंगप्रयातमिलिन्दपाद

जहाँ घोषणा राम के नाम की है,
जहाँ कामना कृष्ण के नाम की है।
अहिंसा जहाँ शुद्ध बुद्धार्थ की है,
प्रतिष्ठा जहाँ शंकराचार्य की है॥
वहाँ देव ने दिव्य योगी उतारे,
प्रतापी दयानन्द स्वामी हमारे॥ 'शंकर'

इसके प्रत्येक पाद में भुजंगप्रयात का लक्षण घटता है। अतः इसे भुजंगप्रयातमिलिन्दपाद कहते हैं—

इस ६ चरणों के नये नियम को केवल नाथूराम शर्मा 'शंकर' ने ही अपनाया है, ऐसा नहीं। अन्य कविवरों ने भी ऐसे छन्द लिखे हैं। उनके भी दो एक उदाहरण दिए जाते हैं—

श्री रामचरित उपाध्याय जी ने स्रग्विणी छन्द को छै चरणों में लिखा है, अतः उसे 'स्रग्विणीमिलिन्दपाद' कहते हैं। जैसे :—

ज्ञान से मान से शक्ति से हीन हो,
दान से ध्यान से भक्ति से हीन हो;
आलसी हो, सदा यों पराधीन हो,
सोच देखो, सभी में तुम्हीं दीन हो॥
चक्षु को आँसुओं से भिगोते रहो।
क्यों जगोगे ? अभी देश ! सोते रहो॥ (रामचरित उपाध्याय)

इसके प्रत्येक चरण में स्रग्विणी का लक्षण घटता है। श्री मैथिली शरण जी गुप्त ने भी मिलिन्दपाद लिखे हैं, इनके पञ्चचामर मिलिन्द-पाद का एक दृष्टान्त देखिये :—

तीसरा अध्याय

सम-मात्रा-छन्द प्रकार

ज्ञात हो कि १ मात्रा से लेकर ६ मात्राओं के छन्द न तो प्रचलित हैं और न ही इनमें चमत्कार या रोचकता होती है। अतएव उन छन्दों की चर्चा यहाँ करना व्यर्थ है। यहाँ ७ मात्राओं से प्रारम्भ किया जाता है।

लौकिक जाति (२१ भेद)

सात मात्राओं के छन्दों की जाति।

सुगती

कल सातु गा

अन्त सुगता।

सुगती छन्द में सात मात्राएं और अन्त में गुरु होता है। जैसे :—

दैशिक जाति (८९ भेद)

१० मात्राओं के छन्द।

दीप (अन्त में ।।।, ऽ, ।)

दीप कह दस मन्त।
नगन गुरु लघु अन्त॥

इसमें दस मात्राएं होती हैं और अन्त में नगण और गुरु, लघु होते हैं। जैसे :—

देव-पति घनश्याम, है निखिल सुख-धाम।
भय पाप कर दूर, पौ चरण अमि पूर॥

(आनन्द)

रौद्र [१४४ भेद]

११ मात्राओं के छन्द।

अहीर (अन्त—ज)

मात्रा रुद्र अहीर।
अन्ता जगण सुधीर॥

अहीर में ११ मात्राएं तथा अन्त में जगण होता है। जैसे :—

सुरभित मन्द बयार, सरसे सुमन सुढार।
गुंज रहे मधुकार, अम्ब बसन्त बहार॥

(मैथिली शरण गुप्त)

कहो विद्या विजाती की,
कि जैसे लह स्वजाती की।
परस्पर प्रीति सों रहिये,
सदा मीठे वचन कहिये॥ (भाउ)

इसका अन्य नाम प्रतिभा विजाता भी है।

सखी

चौदह कला 'म' या 'य' अन्ता।

चौदह मात्रायें तथा अन्त में मगण अथवा यगण होता है। जैसे:—

यगण

।ऽऽ

यह सोच समझ सब सूझी
अब वृन्दावन सुख लूटी।
जग के सब काम बिहाई,
दिन रैन भजो रघुराई॥
(साहित्यसागर)

मगण

ऽऽऽ

आश्चर्य भाव हैं मुझे,
अनुराग बाग के माली।
क्यों श्याम सजल तुम बैठे,
मरकत कुंजों के वासी॥
(कृष्णानन्द वाजपेयी)

हाकिल

त्रै चौकल गुरु हाकिल है।

हाकिल में १५ मात्राएं तथा तीन चौकलों के अनन्तर गुरु होता है। जैसे :—

राधा कृष्ण गावै जो,
रामा नाम उचारै जो।
लहहो जग में सुख भारी,
चारों फल के अधिकारी॥

किम्वा—

भाव-सुरभि का सदन सदा।
अमल कमल सा वदन सदा।
अधर छबीले, छदन सदा।
कुन्द कली से रदन सदा॥

(मैथिली शरण गुप्त)

विशेष—यहाँ 'तीन चौकल' से अभिप्राय है ऐसे तीन स्वतन्त्र समुदाय जिनमें चार चार मात्राएं हों।

जहाँ तीन चौकल न हों, पंद्रह मात्राएं होने पर भी उस छन्द को हाकिल नहीं कहते, उसे मानव छन्द कहा जाता है। जैसे :—

मानव देह धारे जो,
राम नाम उचारे जो।
नहिं तिनको डर जम को है।
पुण्य पुञ्ज निज सम को है॥

इसके प्रत्येक चरण में चौथी मात्रा पांचवीं के साथ मिली हुई है, स्वतन्त्र नहीं है।

मनमोहन

मनमोहन है भगण अन्त।

मनमोहन में १४ मात्राएँ और अन्त में भगण होता है।

यति — आठवीं तथा तदनन्तर छठी मात्रा पर होती है। जैसे :—

अब तो लागी प्रभु से लगन,
मेरा हुआ मन है मगन।
क्या कहूँ कुछ तो चतन,
कर यह सुमति मन में मनन॥ (आनन्द)

मनोरम

आदि ग हो भ या य अन्ता।

मनोरम छन्द में १४ मात्राएँ, आदि में गुरु और अन्त में मगण अथवा यगण होता है। जैसे :—

लोक हित करना सदाई,
है यही सच्ची कमाई।
पूज गुरु गोविन्द को नित,
'मान' है जो चाहता हित॥ (मान)

कई आचार्य आदि में गुरु होना आवश्यक नहीं बतलाते। वे कहते हैं कि 'द्विकल' आदि में आवश्यक है। इस विचार से आदि में गुरु या दो लघु भी होना ठीक है।

सरस ८, ८,

द्वै पांच कल, द्वै पांच कल
क्रम से चतुर्दश रच सरस।

जहाँ दो पाँच, दो पाँच के क्रम से चौदह मात्राएँ हों वहाँ सरस छन्द होता है। जैसे :—

अनुधार के नर तन मनुज !
कर मूढ़ रे प्रभुवर भजन।
चाहे यदी, भव नद तरन,
प्रभु भक्ति की ले ले सरन ॥ (आनन्द)

तथिक (६८७ भेद)

१५ मात्राओं की जाति।

हंसी (८, ७)

वसु (८) मुनि (७) सु हंसी अन्त लगा।

हंसी छन्द में ८, ७ पर यति तथा अन्त में लघु, गुरु होते हैं। कुल मात्राएँ १५ होती हैं।

इसे चौबोला भी कहते हैं। जैसे :—

नित सफल निज जीवन करो।
हृदय बीच शुभ गुण धरो।
रत सदा उन्नति की गहो,
नेता बन समाज में रहो॥

(राम नरेश त्रिपाठी)

महाकवि केशव का निम्नलिखित पद्य यद्यपि अलंकृत है तथापि चौबोला का उदाहरण ठीक है :—

संग लिए ऋषि शिष्यन घने ।
पावक से तप तेजनि सने ॥
देखत बाग तड़ागनि भले ।
देखन औधपुरी कहँ चले ॥ (रामचन्द्रिका)

अन्य उदाहरण :—

धर्म पंथ पर दृढ़ है चलो,
ईश्वर तुम्हरो करि है भलो ॥
जो तुम जीवन को फल चहो,
तो मेरी यह शिक्षा गहो ॥ (बिहारीलाल भट्ट)

चौपई

गुरु लघु अन्त पंच दस मत्त
चौपई नाम जयकरी सत्त ॥

इस 'चौपई' या 'जयकरी' छन्द में १५ मात्राएँ तथा अन्त में गुरु, लघु होता है । जैसे :—

परहित-सम नहिं साधन और,
कृष्ण-चरन-सम ठौर न और ।
सत्य वचन सम तप नहिं आन,
जे साधें ते परम सुजान ॥ (साहित्यसागर)
उपवन में है भरी उमंग,
कलियाँ खिलती हैं बहु रंग ।
पर मिलता है उसको मान,
जो है सुलभ सुगन्ध निधान ॥ (रामनरेश त्रिपाठी)
हम चौधरी डोम सरदार,
अमल हमारा दोनों पार ।
सब मसान पर हमरा राज,
कफन माँगने का है काज ॥ (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र)

गुपाल

तिथि कल, रच जगणान्त गुपाल।

गुपाल छन्द में तिथि (१५) मात्रायें तथा अन्त में जगण होता है। जैसे :—

इसके आगे विदा विशेष,
हुए दम्पति फिर अनिमेष।
किन्तु जहाँ है मनो नियोग,
वहाँ कहाँ का विरह वियोग॥ (मैथिलीशरण गुप्त)

संस्कारी जाति (१५९७ भेद)

सोलह मात्राओं की जाति।

पादाकुलक

चार चतुष्कल पादाकुलका।

पादाकुलक में चार चौकल होते हैं। चौकल का अर्थ है चार मात्राओं का समुदाय। जैसे :—

सुमति कुमति सब के उर रहहीं,
नाथ ! पुराण निगम अस कहहीं।
जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना,
जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना ॥ (तुलसीदास)

इसके प्रथम पाद में चौकल इस प्रकार हैं :—

१	२	३	४
I I I I	I I I I	S I I	I I S
सुमति कु	मति सब	के उर	रहहीं

इसी प्रकार शेष पादों में भी चार मात्राओं के चार चौकल हैं।

पादाकुलक के अनेक भेद होते हैं; उनमें से कुछ एक नीचे लिखे जाते हैं :—

(१) पद्धरि

पद्धरि ज अन्त, कल आठ आठ।

पद्धरि छन्द में ८, ८ पर यति होती है और अन्त में जगण होता है। जैसे :—

निसि दिवस भजहु नन्द नन्द-नाम,
हिय धरहु ध्यान वसु याम जाम।
श्री कृष्ण कहैं काटहिं कलेस,
श्री कृष्ण कृष्ण कहिये हमेस॥ (भानन्द)

किञ्च—

मैं जन्मा था इस पर अशोध,
पाया इस ही पर वृद्धि बोध।
इसने ही देकर अन्नविशेष,
है सिखलाया चलना सुदेश॥ (गोविन्द दास)

(२) अरिल्ल

सोलह कल, ल ल अन्त अरिल्ला।
रचो ज हीन 'य' अन्त सुरिल्ला॥

अरिल्ला छन्द में १६ मात्राएं होती हैं। अन्त में दो लघु व यगण होता है। सारी रचना में जगण कहीं न होना चाहिये। जैसे—

मोरप पच्छ कर लाल सुचीरा,
एक दिरीय न सोह करीरा।
ले हरिनाम सुसुन्दर मुरारी,
राधावल्लभ कुञ्जबिहारी॥ (भानु) (हरिदर्शन)

दो या चार मात्रा वाले वर्णसमुदाय को सम कल कहते हैं। एक या तीन मात्रा के वर्णों को विषम कल कहा जाता है।

चौपाई में सम कल के बाद सम कल आना चाहिये। अर्थात्—द्विकल या चतुष्कल के अनन्तर द्विकल या चतुष्कल आना आवश्यक है। विषम कल अर्थात् एकमात्रात्मक या त्रिमात्रात्मक के अनन्तर विषम कल का प्रयोग होना श्रेष्ठ है। हाँ, यदि सम कल के बाद त्रिकल आ जाय और फिर उसके बाद त्रिकल का प्रयोग हो तो वहाँ दोष नहीं रहता। जैसे :—

कंकन किंकनि नूपर धुनि सुनि,
कहत लखन सन राम हृदय गुनि।
मानहु मदन दुंदभी दीन्ही,
मनसा विश्व विजय कहँ कीन्हीं ॥ (तुलसीदास)

गोस्वामी तुलसीदास जी की अधिकांश चौपाइयों में अन्तिम वर्ण गुरु पाया जाता है। उनमें गुरु-गुरु (ऽ ऽ) या लघु गुरु (। ऽ) नियम अधिक निभाया गया है। ये ही चौपाइयां हिन्दीजगत में आदर्श मानी गई हैं।

हाथ लिए बल्कल सुकुमारी,
खड़ी भई लाज डर भारी।
पहर न जानत मन अकुलानी,
राम ओर लखि कह मृदु बानी ॥

मुनि जन केहि विधि बाँधत चीरा,
सो नहिं मैं जानत रघुवीरा।
अस कहि चल्यो नैन बहि वारी,
सुनि प्रभु उठे धीर धरि भारी ॥

पद पादाकुलक

पद पादाकुलक द्विकल आदी।

पद पादाकुलक में १६ मात्राएँ होती हैं, परन्तु आदि में द्विकल आना अनिवार्य है।

विशेष—द्विकल के अनन्तर सभी समकल (द्विकल, चतुष्कल) आने चाहियें अथवा यदि द्विकल के अनन्तर विषमकल आ जाय तो सभी विषमकल होने चाहियें। सभी दशाओं में प्रारम्भ में द्विकल होना आवश्यक है।

इसका अन्य नाम इन्दुकला भी है। जैसेः—

तुलसी यह दास कृतार्थ तभी,
मुँह में हो चाहे स्वर्ण न भी।
पर एक तुम्हारा पत्र रहे,
जो निज मानस कवि कथा कहे॥

(साकेत)

इसी प्रकार—

सिय राम भजो मन चित लाई,
यह औसर कब पैहो भाई॥

विशेष—ऊपर हम पद्धरि छन्द का लक्षण तथा व्याख्या लिख चुके हैं। इसी के अन्य नाम प्रज्झटिका, पद्धटिका प्रज्वलय या मैं हैं। इसके लक्षण में कहा गया है कि इसके अन्त में जगण होना है। परन्तु वर्तमान काल के कवियों ने इस जगण वाले ने नियम को आवश्यक नहीं माना। कुछ उदाहरण इस प्रकार के दिये जाते हैं:—

दामिनि दमकि रही घन मांहीं,
खल की प्रीति यथा थिर नांहीं।
बुन्द अघात सहैं गिरि कैसे,
खल के वचन सन्त सहँ जैसे ॥

(गो० तुलसीदास)

उठो लाल आँखों को खोलो,
पानी लाई हूँ, मुख धो लो।
बीती रात कमल सब फूले,
उनके ऊपर भौंरे झूले ॥

(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

पादाकुलक तथा चौपाई में यह भेद है कि चौपाई में चौकलों का होना आवश्यक नहीं। इसकी आवश्यकता पादाकुलक में है। चौपाई में सम-विषम के उल्लिखित नियम का पालन होना चाहिये।

नोटः—चौपई या चौपाई के दो चरणों को अर्धाली कहते हैं।

प्रसाद

आदि में त्रिकल, द्विकल, गल-अन्त।

प्रसाद में १६ मात्राएँ होती हैं। प्रारम्भ में त्रिकल तथा द्विक होते हैं। अन्त में गुरु, लघु होते हैं। जैसेः—

धरा पर धर्मादर्श निकेत,
धन्य है स्वर्ग सदृश साकेत।
बढ़े क्यों आज न हर्षोद्रेक,
राम का कल होगा अभिषेक ॥ (मैथिली शरण गुप्त

इसका दूसरा नाम श्रृङ्गार भी है।

पद पादाकुलक

पद पादाकुलक द्विकल आदी।

पद पादाकुलक में १६ मात्राएँ होती हैं, परन्तु आदि में द्विकल आना अनिवार्य है।

विशेष—द्विकल के अनन्तर सभी समकल (द्विकल, चतुष्कल) आने चाहियें अथवा यदि द्विकल के अनन्तर विषमकल आ जाय तो सभी विषमकल होने चाहियें। सभी दशाओं में प्रारम्भ में द्विकल होना आवश्यक है।

इसका अन्य नाम इन्दुकला भी है। जैसेः—

तुमसे यह दास कृतार्थ तभी,
मुँह में हो चाहे स्वर्ग न भी।
पर एक तुम्हारा पत्र रहे,
जो निज मानस कवि कथा कहे॥

(साकेत)

इसी प्रकार—

सिय राम भजो मन चित लाई,
यह औसर कब पैहो भाई॥

विशेष—ऊपर हम पद्धरि छन्द का लक्षण तथा उदाहरण लिख आये हैं। इसी के अन्य नाम प्रज्झटिका, पद्धटिका अज्झलय या मौक्तिक हैं। इसके लक्षण में कहा गया है कि इसके अन्त में जगण होना है। परन्तु वर्तमान काल के कवियों ने इस अन्त्य जगण वाले नियम को आवश्यक नहीं माना। कुछ उदाहरण नीचे दोनों प्रकार के दिये जाते हैं:—

जगण सहित :—

पुनि आये सरजू सरित तीर,
तहँ देखे उज्ज्वल अमल नीर।
नव निरखि निरखि द्युतगति गँभीर,
कछु वर्णन लागे सुमति धीर॥

(रामचन्द्रिका)

कभी तो अब तक पावन प्रेम,
नहीं कहलाया पापाचार,
हुई मुझको ही मदिरा आज,
हाय ! क्या गंगा जल की धार॥
तुम्हारे छूने में था प्राण
संग में पावन गंगा स्नान।
तुम्हारी वाणी में कल्याणि !
त्रिवेणी की लहरों का गान॥

(सुमित्रानन्दन)

जगण के बिना:—

प्रजा को दोगे जितना ताप,
प्राप्त होगा उतना सन्ताप।
प्रजा राजा की मानों प्राण,
बिना जनपद सुख नृप म्रियमाण॥

(श्यामा कान्त पाठक)

प्रेम करना है पापाचार,
प्रेम करना है पाप विचार।
जगत के दो दिन के अतिथि,

प्रेम के अन्तराल में छिपी,
वासना की है भीषण ज्वाल।
इसी में जलते हैं दिन-रात,
प्रेम के बन्दी बन विकराल॥
प्रेम में है इच्छा की जीत,
और जीवन की भीषण हार।
न करना प्रेम, न करना प्रेम,
प्रेम करना है पापाचार॥

(रामकुमार वर्मा)

इत्यादि

महासंस्कारी (२५८४ भेद)

१७ मात्राओं की जाति।

राम

निधि वसु (९, ८) कला कर राम य अन्ता।

राम छन्द में ९, ८ पर यति होती है। अन्त में यगण होता है, कुल १७ मात्राएं होती हैं। जैसे:—

मनु राम गाये, सुभक्ति सिद्धी,
विमुख रहे सोइ, लहैं असिद्धी।
श्री राम मोरा, शोक निवारो,
आयो शरण प्रभु, शीघ्र उबारो॥

(भानु)

पौराणिक जाति (४१८१ भेद)

१८ मात्राओं की जाति।

शक्ति

रचो लघु आदि शक्ति अन्ता र र न।

शक्ति छन्द में प्रथम अक्षर लघु और अन्त में सगण अथवा र अथवा नगण होता है। कुल १८ मात्राएं होती हैं। जैसे :—

पढ़ो भाई विद्या भला कर्म है,
करो देश सेवा यही धर्म है।
अगर काम ऐसा न कुछ भी किया,
वृथा जन्म दुनिया में तुमने लिया॥
(साहित्यसागर)

अरे उठ कि अब तो सवेरा हुआ,
नहीं दूर तेरा अँधेरा हुआ।
बहुत दूर करना तुझे है सफर,
नहीं ज्ञात है राह घर को किधर॥
(रामनरेश त्रिपाठी)

स ध्वनि पर उर्दू में अनेक शेर पाये जाते हैं। जैसेः—

करीमा बबख्शाय बरहालमा,
कि हस्तम असीरे कमन्दे हवा॥

महापौराणिक जाति (६७६५)

१६ मात्राओं की जाति।

पीयूषवर्ष

दिसि (१०) निधि (६) पीयूषवर्ष त अन्त ल गा।

पीयूषवर्ष छन्द में १६ मात्राएं—१० तथा ६ पर यति—और अन्त में लघु, गुरु होते हैं। जैसे:—

ब्रह्म की हैं चार, जैसी मूर्त्तियां,
ठीक वैसी चार, माया मूर्त्तियां।
धन्य दशरथ जनक, पुण्योत्कर्ष है,
धन्य भगवद् भूमि भारतवर्ष है॥

(मैथिली शरण गुप्त)

जहाँ यति का नियम न रखा जाय वहाँ इसी छन्द को आनन्दवर्धक छन्द कहते हैं। इसमें अन्तिम गुरु का भी नियम नहीं होता।

आँख का आँसू ढलकता देख कर,
जी तड़प करके हमारा रह गया।
क्या गया मोती किसी का है बिखर,
या हुआ पैदा रतन कोई नया।

(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

सुमेरु

सुमेरु छन्द में १६ मात्राएं होती हैं। प्रथम अक्षर लघु होता है और अन्त में यगण (।ऽऽ) होता है। अन्त में तगण, रगण, जगण और भगण नहीं होते हैं।

यति—१०, ६ पर अथवा १२, ७ पर होती है।

तुम्हें कर जोर के विनती सुनाऊं,
तुम्हें तज पास काके और जाऊं।
निहारो जू निहारो जू निहारो,
बिहारी जू भरोसो है तुम्हारो॥

(बिहारी लाल भट्ट)

अभागिन! देख कोई क्या कहेगा,
यही चौदह बरस मन में रहेगा।
विभव पर हाय! तू भव छोड़ती है,
भरत का राम का युग फोड़ती है॥

(मैथिली शरण गुप्त)

तमाल

उन्नीस कल यति गल है अन्त तमाल।

तमाल छन्द में १९ मात्राएं, और गुरु, लघु अन्त में होते हैं। यति भी अन्त में ही है।

राक्षस कुलनाशक शिशुपाल-कराल!
कहाँ गये तुम छांडि हमें नँदलाल।
बाट जोहती हैं हम जमना-तीर,
प्रगट बेगि कित हरहु विरह की पीर॥

(भानु कवि)

ग्रन्थी

इसमें १९ मात्राएं तथा यति प्रायः ६ और १० पर होती हैं।
जैसे:—

आज कल के छोकरे सुनते नहीं,
हम बहुत कुछ कह चुके अब क्या कहें
मानते ही वे नहीं मेरी कहीं।
कब तलक हम मारते माथा रहें॥
(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

कौन दोषी है ! यही तो न्याय है !
वह मधुप विंधकर तड़पता है, उधर
दग्ध-चातक है तरसना, विश्व का,
नियम है यह-रो, अभागे हृदय ! रो !!
(सुमित्रानन्दन पन्त)

महादैशिक जाति (१०९४६ भेद)

बीस मात्राओं की जाति।

हंसगति

ग्यारह नव कल यनिल हंसगति देखहु।

हंसगति छन्द में बीस मात्राएं तथा ११, ९ पर यति होती है।

जैसे:—

फूलवाटिका बीच आज हम आली।
निरखे नन्द किशोर रुचिर छविशाली।
वह मनमोहनि मूर्ति निरखि भइ चेरी।
सुधि बुधि छू गई भूल थकी मति मेरी॥
(विहारी लाल भट्ट)

होते हैं सुखि देख त्रिलोचन त्रिविक्रम,
होता है सुख देख हृदय आनन्दित ।
जिस पर सत्ता नहीं रूप में दुर्गुण,
है कृष्णता को ढँक देता सद्गुण ॥

(रामनरेश त्रिपाठी)

शास्त्र

शास्त्र छन्द में २० मात्राएँ तथा अन्त में गुरु, लघु होते हैं ।

गुणी विद्वान् लहि हैं शास्त्र आनन्द,
सदा चित लाय भजियत नन्द के नन्द ।
सुलभ है मार्ग प्यारे ना लगे दाम,
कहो नित कृष्ण राधा और बलराम ॥

(भानु कवि)

त्रिलोक जाति (१७७११ भेद)

२१ मात्राओं की जाति ।

प्लवंगम

गादि, वसु गज नदी, ज गान्त प्लवंग में ।

प्लवंगम छन्द में प्रथम अक्षर गुरु, अन्त में जगण और गुरु और यति वसु (८), गज नदी (१३) पर होती है । जैसे :—

हे मन ! नश्वर काम-विषय सुख मोघ हैं,
जन्म मनुष्य का भक्ति-शून्य ये मोघ है।
या ते हरिजन संग सदा मन दीजिए,
राम कृष्ण गुण ग्राम नाम रस भीजिए॥

(भानु) (परिवर्तित)

चान्द्रायण

इसमें २१ मात्राएँ होती हैं। ११ मात्राएँ जगणान्त तथा १० मात्राएँ रगणान्त होती हैं। प्रारम्भ में त्रिलघु या चतुर्लघु होने चाहिएं। जैसे—

मलगण नाशनहार हर ! दया कीजिए,
प्रभु जू ! दयानिकेत ! शरण रख लीजिए।
नरवर विष्णु कृपाल सबहिं सुख दीजिए,
अपनी दया विचारि पाप सब छीजिए॥

(भानु कवि)

कई विद्वान् '११ मात्राएं जगणान्त होनी चाहिएँ' इस नियम को नहीं मानते। उनके मत में निम्नलिखित उदाहरण हो सकता है—

कर कुछ पर-उपकार वृथा वय खोवहीं,
नर तन जीवन जनम बड़े परा होवहीं।
सब भ्रम तज मन मूढ़ करै मति हार है,
कलि महँ केवल राम नाम भज सार है॥

(साहित्यसागर)

विशेष—चान्द्रायण और प्लवंगम के मेल को त्रिलोकी छन्द कहते हैं।

महारौद्र जाति (२८६५७ भेद)

२२ मात्राओं की जाति।

राधिका

तेरह नव पर विरामा राधिका कहिए।

राधिका छन्द में २२ मात्राएँ होती हैं, १३, ६ पर यति होती है। जैसे:—

सब ने सब दोष बिसार, दिव्यगुण धारे,
तज वैरभाव दुर्भाव, सदा दुखकारे।
चेतन जीवित ऋषि देव, पितर सत्कारे,
कर दिये दूर खल सर्व, कुमति के मारे॥

(नाथूराम शर्मा 'शंकर')

सब सुधि बुधि गई क्यों भूलि गई मति मारी,
माया को घेरी भयो भूल असुरारी।
कटि जैहैं सबके फन्द पार लगि जाई,
है सदा भजो श्री कृष्ण राधिका माई।

(भानु कवि)

बैठी है वसन मलीन, पहन इक बाला,
पुर इन पत्रों के बीच, कमल की माला।
उस मलिन वसन में अंग-प्रभा दमकीली,
ज्यों धूसर नभ में चन्द्र-प्रभा चमकीली॥

(जयशंकर 'प्रसाद')

नोट—यही छन्द फारसी की पद्धति में पाया जाता है। केवल यति का भेद होता है। जैसे:—

क्या अहह रगों में रंग नहीं है लाल,
क्या है न कलित कौशल कलाप से नाता।
क्या नहीं गीत गीता का जी उमगाता,
क्या है न मदन मोहन का वचन रिझाता।
गुन लाओ रंग लो ए! माई के लालो,
पर देखो मानो मंगलो और संभालो ॥

(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

विहारी

इसमें क्रम से दो चौकल, तीन त्रिकल और अन्त में पाँच कल होते हैं। १४ तथा ८ पर यति होती है। जैसेः—

भूला न किसी भाँति कहीं टेक ठिकाना,
माना मनोज का न कहीं ठीक ठिकाना।
जीते असंख्य शत्रु रहा दर्प दिखाता,
शय्या शरों कि पाय मरा धर्म सिखाता ॥

(नाथूराम शर्मा 'शंकर')

कुण्डल

इसमें २२ मात्राएं होती हैं। १२, १० पर यति होती है। और दो गुरु होते हैं। जैसेः—

जय कृपालु कृष्ण चन्द फंद के कटैया,
वृन्दावन कुंज-कुंज खोर के खिलैया।
मोर-मुकुट, हाथ लकुट, वेणु के बजैया,
कवि 'विहारि' कृपा करहु नन्द के कन्हैया ॥

(विहारी लाल भट्ट)

मेरे मन राम नाम दूसरा न कोई,
सन्तन ढिग बैठि बैठि, लोक लाज खोई।
अब तो बात फैल गई, जानत सब कोई,
अंसुवन जल सींचि सींचि प्रेमबेलि बोई॥

विशेष—इस छन्द को प्रभाती में भी गाया जाता है।

जिस कुण्डल छन्द के अन्त में गुरु एक ही हो उसे उड़ियाना कहते हैं। यह भी प्रभाती में गाया जाता है। जैसे—

ठुमकि चलत रामचन्द्र बाजत पैजनियाँ,
धाय मातु गोद लेत दशरथ की रनियाँ।
तन मन धन वारि मंजु, बोलीं वचनियाँ,
कमल बदन, बोल मधुर मन्द सी हँसनियाँ॥
इत्यादि।

रौद्रार्क जाति (४६३६८ भेद)

२३ मात्राओं की जाति

हीरक

तेइस मत आदि गुरु अन्त रगण हीर में।

हीरक में २३ मात्राएँ, आदि गुरु तथा अन्त में रगण होता है। यति ६, ६, ११ पर होती है। जैसे—

आपदहिं संपदहिं वही सरन भीर में,
चित्त लगा पाद पद्म मोहन नन्दवीर में।
काल तजो धाम तजो, वाम तजो साथ हीं,
मित्त गहो, नित्त गहो, मंजु धर्म पाथ हीं॥ (भानु)

अवतारी जाति (७५०२५ भेद)

२४ मात्राओं की जाति।

रोला

ग्यारह तेरह यत्ती मत्त चौबीस रच रोला।

रोला छन्द में २४ मात्राएँ होती हैं और ११, १३ पर यति होती कई आचार्य कहते हैं कि अन्त में दो गुरु होने चाहिएँ, परन्तु होना अनिवार्य नहीं। जैसे:—

जीती जाती हुई, जिन्हों ने भारत-बाजी,
निज बल से मल मेट, विधर्मी मुगल कुराजी।
जिनके आगे ठहर, सके जंगी न जहाजी,
हैं ये वही प्रसिद्ध, छत्रपति भूप शिवाजी॥

(कामता प्रसाद गुरु)

इसमें चारों पादों के अन्त में दो-दो गुरु हैं।

भुवनविदित यह जदपि चारु, भारत भुवि पावन,
पै रसपूर्ण कमण्डल ब्रजमंडल मनभावन।
तहँ सुचि सरल सुभाव रुचिर गुन मन के रासी,
भोरे भोरे बसत नेह निकसत ब्रजवासी।

(सत्यनारायण कविरत्न)

इसके पूर्वार्ध में अन्त में दो लघु हैं और उत्तरार्ध के दोनों पादों में गुरु।

विशेष—जब रोला के चारों पादों में ग्यारहवीं मात्रा लघु होती है तब उसे काव्यछन्द कहते हैं। जैसे:—

विशेष—इस छन्द को गज़ल की तर्ज पर ठेका कव्वाली में गा सकते हैं। उर्दू की नीचे लिखी गज़ल से इसका मिलान हो सकता है :—

क्या क्या मची हैं यारों बरसात की बहारें ॥

रूपमाला

रत्न दिशि कल रूपमाला अन्त सोहे गाल।

रूपमाला छन्द में रत्न (१४), दिशि (१०) पर यति होती है और अन्त में गुरु लघु होते हैं। इसके आरम्भ में ग ल ग (ऽ।ऽ) का होना आवश्यक सा है। जैसे :—

जात हैं नित बाजि केसव, जात हैं नित लोग,
बोलि विप्रन दान दीजत, यत्र तत्र सुयोग।
बेणु वीणा मृदङ्ग बाजत, दुन्दुभी बहु भेव,
भान्ति भान्तिन होत मंगल, देव से नरदेव ॥

(केशव दास)

घूमता था भूमितल को, अर्ध विधु सा भाल,
बिछ रहे थे प्रेम के दृग, जाल बन कर बाल।
छत्र सा सिर पर उठा था, प्राणपति का हाथ,
हो रही थी प्रकृति अपने, आप पूर्ण सनाथ ॥

(मैथिलीशरण गुप्त)

इसका अन्य नाम 'मदन' भी है।

महावतारी जाति (१२१३९३ भेद)

पच्चीस मात्राओं की जाति।

मुक्तामणि

तेरह रवि यति, अन्त ग ग मुक्तामणि रचि लीजै।

मुक्तामणि छन्द में २५ मात्राएं, १३, १२ पर यति, और अन्त में दो गुरु होते हैं। जैसेः—

कुंदिदल ललित कपोल पर, सुछबि देत हैं ऐसे।
घन में चपला दमकि अति, लग नीकी दुति जैसे॥
चन्दन और विराज शुचि, मनु लक्ष्मि अति राजै।
सब आभा तिहुँ लोक की, मुख के आगे लाजै॥

विशेष—इस छन्द को बनाने का सहज ढंग यह है कि दोहे के अन्तिम अक्षर को यदि दीर्घ कर दिया जाय तो यह छन्द बन जाता है।

महाभागवत जाति (१९६४१८ भेद)

छब्बीस मात्राओं की जाति।

भूलना

मुनि (७) राम (३) गुनि, यान युत ग ल भूलन प्रथम मतिमान।
(भानु कवि)

भूलना छन्द में २६ मात्राएं, ७, ७, ७, ५ पर यति और अन्त में एक गुरु, एक लघु होता है। जैसे:—

अभिषेक की यह गाथ श्री रघुनाथ की नर कोइ,
पल एक गावत पाइ है बहु पुत्र सम्पति सोइ।
जरि जाहिगी सब वासना भव विष्णु भक्त कहाइ,
यमराज के शिर पाउँ दे सुरलोक लोकिन जाइ॥

(रामचन्द्रिका)

कामरूप

कामरूप के प्रत्येक चरण में ६, ७, १० पर यति, अन्त में क्रमशः गुरु, लघु होता है। कुल मात्राएं २६ होती हैं। जैसे:—

सित पछ सुदसमी, विजय तिथि सुर, वैद्य नखत प्रकास,
कपि भालु दल युत, चले रघुपति, निरखि समय सुभास।
तरु कुंवर मुख नख, शस्त्रचित बुधि, वीर्य विक्रम प्रूढ़,
नभ भूमि जहँ तहँ, भरे बनचर, रामकृष्ण अरूढ़॥

(जगन्नाथ प्रसाद 'भानु')

गीतिका

रत्न (१४ रवि (१२) कलधारिकै लग अन्त रचिये गीतिका।
(भानु)

गीतिका में २६ मात्राएँ, १४, १२ पर यति और अन्त में लघु, गुरु होते हैं।

यदि इसकी तीसरी, दसवीं, सत्रहवीं और चौबीसवीं मात्रा लघु रखी जाय और अन्त में रगण हो तो यह छन्द अति श्रुतिमधुर हो जाता है। जैसे :—

अभिषेक की यह गाथ श्री रघुनाथ की नर कोइ,
पल एक गावत पाइ है बहु पुत्र सम्पति सोइ।
जरि जाहिगी सब वासना भव विष्णु भक्त कहाइ,
यमराज के शिर पाउँ दे सुरलोक लोकिन जाइ ॥

(रामचन्द्रिका)

कामरूप

कामरूप के प्रत्येक चरण में ६, ७, १० पर यति, अन्त क्रमशः गुरु, लघु होता है। कुल मात्राएं २६ होती हैं। जैसे—

सित पच्छ सुदसमी, विजय तिथि सुर, वैद्य नखत प्रकास,
कपि भालु दल युत, चले रघुपति, निरखि समय सुभास।
तरु कुधर मुख नख, शस्त्रचित बुधि, वीर्य विक्रम प्रचंड,
नभ भूमि जहँ तहँ, भरे बनचर, रामकृष्ण अखंड ॥

(जगन्नाथ प्रसाद 'भानु')

पैदा कर जिस देश जाति ने तुमको पाला पोसा
किये हुए हैं वह निजहित का तुमसे बड़ा भरोसा।
उससे होना उऋण प्रथम है सत्कर्तव्य तुम्हारा,
फिर दे सकते हो वसुधा को शेष स्वजीवन सारा॥
(राम नरेश त्रिपाठी)

लज्जा की लाली फैली थी, भौंहें तनिक चढ़ी थीं,
ग्रीवा नीची थी पर आँखें, नृप की ओर बढ़ी थीं।
कहती थीं मानो वे उनसे, क्या हमको छोड़ोगे;
आर्यपुत्र दो दिन पीछे ही, क्या यह मुँह मोड़ोगे॥
(मैथिलीशरण गुप्त)

हरिगीतिका

सोलह दुआदस यति विरचि हरिगीतिका निर्मित करो।

हरिगीतिका छन्द में २८ मात्राएँ, १६, १२ पर यति होती है। अन्त में क्रमशः लघु, गुरु होते हैं। जैसे :—

खगवृन्द सोता है अतः कल-कल नहीं होना वहाँ,
बस मन्द मारुत का गमन ही, मौन है सोता जहाँ।
इस भाँति धीरे से परस्पर, कह सजगता की कथा,
यों दीखते हैं वृक्ष ये हों, विश्व के प्रहरी यथा॥
(मैथिलीशरण गुप्त)

इस भान्ति गद्‌गद् कण्ठ से तू रो रही है हाल में,
रोती फिरेंगी कौरवों की नारियाँ कुछ काल में।
लक्ष्मीसहित, रिपुरहित पाण्डव शीघ्र ही हो जायँगे-
निज नीच कर्मों का उचित फल दुष्टमति कौरव पायँगे॥
(जयद्रथ वध)

विधाता

इसमें २८ मात्रायें होती हैं। पहली, आठवीं और पन्द्रहवीं मात्रायें लघु होती हैं। १४, १४ पर यति होती है।

> जगीले जाति के सारे प्रबन्धों को टटोलेंगे,
> जनों को सत्य सत्ता की तुला से ठीक तोलेंगे।
> बनेंगे न्याय के नेगी खलों की पोल खोलेंगे,
> करेंगे प्रेम की पूजा, रसीले बोल बोलेंगे॥
>
> (नाथूराम शर्मा 'शंकर')

> न होती चाह तो तेरी दया का क्या पता होता ?
> इसी से दीन जन दिन रात हाहाकार करते हैं।
> हमें तू सींचने दे आंसुओं से पंथ जीवन का,
> जगत के ताप का हम तो यही उपचार करते हैं॥
>
> (रामनरेश त्रिपाठी)

महायौगिक जाति (८३२०४० भेद)

२६ मात्राओं की जाति।

मरहटा

दिसि वसु शिव कल यति अन्त गा ल रचि करिय मरहटा छन्द।

मरहटा छन्द में २६ मात्रायें, १०, ८, ११ पर यति और अन्त में क्रम से गुरु, लघु होते हैं। जैसे :—

देव तुम्हारे कई उपासक, कई ढंग से आते हैं,
सेवा में बहुमूल्य भेंट वे, कई रंग के लाते हैं।
धूम धाम से साज बाज से, वे मन्दिर में आते हैं,
मुक्तामणि बहुमूल्य वस्तुयें, लाकर तुम्हें, चढ़ाते हैं॥
(सुभद्रा कुमारी चौहान)

लावनी

लावनी छन्द ताटङ्क के समान ही होता है। भेद केवल यही है कि इसके अन्त में मगण नहीं होता।

गुणी जनों की मन्त्रौषधि से, चट पट उसका विष उतरे,
अपने मन्त्रों से गुणियों का, सर्वनाश यह किन्तु करे॥
दोनों के प्रतिकार तीन हैं, विद्वानों ने बतलाये,
मुख मर्दन या दांत तोड़ना, या हट जाना जब आये॥
(रूपनारायण पाण्डेय)

अश्वावतारी जाति (२१७८३०९ भेद)

३१ मात्राओं की जाति।

वीर आल्हा

आठ आठ पन्द्रह पर यति कर भाषौ वीर छन्द अभिराम।

वीर छन्द में ३१ मात्राएँ, १६, १५ पर यति और अन्त में गुरु, लघु होते हैं।

विशेष—इसे मात्रिक सवैया भी कहते हैं। आल्हा इसी छन्द में गाया जाता है। जैसे:—

पटक पादुका, पहनो प्यारे, बूट इटाली का लुकदार,
डालो डबल वाच पाकिट में, चमके चैन कंचनी चार।
रख दो गांठ गँठीली लकुटी, धाता बैंत बगल में मार,
मुरली तोड़ मरोड़ बजाओ, बाँको बिगुल सुने संसार॥
वैनतेय तज व्योमयान पर, करिये चारों ओर विहार,
फक फक फू-फू फूँको चुरटें, उगलें गाल धुआँ की धार।
यों उत्तम पदवी पटकारो, माधो मिस्टर नाम धराय,
चाँटो पदक नई प्रभुता के, भारत जातिभक्त हो जाय॥

(नाथूराम शर्मा 'शंकर')

जगनिक ने आल्हा इसी में बनाया है। जैसे :—

मुर्चा लौटो तब नाहर को, आगे बढ़े पिथौरा राय,
मौ सं. हाथिन के हलका माँ, घकले घिरे बनौजी राय।
सात लाख के घल्यो पिथौरा, नदी बेतवा के मैदान,
आठ कोस लौं चले सिरोही, नाहीं सूझै बढ़ुन विरान॥

(जगनिक)

लाक्षणिक जाति (३५२४५७८ भेद)

३० लक्षणाओं की जाति।

मानव जन्म अमोलक है मन !
व्यर्थ गँवाय भला क्यों खोवत।
श्री रघुनाथ चरण नहिं सेवत,
फिरत कहा तू इत उत जोहत।
जब लगि शरणागत ना प्रभु की,
तब लगि भव बाधा तुहि बाधत।
पापपुञ्ज हों छार छनक में,
शुभ श्री राम नाम आराधत॥
(भानु कवि) परिवर्तित

विशेष—कई आचार्य 'अन्त में भगण हो' इस नियम को आवश्यक नहीं मानते। उनके मत में नीचे लिखा पद्य भी उदाहरण हो सकता है।

यमी तट तट नव निर्मल थल,
अनुपम अति रमनीक सुहायो।
स्याम सलिल कालिन्द कलित जहँ,
लोल लहिर हरि चितहिं लुभायो।
खगनन मधुर कोर कोकिल कल,
कुञ्जन कुञ्ज पुञ्ज छवि छायो।
अन व्रजवास 'विहार' भाग्यवस,
पुण्यवान काहू नर पायो॥
(विहारी लाल भट्ट)

सूचना—यह छन्द चौपाई का द्विगुण रूप होता है।

मात्रादण्डक-प्रकरण

३२ मात्राओं तक के मात्राछन्द पहले लिखे जा चुके हैं। ३२ मात्राओं से अधिक मात्राएँ यदि किसी छन्द में हों तो उसे मात्रा-दण्डक कहते हैं।

नीचे कुछ प्रसिद्ध मात्रा-दण्डकों के लक्षण तथा उदाहरण लिखे जाते हैं।

३७ मात्राओं के छन्द

करखा

कला सैंतीस, वसु सूय वसु अंक यति
या करहु अन्त, 'करखा' बखानो ॥

करखा दण्डक में ३७ मात्रायें, ८, १२, ८, ९ पर यति और अन्त में यगण (।ऽऽ) होता है। जैसे:—

नमो नरसिंह, बलवन्त नरसिंह विभो,
सन्त हितकाज, अवतार धारो।
खम्भ ते निकसि, भू हिरन कश्यप पटक,
भटक दै नखन, भट उर विदारो॥

ब्रह्मा रुद्रादि सिर नाय जय जय कहत,
भक्त प्रहलाद निज गोद लीनो।
प्रीति सों थापि, दै राज, सुख साज सब,
नारायन ! दास वर अभय दीनो॥

(भानु कवि)

झूलना (द्वितीय)

मतिस मात्रा, यति दिशा, दस, दिशा मुनि,
यान्त रचिये, द्वितिय, झूलना होय।

झूलना दण्डक में ३७ मात्रायें, १०, १०, १०, ७ पर यति, और अन्त में यगण होता है। जैसे.—

जयति श्री जानकी, भक्तिदा ज्ञान की,
सिद्धि मनमान की दान वारी।
सिन्धु प्रन-पालिनी, दैत्य कुल घालिनी,
हँसगति चालिनी, राम-प्यारी॥

ध्यानअखिल व्यापिनी, लोक सब थापिनी,
सर्वथल व्यापिनी, दुःखहारी।
बसै सुख ध्यान उर, देव वरदान यह,
पाती विनवै 'विहारी'॥

(विहारी भट्ट)

सुभग

दस दसहु गति तें चालीस कल जान,
रच सुभग अभिराम, रच तगण पुनि अन्त।

सुभग दण्डक में ४० मात्राएँ १०, १०, १०, १० पर यति
अन्त में तगण होता है। जैसे:—

> कपोत-गुन वंक कर क्रोध भनु टंक,
> सुन कंत गढ़ लंक यश जूप विचलंत।
> मनमुक्त करि चाहि, ले सार तन दाहिं,
> छुट भूमि महराहिं, मट स्थान सरकन्त॥
> चहुँ ओर उदभट कविभट समघट,
> धरिकट यम शब्द सु 'विहार' भाषन्त॥
> भर छोड़ अतिचण्ड, दस सीस सिर खण्ड,
> रघुवीर बलवण्ड रनजीत राजन्त॥ (साहित्यसागर)

विजया

दसन दस कलन की छन्द विजया यती,
रगण पुनि अन्त दे श्रुतिमधुर भावहीं।

१०, १०, मात्राओं के ४ विरामों से ४० मात्राओं का विजया छन्द होता है। अन्त में रगण (ऽ । ऽ) रखने से विशेष श्रुतिमधुर हो जाता है। जैसे :—

> सित कमल वंश सी, शीत कर अंश सी,
> विमल विधि हंस सी, हरि वर हार सी।
> सत्य गुण सत्वसी, सति रस तत्व सी,
> ज्ञान गौरत्व सी, सिद्धि विस्तार सी॥

कुन्द सी कास सी, मागती वाग सी,
सुर सर निहार सी, सुधा रस सार सी।
गंगा जल धार सी, रजत के तार सी,
कीर्ति तव विजय की शंभु आगार सी॥
(छन्दोऽर्णव दास)

विशेष—स्मरण रहे कि इसके चारों पादों में वर्ण-संख्या समान नहीं होनी चाहिये। ऐसा होने से यह वर्ण दण्डकों के भेदों में से एक भेद हो जायगा।

विनय

इसमें ४४ मात्राएं होती हैं। १२, १२, १२, ८ पर यति होती है। अन्त में बहुधा रगण (ऽ। ऽ) होता है।

महात्मा तुलसीदास की विनयपत्रिका में यह दण्डक विशेष पाया जाता है। जैसे —

जय जय जग जननि देवि ! सुर-नर-मुनि-असुर सेवि।
भुक्ति मुक्ति दायिनि ! भयहरनि ! कालिका।
मंगल मुद सिद्धि सदनि, पर्वसर्वरीश वदनि।
ताप - तिमिर - तरन - तरनि - मालिका॥
वर्म चर्म कर कृपान, सूल सेल धनुष बान,
धरनि, दलनि दानव - दल - रन करालिका।
पूतना पिशाच प्रेत, डाकिनि शाकिनि समेत,
भूत ग्रह बेताल खग, मृगालि जालिका॥
(विनयपत्रिका)

हरिप्रिया

सूरज थिक दिसि विराम, अन्त चरण गुरु धाम,
रचो रे हरिप्रियाहि चंचरीक जानो ॥

हरिप्रिया दण्डक में ४६ मात्राएं होती है १२, १२, १२, औ १० पर यति होती है। इसका अन्तिम वर्ण गुरु (ऽ) होता है।

इसका अन्य नाम चंचरीक है।

सोहतें कृपा निधान, देव देव रामचन्द्र,
भूमि पुत्रिका समेत, देव चित्त मोहै।
मानो सुर तरु समेत, कल्पवेलि छवि निकेत,
शोभा श्रृङ्गार किधों, रूप धरे सोहै॥
लक्ष्मीपति लक्ष्मीयुति, देवियुति ईश किधौं,
छायायुत परम ईश, चारु वेश राखै।
वन्दों जगमात तात, चरण युगल नीरजात,
जाको सुर सिद्धि विद्य, मुनि जन अभिलाखै॥

(भानु)

अर्धसम-मात्रा-छन्द प्रकरण

विषम विषम, सम सम चरण,
तुल्य अर्धसम जान॥

जिस मात्रिक छन्द के विषम (१,३) पाद विषमों से, और सम (२, ४) पाद समों से मिलते हों उनको अर्धसम कहते हैं।

मात्रा-अर्धसम छन्दों को लिखने की रीति यह है कि इन्हें दो पंक्तियों में लिखा जाता है। पहली पंक्ति में प्रथम तथा द्वितीय पाद होता है। इसे पूर्वदल या पूर्वार्ध कहते हैं। दूसरी पंक्ति में तीसरा और चौथा पाद लिखा जाता है। इसे उत्तरदल या उत्तरार्ध कहते हैं।

बरवै

विषमनि रवि कल बरवै
सम मुनि जान॥

बरवै छन्द के विषम (१, ३) पादों में १२ मात्रायें होती हैं। सम पादों में (२, ४) में सात सात मात्रायें होती हैं और सम पादों के अन्त में जगण (।ऽ।) होता है। परन्तु तगण (ऽऽ।) का प्रयोग भी पाया जाता है। जैसे—

कवि समाज को विरवा, भलो लगाइ। = १९ मात्रा
सींचन की सुधि लीजो, मुरझि जाइ॥ = १९ मात्रा (भानु)
अवधि शिला का उर पर, था गुरु भार।
तिल तिल काट रही थी, दृग-जलधार॥ (साकेत)

बरवै रामायण इसी छन्द में लिखा हुआ है।

अतिबरवै

विषमनि रवि अतिबरवै,
सम निधि कल जान॥

अतिबरवै विषम पादों में १२, १२ मात्रायें, सम पादों में ९, ९ मात्रायें होती हैं। जैसे—

कवि समाज को विरवा चलो लगाय।
सींचन की सुधि लीजे, कहुँ मुरझि न जाय॥ (भानु)

दोहा

तेरह विषम, न जादि है, सम शिव दोहा लान्त।

दोहा के विषम पादों (१, ३) में १३ मात्राएं होती हैं और आदि में जगण नहीं होना चाहिए। सम (२, ४) पादों में ११ मात्राएं होती हैं तथा अन्त में लघु होना आवश्यक है। जैसे:—

> मोर मुकुट कटि काछनी, कर मुरली उर माल।
> यहि बानिक मो मन बसै, सदा बिहारीलाल॥
> (बिहारीलाल)

दोहा छन्द हिन्दी के सब छन्दों से अधिक सर्वप्रिय है। कबीर, तुलसी, बिहारी आदि सभी कवियों ने इसे अधिक अपनाया है।

विशेष—दोहा में विषम पाद के आरम्भ में जगण नहीं होना चाहिये। अन्त में सगण, रगण, नगण में से कोई गण हो सकता है।

इसी प्रकार सम पादों के अन्त में जगण और तगण में से कोई हो सकता है।

सोरठा

सम तेरह, विषमेश, दोहा उलटा सोरठा।

सोरठा छन्द के विषम (१, ३) पाद में ग्यारह ग्यारह मात्र और सम (२, ४) में तेरह तेरह मात्राएं होती हैं।

सोरठा छन्द दोहा का उल्टा होता है अर्थात् दोहा के १, ३ पा सोरठा के २, ४ पाद हो जाते हैं और दोहा के २, ४ पाद सोरठा १, ३ पाद बनते हैं। जैसे:—

जेहि सुमिरत सिधि होय, गन नायक करि वर बदन।
करहु अनुग्रह सोय, बुद्धि राशि शुभ गुण सदन॥

(तुलसीदास)

फूले फले न बेत, यदपि सुधा बरसहिं जलद।
मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलहिं विरञ्चि सम॥

उल्लाल

विषमनि पन्द्रह, सम तेरहा,
कल जानो उल्लाल कर॥

उल्लाल छन्द के पहले और तीसरे पाद में १५ मात्राएं और दूसरे और चौथे पाद में १३ मात्राएं होती हैं। जैसे:—

हम जिधर कान देते उधर, सुन पड़ता हमको यही।
जय जय भारतवासी कृति, जय जय जय भारतमही॥

(सियारामशरण गुप्त)

विशेष—कुछ लोग विषम और सम दोनों में १३, १३ मात्राएं मानते हैं। परन्तु इसकी अपेक्षा उल्लिखित १५, १३ का उल्लाल अधिक मनोहर होता है।

दूसरे प्रकार का उल्लाल :—

सभी जातियां वेग से, हैं आगे को बढ़ रहीं।
चट पट उन्नति शिखर पर, झपट झपट कर चढ़ रहीं॥

(रूपनारायण पाण्डेय)

इसमें १३, १३ मात्राएं हैं। एक दल में २६ मात्राएं हैं।

विषम-मात्रा-छन्द प्रकरण

जिन मात्रा-छन्दों के चारों चरणों के लक्षण समान नहीं उन्हें विषम-मात्रा-छन्द कहते हैं। इनमें से कुछ छन्द नीचे दिये जाते हैं :—

अमृतधुनि

अम्मृत धुनि दोहा प्रथम, चौबिस कल सानन्द।
आदि अन्त पद गुरु धरि, स्वच्छचित्त रच छन्द॥
स्वच्छचित्त रच छन्ददध्वनि लरि पद्दलि धरि।
गाजज्जमक तिवाजज्क्कमक सुजामम्मद्धरि॥
पद्दरि सिर विद्वज्जन कर युद्दद्ध्वति धुनि।
चित्तथिर करि सुद्धिद्धरि कह यों अम्मृत धुनि॥

(भानु कवि)

अमृतध्वनि छन्द ६ पादों का होता है। अतः इसे षट्पद कहते हैं। इसके प्रथम दो पाद दोहा से बनते हैं अर्थात् दोहा का पूर्वार्ध इस का प्रथम पाद होता है और उत्तरार्ध का दूसरा पाद बनता है। शेष चार पादों में प्रत्येक में २४ मात्राएं होती हैं और यति आठ पर होती है। इस प्रकार ६ पाद बनते हैं। इनमें से अन्तिम चार पादों में प्रत्येक पाद में तीन तीन बार आठ आठ मात्राओं वाला वृत्त्यनुप्रास होता है। प्रथम पाद के प्रारम्भ में जो शब्द होता है वही इसका अन्तिम शब्द—छठे पाद के अन्त में—होता है। दोहे के चतुर्थ पाद की अमृतधुनि के तीसरे पाद के आरम्भ में पुनरावृत्ति होती है।

इस छन्द का प्रयोग वीर रस में ही होता है

ऊपर लिखा हुआ छप्पय भी अमृतध्वनि का उदाहरण हो सकता है। अन्य उदाहरण देखिये—

> भूव पर भूप बलिष्ट, ध्रति सावन्तसिंह नरेन्द्र ।
> घघ्घरओघर घन हन्यो दद्दपट मृगेन्द्र ।
> दद्दपट मृगेन्द्रस्कपट झमक्कर वर ।
> जर्यद्द जुयल उपचहिं उपल सुरंपहिं तरवर ॥
> चल्लिय चुपक, भरल्लिय तुपक, तुघल्लिय तिद्दि पर ।
> हन्नत हिरय भभक्कत गिरिव, ढुर्ढक्कत भुवपर ॥
>
> (साहित्यसागर)

कुंडलिया

> धरिये चौबीस मत्त के षट पद बुद्धि प्रमान ।
> दो पद दोहा के करौ, चौपद रौला मान ॥
> चौपद रौला मान छन्द की लय पहचानो ।
> आदि अन्त के शब्द, एक सम हौं छवि आनौ ॥
> 'कवि बिहारि' यह माहिं रीति कुण्डल की करिए ।
> जुरह गूँज से गूँज नाम कुण्डलिया धरिये ॥
>
> (बिहारीलाल भट्ट)

इस छन्द में भी ६ पाद होते हैं इसके प्रारम्भ में दोहा होता है। दोहे के पूर्वदल से कुण्डलिया का प्रथमपाद बनता है। दोहे के उत्तर दल से इसका द्वितीय पाद बनता है। इसके आगे के चारों पाद रोला छन्द के चार पाद होते हैं। कुण्डलिया के ६ पादों में प्रत्येक पाद में २४ मात्राएं होती हैं। दोहा और रोला की व्यवस्था पूर्व की जा चुकी है।

दोहा का प्रारम्भिक शब्द छठे पाद के अन्त में पुनः लाया जाता है। रोला के प्रथम पाद के आरम्भ में दोहा के चतुर्थपाद की आवृत्ति अवश्य होनी चाहिए।

यह छन्द बहुत लोकप्रिय है। कविवर गिरधर राय की कुण्डलियाँ आदर्श मानी जाती हैं। जैसे :—

> बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुध लेय।
> जो बनि आवे सहज में, ताही में चित देय॥
> ताहि में चित देय, बात जोही बन आवे।
> दुरजन हँसे न कोइ, चित्त में खेद न पावे॥
> कह गिरधर कविराय, यहै कर मन परतीती।
> आगे को सुख होय समुझ बीती सो बीती॥

किञ्च —

> बगला बैठा ध्यान में, प्रातः जल के तीर।
> मानो तपसी तप करे, मलकर भस्म शरीर॥
> मलकर भस्म शरीर, तीर जब देखी मछली।
> कहै 'मीर' ग्रसि चोंच, समूची फौरन निगली॥
> फिर भी आवें शरण, वैर जो तज के अगला।
> उनके भी तू प्राण हरे रे, छी ! छी ! बगला॥

छप्पय

> रोला के पद चार मत्त चौबीस धारिये।
> उल्लाला पद दोय अन्त माहीं सुधारिये॥

छप्पय में ६ पाद होते हैं। इनमें से पहले चार रोला के (२४,२४) मात्राओं के होते हैं। अन्तिम दो पाद उल्लास के २८, २८, अथवा २६

२६ मात्राओं के होते हैं। अतः उल्लाला के दो भेदों के कारण छप्पय के भी दो भेद हो गये। क्रमशः उदाहरण:—

(१)

नीलाम्बर परिधान, हरित पट पर सुन्दर है।
सूर्य-चन्द्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकर है॥
नदियाँ प्रेम प्रवाह, फूल तारे मण्डन है।
बन्दीजन खग वृन्द, शेष फन सिंहासन है॥ } ११+१३=२४ रोला

करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस वेष की,
हे मातृ-भूमि! तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की। } १५+१३=२८ उल्लाला

(मैथलीशरण गुप्त)

(२)

उज्ज्वल हिम का रम्य, रूप तज कर गलती है।
जन्मभूमि को छोड़, शीघ्रता से चलती है॥
अचल पिता का सभी, प्रेम पीछे रहता है।
करके यह परित्याग, हृदय सब कुछ सहता है॥ } ११+१३=२४ रोला

पड़ता जो कुछ मार्ग में, करती मटियामेट है।
जिससे करने जा रही, तरंगिणी! तू भेंट है॥ } १३+१३=२६ उल्लाला

(राय कृष्णदास)

आर्या-प्रकरण

आर्या-प्रकरणमें जो मात्राछन्द कहे जाते हैं वे सब संस्कृत में ही प्रयुक्त होते हैं। हिन्दी में इनका प्रयोग अभावरूप है। अतः इन छन्दों का भी यहाँ दिग्दर्शन ही कराया जाता है।

आर्या

*पहले तीजे बारा, दूजे नौ नौ कलान का युग हो।
चौथे पंद्रा जानो, मुनिवर भाषित सु आर्या हो॥

जिसके पहले और तीसरे पाद में १२, १२ मात्राएं हों, दूसरे में १८ और चौथे में १५ मात्राएं हों उसे आर्या कहते हैं।

विशेष—इसके विषम स्थान के गणों में (१, ३, ५, ७ में) जगण वर्जित है। अन्त में गुरु आना चाहिये।

---

*श्रुतबोध—
यस्याः पादे प्रथमे द्वादश मात्रास्तथा तृतीयेऽपि।
अष्टादश द्वितीये, चतुर्थके पंचदश सार्या॥
(कालीदास)

इसे 'गाहा' या 'गाथा' भी कहते हैं।

जैसे :—

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ग

रामा रामा रामा, आठौं यामा जपो यही नामा।

१ २ ३ ४ ५ ६ ग

त्यागौ सारे कामा, पैहौं बैकुण्ठ विश्रामा॥

(भानु)

जिस प्रकार यहाँ गण-गणना की है उसी प्रकार अन्य उदाहरणों में भी जानो। उल्लिखित लक्षण-पद्य में इसी प्रकार गण-गणना हो सकती है।

गीति

आर्या के यदि पहले, दल का रूप लखे दोनों दल में।
ऋषिवर पिंगल कहते, छन्द उसे है सु 'गीति' कविता में॥

यदि आर्या के पूर्वार्ध का लक्षण उत्तरार्ध में भी पूरा पूरा घटे तो उस छन्द को गीति कहते हैं।

इसे उद्गाथा उग्गाहा भी कहते हैं। जैसे:—

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ग

करुणे क्यों रोती है? उत्तर में और अधिक तू रोई।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ग

मेरी विभूति है जो, उसको 'भवभूति' क्यों कहे कोई?

उपगीति

आर्या के यदि दूजे, दल की गति लिखे द्वि दलों में।
मुनिवर पिंहल कहते, उपगीति उसे कवित्व में॥

यदि आर्या छन्द के द्वितीय दल का लक्षण दोनों दलों में घट जाये तो उसे उपगीति कहते हैं।

उल्लिखित लक्षण-पद्य भी उदाहरण है। अन्य उदाहरण देखिये—

१ २ ३ ४ ५ ल ६ ग
। ऽ
रामा रामा रामा, आठों यामा जपौ रामा ।
१ २ ३ ४ ५ ल ६ ग
। ऽ
छांड़ो सारे कामा, पै हो धन्ते सुविश्रामा ॥

(भानु कवि)

उद्गीति

६
१ २ ३ ४ ५ ल ७
।
मत्तु विषम गण ध न हो, योग मुनि लघु दिय पदरीती।
१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ग
स्पष्ं पाण य सु दोषा, या विधि पण्डित रचो जु उद्गीती॥

जिसके विषम (१, ३) पादों में १२ (भानु = १२) मात्राएँ हों, दूसरे पाद में (योग ८+मुनि ७) १५ मात्राएँ हों, और चौथे पाद में (वसु ८+दोष १०) १८ मात्राएँ हों उसे उद्गीति कहते हैं। विषम गणों में ज (जगण) न हो।

जैसेः—

६ ग
१ २ ३ ४ ५ ल ७ ऽ

मन में रख ममता को, पर हित कर जीवन सफल हो ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ज ७ ग ऽ

जो प्रश्न सामने हो, हल हो जब तक नहीं तुझे कल हो ॥

(मान)

आर्यागीत

१ २ ३ ४ ५ ६ ज ७ ग ग ऽ ऽ

आ र्या के हों पहले, दल में गुरु एक और जोड़ें ता में।

१ २ ३ ४ ५ ६ ज ७ ग ग ऽ ऽ

रच दूसरा प्रथम सम, आर्या गीती कहो उसे जानी में ॥

(जाति = मात्रा छन्द)

यदि आर्या के प्रथम दल में एक और एक गुरु बढ़ा दिया जाय और दूसरा दल भी इसी प्रकार का हो तब आर्यागीति नामक छन्द होता है।

यह छप्पय-पद्य ही इसका उदाहरण है, अन्य उदाहरण देखिये—

१ २ ३ ४ ५ ६ ज ७ ८

ऽ ऽ

जय जय राधा माधव, श्री हरि जदु पति कृपालु गोविन्दा है।

१ २ ३ ४ ५ ६ ल ७ ८

ऽ ऽ

जय जय परमा नन्दा, भज श्री ब्रज पूर्ण चन्द सानन्दा है॥

(बिहारी लाल भट्ट)

पिङ्गल-पीयूष

चतुर्थ अध्याय

प्रत्यय-प्रकरण

प्रत्यय

प्रत्यय का अर्थ है ज्ञान। ज्ञान के साधन को भी प्रत्यय कह सकते हैं। छन्द-शास्त्र में प्रत्यय का अर्थ है—वे साधन जिनसे हमें छन्दों के भेद, उनकी संख्या, उनके पृथक् पृथक् रूप आदि का बोध हो।

प्रत्यय के भेद

प्रत्यय ९ प्रकार के होते हैं:—१ सूची, २ प्रस्तार, ३ नष्ट, ४ उद्दिष्ट, ५ पाताल, ६ मेरु, ७ खण्ड मेरु, ८ पताका और ९ मर्कटी।

इन ९ प्रत्ययों में से भी निम्न लिखित चार प्रत्यय ही उपयोगी हैं। शेष सब का इन्हीं चारों में अन्तर्भाव हो जाता है।

१ सूची, २ प्रस्तार, ३ नष्ट, ४ उद्दिष्ट ॥

१ सूची

वर्णछन्दों या मात्राछन्दों की भिन्न भिन्न जातियों के भेदों की यदि पूर्ण संख्या जाननी हो तो उसका ज्ञान सूची से होता है। इसका अन्य नाम संख्या भी है। यदि हमसे कोई पूछे कि ४ अक्षरों या ४ मात्राओं की जाति के सारे भेद कितने होते हैं, तो उसका ज्ञान सूची से हो सकता है।

(क) वर्णछन्दों की सूची

जितने अक्षरों के छन्दों की जाति के भेदों की संख्या जाननी हो उतनी संख्यायें क्रम से एक पंक्ति में लिख लो। यदि हमें कोई पूछे कि सात अक्षरों की जाति के कितने भेद होते हैं, तो हमें नीचे लिखे ढङ्ग से ७ तक संख्याएं एक पंक्ति में लिखनी चाहिएँ:—

१, २, ३, ४, ५, ६, ७

फिर इस एक अंक के नीचे २ लिखो। फिर इस २ को दुगुना करके (२ + २ = ४) ४ को दो के नीचे लिखो। फिर इसे दुगुना करके (४ + ४ = ८) तीन के नीचे लिखो। इस प्रकार क्रम से प्रथम संख्या को दुगुना करके आगे लिखते जाओ। अन्तिम संख्या, जो सात सात के नीचे लिखोगे, वे सात वर्णों के छन्दों की पूर्ण संख्या होगी। जैसे:—

वर्ण संख्या	१	२	३	४	५	६	७
भेद संख्या	२	४	८	१६	३२	६४	१२८

उल्लिखित सूची से यह स्पष्ट विदित हो जाता है कि ७ अक्षरों की जाति के सारे भेदों की पूर्ण संख्या १२८ है। इसी प्रकार अन्य वर्णछन्दों के भेदों का भी ज्ञान हो सकता है।

(ख) मात्राछन्द सूची

जैसे वर्णछन्दों के ज्ञान के लिये अङ्क-संख्या एक पंक्ति में लिखी जाती है, उसी प्रकार मात्राछन्दों के भी। यदि हमसे पूछा जाय कि सात मात्राओं की जाति के कितने भेद होते हैं, तो हमें चाहिये कि उसी प्रकार एक पंक्ति में क्रम से सात तक संख्यायें लिख लेवें। जैसे:—

१, २, ३, ४, ५, ६, ७

फिर एक के नीचे एक, दो के नीचे दो और तीन के नीचे तीन लिखिए। इससे आगे के अङ्कों के नीचे पहली दो दो संख्याओं का योग करके लिखते जाइए। जो अन्तिम संख्या होगी वह सात मात्राओं के छन्दरूपों की पूर्ण संख्या होगी।

मात्रासूची चित्र

मात्रा संख्या	१	२	३	४	५	६	७
भेद संख्या	१	२	३	५	८	१३	२१

इससे ज्ञान हो गया कि सात मात्राओं की जाति के कुल भेद २१ होते हैं। ६ मात्राओं की जाति के भेद १३ होते हैं। इसी प्रकार सब मात्रा छन्दों के भेदों की पूर्ण संख्या जान सकते हैं।

---

(२) दूसरी पंक्ति में बाईं ओर से जो सब से पहला गुरु हो उसके नीचे लघु (।) का चिह्न डाल दो। उसके आगे जैसा ऊपर हो वैसा ही नीचे लिख दो। जैसे :—

दो अक्षर जाति	तीन अक्षर जाति	चार अक्षर जाति
ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
। ऽ	। ऽ ऽ	। ऽ ऽ ऽ

(३) अब तीसरी पंक्ति को भरना हो तो ऊपर वाली दूसरी पंक्ति को देखो। उसमें बाईं ओर जो सबसे पहला गुरु हो उसके नीचे लघु डाल दो। इस लघु के दाहिनी ओर जैसे ऊपर है वैसे ही नीचे लिख दो। इस लघु के बाईं ओर गुरु लिख दो। जैसे :—

दो अक्षर जाति	तीन अक्षर जाति	चार अक्षर जाति
ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
। ऽ	। ऽ ऽ	। ऽ ऽ ऽ
ऽ ।	ऽ । ऽ	ऽ । ऽ ऽ

(४) इसके आगे की चौथी, पाँचवीं, छठी—आदि पंक्तियाँ भी इसी प्रकार नियम (३) के अनुसार भरते जाओ। जब तक अन्त में सब लघु न आ जायँ तब तक यही क्रम जारी रखो। अन्तिम रूप की पहचान यह है कि उसमें सब लघु अक्षर ही होंगे। जैसे :—

अत्युक्ता (दो वर्णों का प्रस्तार)	
सं०	रूप
१	S S
२	I S
३	S I
४	I I

मध्या (३ वर्णों का प्रस्तार)	
सं०	रूप
१	S S S
२	I S S
३	S I S
४	I I S
५	S S I
६	I S I
७	S I I
८	I I I

प्रतिष्ठा (४ वर्णों का प्रस्तार)	
सं०	रूप
१	S S S S
२	I S S S
३	S I S S
४	I I S S
५	S S I S
६	I S I S
७	S I I S
८	I I I S
९	S S S I
१०	I S S I
११	S I S I
१२	I I S I
१३	S S I I
१४	I S I I
१५	S I I I
१६	I I I I

सुप्रतिष्ठा (पञ्चाक्षरा जाति)			
सं०	रूप	सं०	रूप
१	S S S S S	१७	S S S S I
२	I S S S S	१८	I S S S I
३	S I S S S	१९	S I S S I
४	I I S S S	२०	I I S S I
५	S S I S S	२१	S S I S I
६	I S I S S	२२	I S I S I
७	S I I S S	२३	S I I S I
८	I I I S S	२४	I I I S I
९	S S S I S	२५	S S S I I
१०	I S S I S	२६	I S S I I
११	S I S I S	२७	S I S I I
१२	I I S I S	२८	I I S I I
१३	S S I I S	२९	S S I I I
१४	I S I I S	३०	I S I I I
१५	S I I I S	३१	S I I I I
१६	I I I I S	३२	I I I I I

ऊपर लिखे प्रस्तार के रूपों से विदित हो जाता है कि अमुक जाति में कितने भेद हो सकते हैं और उनके कौन कौन से रूप हो सकते हैं। छन्दःशास्त्र में किसी भी जाति के सारे भेदों के लक्षण तथा नाम नहीं दिये और न दिये ही जा सकते हैं। उनका परिज्ञान प्रस्तार से हो सकता है।

मात्राप्रस्तार-विधि

(१) मात्राप्रस्तार भी वर्णप्रस्तार के समान ही बनाया जाता है। भेद केवल इतना है कि जितनी मात्राओं का प्रस्तार लिखना हो उतनी मात्राओं को गुरु में घटा कर देखो कि कितने गुरुओं में वे मात्राएं समा सकती हैं। जैसे २ मात्राएं एक गुरु में और चार मात्राएं २ गुरुओं में आ सकती हैं। जितने गुरुओं में वे मात्राएं आ सकें उतने ही गुरु प्रथम पंक्ति में लिखिये। सम मात्राओं में तो यह बात सरलता से बन जाती है। परन्तु विषम मात्रा-छन्दों में सब मात्राएं गुरुओं में समा नहीं सकतीं। जैसे यदि ३ या ५ मात्राओं की जाति का प्रस्तार लिखना हो तो तीन मात्राओं में गुरु एक ही आ सकता है और पाँच मात्राओं में गुरु दो ही हो सकते हैं, अधिक गुरु रखने से मात्राएं बढ़ जायेंगी। अतः एक एक मात्रा के लिये लघु रखना पड़ेगा। सारांश यह है कि विषम मात्रा वाली जाति के प्रस्तारों में प्रथम पंक्ति में पहले बाईं ओर एक लघु होगा। तदनन्तर गुरु रखिए। सममात्रा छन्दों में गुरु ही प्रथम पंक्ति में होंगे। जैसे:—

—	४ मात्रा प्रस्तार	५ मात्रा प्रस्तार
प्रथम रूप	ऽ ऽ	।ऽ ऽ

(४) यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि जितनी मात्राओं का प्रस्तार हो प्रत्येक पंक्ति में मात्राएँ उतनी न घटें, और बढ़ें भी नहीं।

(५) दूसरी पंक्ति लाने के लिए पहले गुरु के नीचे लघु लिखो। इस लघु की दाईं ओर ऊपर के समान नीचे उतार दो। और बाईं ओर गुरु रख दो। परन्तु यदि लघु के नीचे गुरु लिख देने से मात्राओं में न्यूनता आ जाती हो तो जितनी मात्राओं की कमी हो उतने लघु फिर बाईं ओर रक्खो। यदि बाईं ओर लघु के नीचे गुरु रखने से एक मात्रा बढ़ जाती हो तो लघु के नीचे लघु ही रख दो। यदि लघु के नीचे गुरु या लघु रखने के बिना भी मात्राएँ पूरी हो जाती हों तो उसे खाली छोड़ दो। जैसेः—

	४ मात्रा प्रस्तार		५ मात्रा प्रस्तार
१	ऽऽ	१	।ऽऽ
२	।।ऽ	२	ऽ।ऽ
३	।ऽ।	३	।।।ऽ

यहाँ चार मात्राओं के प्रस्तार में दूसरी पंक्ति में बाईं ओर मात्रा पूरी करने के लिए एक लघु बढ़ाया गया है। इसी प्रकार तीसरी पंक्ति में जानो।

यह क्रम तब तक जारी रहना चाहिये जब तक कि सब लघु न आ जावें। सब लघुओं का रूप अन्तिम रूप होता है। यहीं प्रस्तार समाप्त होता है।

मात्रा प्रस्तार चित्र

त्रिमात्रिक प्रस्तार		चतुर्मात्रिक प्रस्तार	
सं०	रूप	सं०	रूप
१	। S	१	S S
		२	। । S
२	S ।	३	। S ।
		४	S । ।
३	। । ।	५	। । । ।

पंच-मात्रिक प्रस्तार		षटमात्रिक प्रस्तार	
सं०	रूप	सं०	रूप
१	। S S	१	S
२	S । S	२	। । S S
३	। । । S	३	। S । S
		४	S । । S
४	S S ।	५	। । । । S
		६	। S S ।
५	। । S ।	७	S । S ।
		८	। । । S ।
६	। S । ।	९	S S । ।
		१०	। । S । ।
७	S । । ।	११	। S । । ।
		१२	S । । । ।
८	। । । । ।	१३	। । । । । ।

आधा करते तथा लघु-गुरु चिह्न लगाते जाओ। नष्ट रूप का ज्ञान हो जायगा।

उदाहरणः—६ वर्णों के प्रस्तार में १४ वां रूप बतलाओ।

(१) यहाँ नष्ट रूप की संख्या १४ है। यह सम है। अतः पहले लघु रक्खो :—

१
।

अब १४ को आधा किया तो ७ हुआ। यह विषम संख्या है अतः दूसरे स्थान पर गुरु दिया :—

१	२
।	ऽ

अब सात विषम संख्या है। अतः इसमें १ जोड़ कर आधा किया तो ४ आये (७ + १=८ आधा ४)। यह सम है अतः तीसरे स्थान पर लघु लगाओ।

१	२	३
।	ऽ	।

फिर चार का आधा करो। उत्तर २ आया—यह सम है। अतः उसके आगे लघु लगाओ।

१	२	३	४
।	ऽ	।	।

आधा करते तथा लघु-गुरु चिह्न लगाते जाओ। नष्ट रूप का ज्ञान हो जायगा।

उदाहरण—६ वर्णों के प्रस्तार में १४ वां रूप बतलाओ।

(१) यहां नष्ट रूप की संख्या १४ है। यह सम है। अतः पहले लघु रक्खो :—

१
।

अब १४ को आधा किया तो ७ हुआ। यह विषम संख्या है अतः दूसरे स्थान पर गुरु दिया :—

१	२
।	ऽ

अब सात विषम संख्या है। अत. इसमें १ जोड़ कर आधा किया तो ४ आये (७ + १=८ आधा ४)। यह सम है अतः तीसरे स्थान पर लघु लगाओ।

१	२	३
।	ऽ	।

फिर चार का आधा करो। उत्तर २ आया—यह सम है। अतः इसके आगे लघु लगाओ।

१	२	३	४
।	ऽ	।	।

पुनः ४ का आधा किया तो उत्तर १ आया । यह विषम है । अतः पाँचवें स्थान पर गुरु आवेगा ।

१	२	३	४	५
।	S	।	S	S

अब १ विषम संख्या है । इसमें १ जोड़ कर पुनः आधा किया तो पुनः एक १ शेष बचा । यह १ भी विषम संख्या है । अतः छठे स्थान पर गुरु आवेगा ।

१	२	३	४	५	६
।	S	।	।	S	S

यहाँ यह क्रिया समाप्त करनी चाहिये । क्योंकि ६ वर्णों की संख्या यहाँ पूरी हो जाती है ।

यही रूप (। S । । S S) ६ वर्ण के प्रस्तार का १४ वाँ भेद है ।

मात्रानष्टविधि

प्रश्न—७ मात्रा के प्रस्तार का ६ वाँ रूप बतलाओ ।

इसके लिये निम्न लिखित नियमों के अनुसार क्रिया करो :—

(१) जितनी मात्राओं के छन्द का नष्ट रूप जानना हो उतने ही लघु चिह्न एक पंक्ति में लिखिये । हमने सात मात्रा के छन्द का नष्ट रूप जानना है । अब सात लघु एक पंक्ति में लिखिये :—

(। । । । । । ।)

(२) बाईं ओर से सूची के अनुसार मात्रा सूची के भेदों की संख्या एक लघु के ऊपर क्रम से लिखिये । जैसे :—

१	२	३	५	८	१३	२१
।	।	।	।	।	।	।

(२) अब जितनी मात्राओं के छन्द का नष्ट (अज्ञात) रूप पूछा गया हो उतनी मात्राओं के निश्चित रूपों की संख्या से नष्ट की संख्या घटा दो।

यहाँ सात मात्रा के प्रस्तार का ६ वाँ रूप पूछा गया है। अतः सात मात्रा के प्रस्तार की पूर्ण संख्या २१ है, उसमें से ६ घटाये गये तो शेष १२ रहे।

अब देखिये; लघु चिह्नों के ऊपर जो अंक लिखे गये हैं उनमें से दाहिनी ओर से कौन २ से अंक घटाये जा सकते हैं ? दाहिनी ओर से सब से प्रथम २१, १३, हैं। वे तो १२ में से घटाये जा नहीं सकते। हाँ, तीसरा अंक ८ घटाया जा सकता है। अतः १२ में ८ घटाया तो शेष रहा ४। अब चार में से दाहिनी ओर से ३ घटाये जा सकते हैं। चार में से तीन गये तो शेष १ रहा। अब १ में से १ घटाया तो शून्य रहा। जब तक शून्य न आ जावे तब तक यह विधि करते रहना चाहिये। अब जिन अंकों में से घटाया गया है उनके नीचे गुरु के चिह्न लिखिये। अतः ८, ३, १, के नीचे गुरु लगाइए, शेष अंकों के नीचे लघु रहने दो। ऐसा करने से यह चित्र बनेगा:—

सूची पूर्णाङ्क संख्या	१	२	३	५	८	१३	२१
साधारण	I	I	I	I	I	I	I
	S	I	S	I	S	I	I

अब इतनी क्रिया करने के बाद यह करो कि गुरु चिह्नों के अनन्तर जो लघु चिह्न हैं उन्हें हटा दो। ऐसा करने से जो शेष रूप रह जायगा

यहाँ सात मात्रा के प्रस्तार का १ वाँ रूप होगा।

गुणां संख्या	१	२	३	५	८	१३	२१
लघु रूप	।	।	।	।	।	।	।
घटाने पर गुरु	ऽ	।	ऽ	।	ऽ	।	।
अन्तिम उत्तर	ऽ		ऽ		ऽ		।

यहाँ सात मात्राओं का प्रस्तार का १ वाँ रूप है।

उद्दिष्ट

उद्दिष्ट का अर्थ है—निर्दिष्ट या संकेतित। अर्थात् किसी प्रस्तार का वह रूप जो प्रश्नकर्त्ता ने दिया या बता दिया हो, उसकी प्रस्तार में क्या स्थिति है, यह कौन सा रूप है—यह बात जिस क्रिया से जानी जाय उसे उद्दिष्ट कहते हैं।

किसी दिए हुए रूप के विषय में यह बतलाना कि प्रस्तार में यह कौन सा रूप है, उद्दिष्ट कहलाता है।

रीति

यदि कोई प्रश्न करे कि प्रस्तार में ऽ ऽ । । यह कौन सा रूप है तो हमें सब से पहले यह रूप देखने से पता चल जाता है कि यह चार वर्णों के छन्द का रूप है। क्योंकि इसमें [illegible] है। [illegible] इस रूप को किसी कागज पर लिख लो। १
के ऊपर १ लिख दो, फिर दूसरे [illegible]
४ लिखो, पाँचवें रूप पर ८

अङ्क को दुगुणा करके आगे आगे लिखते जाओ। जितने चिह्न हों सबके ऊपर इसी प्रकार अङ्क लिखो।

१	२	४	८
ऽ	ऽ	।	।

अब लघु चिह्नों पर जो अङ्क हैं उन्हें जोड़ो और उस योगफल में १ और जोड़ दो। जो इसका योगफल होगा वही प्रस्तार में उद्दिष्ट रूप की संख्या होगी।

यहाँ लघु चिह्न के ऊपर ४ और ८ हैं। इनका (४+८=१२) योग १२ है। इसमें १ और बढ़ाया तो (१२+१=१३) १३ योगफल आया, यही १३ उत्तर है। अर्थात् चार वर्णों के प्रस्तार में ऽऽ।। यह १३ वाँ रूप है।

उदाहरण २—६ वर्णों के प्रस्तार में (।।ऽ।ऽ।) यह कौन सा रूप है।

इसके ऊपर भी उल्लिखित विधि से अङ्क लिखो—

१	२	४	८	१६	३२
।	।	ऽ	।	ऽ	।

अब लघु के ऊपर के चिह्नों को जोड़ो (१+२+८+३२=४३) ४३ उत्तर आता। इसमें १ और जोड़ो (४३+१=४४) यही प्रस्तार उल्लिखित रूप की है। अर्थात् ६ वर्णों के प्रस्तार में यह ४४ वाँ रूप है।

नोट—यहाँ यह स्मरण रखना चाहिये कि चिह्नों के ऊपर जो अङ्क लिखे गये हैं वे दूनों के बढ़ते क्रम हैं।

मात्रिक उद्दिष्ट-विधि

प्रश्न—सात मात्रा के प्रस्तार में (S । S । ।) यह कौन सा रूप है ?

(१) जिस रूप की संख्या जाननी हो पहले उस रूप को लिख लो। हमने सात मात्रा के प्रस्तार का यह रूप (S । S । ।) जानना है। इसे काग़ज़ पर लिखो।

(२) अब इन चिह्नों के ऊपर बाईं ओर से मात्रा-सूची के पूर्णाङ्क लिखो। अर्थात् एक मात्रा के छन्द का एक रूप होता है, २ मात्रा के छन्द के २ रूप होते हैं, ३ मात्राओं के छन्द के ३ रूप होते हैं, ४ मात्राओं के छन्द के ५ रूप, ६ मात्राओं के छन्द के ८ रूप होते हैं इत्यादि। यह हम पहले मात्रासूची प्रत्यय के प्रकरण में समझा आए हैं। इन अङ्कों को बाईं ओर से उन चिह्नों के ऊपर लिखो, जहाँ गुरु का चिह्न हो उसके ऊपर तथा नीचे भी लिखो।

एक मात्रा से लेकर ७ मात्रा तक के छन्दों के रूपों की संख्या यह है—१, २, ३, ५, ८, १३, २१ इन अङ्कों को क्रम से उल्लिखित रूप के चिह्नों के ऊपर तथा नीचे (नियमानुसार) लिखो। गुरु चिह्नों के ऊपर तथा नीचे और लघु चिह्नों के केवल ऊपर ही लिखो। प्रारम्भ बाईं ओर से करो। ऐसा करने से यह चित्र बन जाएगा :—

१	३	५	१३	२१
S	।	S	।	।
२		८		

(१) अब गुरु चिह्नों पर जो अङ्क हैं उन्हें जोड़ो। तब इस योगफल को सात मात्राओं की पूर्णाङ्क संख्या में से घटाओ। जो शेष रहे वही इस रूप की संख्या ७ मात्राओं के प्रस्तार में है।

गुरु चिह्नों के ऊपर १, ५ संख्यायें हैं। इनको जोड़ने से (१+५=६) योगफल ६ हुआ है। अब इस ६ को ७ मात्राओं के प्रस्तार की निश्चित संख्या २१ में से घटाया तो शेष १५ रहे। यही उत्तर है अर्थात् (ऽ। ऽ।।) यह रूप सात मात्राओं के प्रस्तार में १५ वाँ है।

अभ्यास

१. प्रत्यय कितने होते हैं ? प्रत्यय का अर्थ क्या है ?

२. किसी भी प्रस्तार के सारे रूपों की पूर्ण संख्या जानने की क्या विधि है ?

३. प्रस्तार के क्या लाभ हैं ? इसकी आवश्यकता को सिद्ध करो।

४. ११ मात्रा के प्रस्तार के सारे रूप लिखो।

५. १८ मात्रा के प्रस्तार का १२ वाँ रूप क्या होता है ?

६. ७ वर्णों का प्रस्तार लिखो !

७. नष्ट और उद्दिष्ट की क्या आवश्यकता है ?

८. ऽ।ऽ।।ऽऽ यह कितने वर्ण का कौन सा रूप है ?

९. २१ मात्रा के प्रस्तार का २१५ वाँ रूप बतलाओ।

मात्रिक उद्दिष्ट-विधि

प्रश्न—सात मात्रा के प्रस्तार में (ऽ । ऽ । ।) यह कौन सा रूप है ?

(१) जिस रूप की संख्या जाननी हो पहले उस रूप को लिख लो । हमने सात मात्रा के प्रस्तार का यह रूप (ऽ । ऽ । ।) जानना है । इसे काग़ज़ पर लिखो ।

(२) अब इन चिह्नों के ऊपर बाईं ओर से मात्रा-सूची के पूर्णाङ्क लिखो । अर्थात् एक मात्रा के छन्द का एक रूप होता है, २ मात्रा के छन्द के २ रूप होते हैं, ३ मात्राओं के छन्द के ३ रूप होते हैं, ४ मात्राओं के छन्द के ५ रूप, ६ मात्राओं के छन्द के ८ रूप होते हैं इत्यादि । यह हम पहले मात्रासूचा प्रत्यय के प्रकरण में समझा आए हैं । इन अङ्कों को बाईं ओर से उन चिह्नों के ऊपर लिखो, जहाँ गुरु का चिह्न हो उसके ऊपर तथा नीचे भी लिखो ।

एक मात्रा से लेकर ७ मात्रा तक के छन्दों के रूपों की संख्या यह है—१, २, ३, ५, ८, १३, २१ इन अङ्कों को क्रम से उल्लिखित रूप के चिह्नों के ऊपर तथा नीचे (नियमानुसार) लिखो । गुरु चिह्नों के ऊपर तथा नीचे और लघु चिह्नों के केवल ऊपर ही लिखो । प्रारम्भ बाईं ओर से करो । ऐसा करने से यह चित्र बन जाएगा :—

१	३	५	१३	२१
ऽ	।	ऽ	।	।
२		८	।	

आवश्यकता के आधार पर नये नये पदार्थों का आविष्कार किया है। इसी नियम के आधार पर काव्यजगत् में भी नवीन छन्दों की सृष्टि का होना स्वाभाविक था। हिन्दी के वर्तमान युग में जो काव्यजगत् में विकास हुआ है उसे देखने से पता चलता है कि तीन प्रकार के और नये छन्द हिन्दी में आविष्कृत हुये हैं। एक उभय वृत्त, दूसरे मुक्तक, तीसरे लयात्मक, अथवा स्वच्छन्द।

इन तीनों प्रकार के छन्दों की कुछ व्याख्या यहाँ की जाती है।

(१) उभयवृत्त

उभय वृत्त वे पद्य हैं जिनमें वर्णवृत्त और मात्रिकवृत्त दोनों की विशेषताएं पाई जायें। अर्थात् यदि वर्णगणना की जाय तो भी छन्द ठीक उतरे और यदि मात्राओं के आधार से विचार किया जाय तो भी छन्द ठीक घटे। यह ठीक है कि ऐसे पद्य लिखना कठिन है। परन्तु तो भी स्वर्गीय पण्डित नाथूराम शर्मा 'शंकर' ने ऐसे अनेकों छन्द लिखे जिनमें उभयविध व्यवस्था स्पष्ट दीख रही है। उन्होंने मार्ग निर्देश कर दिया है। इस कविवर ने ऐसे पद्य लिखे हैं जो हैं तो मात्रिक परन्तु साथ ही उनमें मात्राओं के साथ साथ चारो पादों में वर्ण संख्या भी समान है। ऐसे पद्यों को उभयवृत्त कहा जा सकता है। छन्दः-शास्त्र में उभयवृत्तों को स्थान देना युक्त है।

उभयवृत्त का एक उदाहरण यहाँ दिया जाता है :—

ऽ।। ऽ।। ऽ। ऽ। ।। । ऽऽऽ
ऊपर को जल सूख, सूख कर उड़ जाता है। = १७ वर्ण
सरदी से सकुचाय, अजद पदवी पाता है। ,,
पिघलाने रविताप, धरातल पै गिरता है। ,,
बार बार इस भान्ति, सदा फिरता फिरता है॥ ,,

(नाथूराम "शंकर" पावस-पञ्चाशिका)

और तीसरे में उससे भिन्न। इसी प्रकार सभी पादों में आशातीत वैषम्य हो सकता है। श्री सूर्य कान्त त्रिपाठी 'निराला' ने ऐसी कविताएँ खूब लिखी हैं। नीचे इन दोनों के उदाहरण दिये जाते हैं।

(१) भेद का उदाहरण :—

विधाता मात्रिक छन्द है। इसके नियमानुसार ४ पाद होते हैं। परन्तु निम्नलिखित पद्य में आप ६ पाद देखेंगे:—

वदों के मन्त्र मानेंगे, प्रसङ्गों को न भूलेंगे।
कहो क्या ऊँच ऊँचों की उँचाई को न छू लेंगे।
भरे आनन्द से चारों फलों के झाड़ फूलेंगे।
सखों को शंकरानन्दी, अनिष्टों से उबारेंगे।
विगाड़ों को बिगाड़ेंगे, सुधारों को को सुधारेंगे॥
(नाथूराम शर्मा, 'शंकर')

यहाँ विधाता छन्द है जिसका लक्षण पहले लिखा जा चुका है। कई विद्वानों ने ६ पादों वाले छन्दों का नाम मिलिन्दपाद रखा है यह पीछे कहा जा चुका है। उनकी दृष्टि से यह विधाता-मिलिन्दपाद है।

इसी प्रकार नीचे लिखे पद्य में प्रसाद छन्द के ६ पाद हैं। नियमानुसार ४ आवश्यक थे।

पाप का क्षणिक प्रभाव विलोक,
क्षोभ यदि सके न कोई रोक,
शोक तो उसकी मति पर शोक,
बना क्या ! बिगड़ा जब परलोक।
विजय है यही कि सब संसार,
करे पीछे भी जय जयकार॥ (मैथिली शरण गुप्त)

इसे भी प्रसाद मिलिन्दपाद कह सकते हैं।

नीचे लिखी कविता में पाँच पाद हैं। यह कवित्त छन्द है अं
चर्णिक है। [जैसे:—

हाल हिन्दुवान को बेहाल बनि जातो बस,
माल मूसि मूसि मुसलिम जन खावतो।
लूटि जाति लाज अरु टूटी जाती टाँग, माँग,
भारत की भूमि भाल और को भरावतो।
फूटि जातो करम धरम धन लूटि जातो,
मरम न परम पुनीत बतरावतो—
लागतो न थानक बहादुरी को बीरन की,
देस भर भरम भयानक भौ छावतो—
सिक्खन जगातो दुरभिक्खन भगातो कौन,
जो न गुरु नानक अचानक भौं आवतो॥

(श्री रामाज्ञा द्विवेदी 'समीर' M.

ये कुछ उदाहरण यहाँ दिये गये हैं।

(२) मुक्त वृत्त का दूसरा भेद है जिसमें किसी प्रकार के
व्यवस्था—पादव्यवस्था—न हो। नीचे लिखी कविता देखिये:

माँ, मुझे वहाँ तू ले चल
देखूंगा मैं भी तेरा वह द्वार—
दिवस का पार—
मूर्छित हुआ पड़ा है जहाँ वेदना का संसार—
करती है तरणी से तटमी बच इस—
कुछ कुछ-कल कल-कल कल-छलकल-छलमल,
माँ, मुझे वहाँ तू ले चल!

उतर रही है लिए हाथ में प्यारा तारा दीप
उस अरण्य में बढ़ा रही है पैर, सभीत,
बना कौन वह ?
किसका है यह अन्धकार-सा अञ्चल ?
माँ मुझे यहाँ तू ले चल ! (निराला)

किञ्च:—

यह तोड़ती पत्थर,
देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर—
यह तोड़ती पत्थर।
कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार।
श्याम तन, भर बंधा यौवन,
नत नयन, प्रिय कर्म-रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार बार प्रहार—
सामने तरु मालिका अट्टालिका प्राकार।
चढ़ रही थी धूप,
गर्मियों के दिन,
दिवस का तमतमाता रूप,
उठी झुलसती हुई लू,
रुई ज्यों जलती हुई भू
गर्द चिनगी छा गई
प्रायः हुई दुपहर—
वह तोड़ती पत्थर। (इत्यादि)

(सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला')

निम्नलिखित पद भी अति सुन्दर हैं :—

अचल पलकों में सुछवि उतार
पान करता है रूप अपार
पिघल पड़ते हैं प्राण
उबल चलती है दृग्-जलधार ।

(पन्त)

ये सब रचनाएँ लयात्मक हैं। इनकी मधुरता, सरसता और नवीनता हृदय को आकर्षित करती है। इनमें पादव्यवस्था वर्णं या मात्राओं के आधार पर नहीं प्रत्युत इनका आधार लय (Rhythm) है। मुक्त-वृत्तों का मुख्याधार भी लय ही है।

———

छन्द और संगीत

छन्दःशास्त्र के अनेकों ग्रन्थ विद्यमान हैं। प्राचीन संस्कृत के छन्दोग्रन्थों तथा हिन्दी के छन्दोग्रन्थों में भैरव, विहाग आदि अनेकों गीतों का वर्णन नहीं है। संस्कृत में महाकवि जयदेव ने गीत-गोविन्द नामक अलौकिक काव्यग्रन्थ संगीत में ही लिखा है। हिन्दीजगत् के सूर्य महाकवि सूरदास ने भी गीतों में अपनी अमर वाणी का प्रकाश किया है। मीरा तथा अन्य कवियों ने भी संगीत का आश्रय लिया है। परन्तु छन्दों में इनका विचार नहीं किया गया।

परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि संगीतात्मक साहित्य भी एक प्रकार से छन्दोबद्ध ही है। उसमें भी वर्ण और मात्राओं का नियन्त्रण रहता है। जितने भी गीत हैं या जो बनाये जाते हैं, उनमें वर्ण अथवा मात्राओं का नियम—यति आदि का विचार, होता है। अतः यह रचना भी एक प्रकार से छन्दोबद्ध ही है।

इतना ही नहीं, बल्कि कई छन्द ऐसे भी हैं जो गीतों में भिन्न २ रागों और [illegible] ता[illegible] गाये जाते हैं। उदाहरणार्थ—प्रमाणिका [illegible] । मनहरण चौताला

में, भुजंगप्रयात झप ताल में, तोटक तिताला में, तोमर रूपक ताल में और मन्दाक्रान्ता आदि भी गाये जाते हैं। इसी प्रकार दिग्पाल, राधिका, कुण्डलयार, हरिगीतिका आदि भी विविध तालों पर गाये जा सकते हैं और इनका प्रचार भी इस रूप में पर्याप्त है।

परन्तु अन्य गीतों में भी जिनमें साक्षात् छन्द का सम्बन्ध नहीं दीखता छन्दोमय रचना ही होती है। क्योंकि यदि विचार कर देखा जाय तो गीतों के पदों में भी मात्रासंख्या नियमित होती है। कई गीत तो भिन्न भिन्न छन्दों के मेल से ही बनते हैं। महाकवि जयदेव ने देशाक राग में रूपक ताल पर नीचे लिखी गीति गाई है।

> सकल-भुवन-जनवर-तरुणेन ।
> वहति बसान्मजमति करणेन ॥
> श्री जयदेव भणित वचनेन ।
> प्रविशतु हरिरपि हृदयमनेन ।

यदि हिन्दी-छन्दःशास्त्र की मर्यादा से विचार किया जाय तो यह रचना चौपाइयाँ हैं। महात्मा सूरदास जी ने विलावल राग में यह पद कहा है।

> हरि मुरली के हाथ बिकाने ।
> यह अपमान करत न लजाने ॥१॥
> यह ऐसे कर लिये दिवाने ।
> बार बार वा अमहिं बखाने ॥२॥
> ....
> ....
> 'सूर' नेति निगमनि जे गाने ।
> ते मुरली के नाद टगाने ॥८॥

इसमें भी छन्द चौपाई है।

और देखिये :—

नँद नन्दन वृन्दावन चन्द ।

यदुकुल नभ तिथि द्वितिय देवकी, प्रभु त्रिभुवन चन्द ।
जठर कुहूतें बहरि बारिनिधि, दिसि मधुपुरी सुछन्द ॥
वसुदेव संभु सीस धीं आने, गोकुल अनन्द कन्द ।
ब्रज प्राची राका तिथि जसुमति, सरद सरस ऋतु नन्द ॥
उडुगन सकल सखा संकर्सन, तम दनु कुलज निकन्द ।
गोपीजन तोहि धरि चकोरगति, निरखि मेटि पल द्वन्द ॥
सूर सुदेस कला मोडस पर बूरन परमानन्द ॥

(म० सूरदास)

इसकी टेक १४ मात्राओं की है । शेष पाद सत्ताईस मात्राओंके हैं । १६, ११ पर यति है । टेक के नीचे के पाद सरसी छन्द में हैं ।

किम्वा :—

[गीत, ताल दादरा—रागिनी सारंग]

पदपादाकुलक—मन होत तुम्हें देखत रहिये ।
छिन छोड़ अलग कहूँ ना जइए ॥
लावनी—मृदुल सुभाव मोहनी मूरति इन अँखियन धर लइए ।
मीठे बचन सुनत चित चाहत बैठ बिहँस कछु बतरइए ॥
जब मिल जान कहीं मोहन सों देहधरे को फल पइए ।
श्यामल छवि लख लगत 'बिहारी' तन मन अरपन कर दइए ॥

(साहित्यसागर)

इस गीत की स्थायी और पलटा पदपादाकुलक हैं । शेष अन्तरे लावनी छन्द में हैं ।

इसी प्रकार यदि ध्यार छन्द के आदि में चौपाई का एक चरण जोड़ दिया जाय तो विहाग राग, जो रूप ताळा ताल से गाया जाता है, बन जाता है। विहारी लाल भट्ट जी ने अपने ग्रन्थ में इसका सुन्दर उदाहरण दिया है :—

मन तुम बहुत चले मन माने।
हम तुम मित्र जनम के प्रेमी प्रेम प्रीति पहचाने।
तुम हो निष्ठुर अपने बस के रसमें रहत लुभाने॥
इंद्रन के तुम इंद्र देव हो, सुर-नर-मुनि सनमाने।
नित नये खेल खिलावत खेलत रमिया अजब दिखाने॥
वसीकरन-सन गुरु से सीखो मन्त्र तुम्हारे जाने।
बिन पूछे कहुँ पाँव न दीजो अब कर पाये ठिकाने॥
जहाँ हम कहें तहाँ ही रमियो गुन निर्गुन गुन जाने।
सगुन अगुन दोउ अगम विहारी समुझत सुधर सयाने॥

इत्यादि अनेकों उदाहरण हैं जिनसे पता चल जाता है कि छन्दः-शास्त्र के आधार पर भी गीत बनाये गये हैं। जो गीत स्वतन्त्र रूप से भी बने हैं उनमें भी विचार करने पर मात्राछन्द ही निकल आता है।

———

हिन्दी-छन्दःशास्त्र की व्यापकता

संसार की किसी भाषा के साहित्य को देखिये। कहीं भी आपको भारतीय छन्दःशास्त्र से अधिक उन्नत छन्दःशास्त्र दृष्टिगोचर न होगा। अधिक तो क्या, इसके समकक्ष भी किसी भाषा में छन्दःशास्त्र नहीं है।

हिन्दी का छन्दःशास्त्र अक्षय भण्डार है। इसमें कहे हुए छन्द के सभी रूपों का प्रयोग न अभी तक हुआ है और न होगा। भारतीय आचार्यों ने जो प्रस्तार की अनुपम रीति निकाली है वह अत्यन्त वैज्ञानिक होते हुए ऐसी है जिसमें संसार भर के किसी भी छन्द का अन्तर्भाव हो जायेगा। अंग्रेज़ी भाषा के छन्द भी यथावत् रूप से मात्रा छन्दों में समा जाते हैं। आप उर्दू के बहरों का इनमें ही अन्तर्भाव कर सकते हैं।

परन्तु ऐसा करने के लिए विशेष सावधानता की आवश्यकता है। पहले उस भाषा के यथावत् उच्चारण को समझने का प्रयत्न करना चाहिए। अन्य भाषाओं के सभी छन्द मात्रिक होते हैं, वर्णिक नहीं, क्योंकि उनमें एक गुरु के स्थान पर दो लघु आ सकते हैं। परन्तु इससे भी अधिक सावधानता का कार्य है ध्वनि को समझना। फिर उस ध्वनि के उच्चारण के अनुसार विदेशी भाषा के किसी भी छन्द को नागरी अक्षरों में लिखो। जिसका हल्का उच्चारण हो उसे ह्रस्व जानो। उर्दू में दीर्घ अक्षरों को भी कहीं कहीं ह्रस्व बोला जाता है, ऐसे शब्दों को ह्रस्व ही लिखो। फिर उसकी मात्राओं को गिनो। फिर आपको उनके छन्द का ज्ञान हो जायेगा। यदि उस छन्द का नाम, हिन्दी-छन्दःशास्त्र में न मिल सके तो कोई चिन्ता नहीं। प्रस्तार के द्वारा या उद्दिष्ट प्रत्यय के द्वारा हम उस रूप को जान सकते हैं। जैसे:—

दिल के आइने में है तसवीरे यार।
जब ज़रा गर्दन झुका ली देख ली॥
सुबह गुज़री शाम होने आई मीर।
तू न चेता औ बहुत दिन कम रहा॥ (मीर हसन)

इनमें रेखांकित अक्षरों का उच्चारण धीरे से लघु रूप में होता है। अतः इनकी एक मात्रा गिनी जायगी। इस प्रकार इन

हमारा बाल-साहित्य

छिक छिक—श्री धर्मपाल

दोनों को उल्लू बनाया—श्री धर्मपाल

पतलून की बन गई निकर ,, ,,

मुर्गों के गीत ,, ,,

अमर सन्देश—श्री जगदीश दीक्षित आनन्द

चमकते तारे—सन्त गोकुलचन्द्र

सैर सपाटे ,, ,,

गान्धी दर्शन ,, ,,

बाल-गीत—डा० कृष्णदत्त भारद्वाज